Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक आख्यान कोश

R
१·३
३४

डा॰ रामशरण गौड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

maj Foundation Ch

R
1.3
34

ain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
९·३
३४

74842

Call No. R ९·३ / ३४ Acc. No. 74842
AUTHOR गौड़ रामशरण
Title पौराणिक आख्यान कोश

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
R हरिद्वार

वर्ग 9·3/38 ....आगत संख्या 74842

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित २० वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा १० पैसे के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

Stock Verification-2024

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

074842

पौराणिक आख्यान कोश

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या............... आगत संख्या..................

पुस्तक – वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा १० पैसे के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Verification-202

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभूति
प्रकाशन
दिल्ली-110032

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

074842

पौराणिक आख्यान कोश

(कृष्ण-काव्य के सन्दर्भ में)

R1.3, 34
74842

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय

लेखक
डॉ० रामशरण गौड़
एम० ए० (हिन्दी, समाजशास्त्र) पी-एच० डी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
9.3
34

प्रकाशक : विभूति प्रकाशन, के-14 नवीन शाहदरा दिल्ली-110032/**प्रथम संस्करण 1981**/© : डॉ० रामशरण गौड़/**मूल्य** : पचास रुपये/आदर्श प्रिंटिंग सर्विस द्वारा अनिल प्रिंटर्स शाहदरा दिल्ली-110032 में मुद्रित/**आवरण** : स्क्रीन आर्ट्स (इंडिया) शाहदरा दिल्ली-110032

PAURANIK AKHYAN KOSH **Rs. 50.00**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण

जिनके चरणों में बैठकर जीवन-मूल्यों
के प्रति आस्था उत्पन्न हुई, उन
स्वर्गीय ताऊजी (घूरेलाल)
को यह श्रद्धा-सुमन
समर्पित है।

—रामशरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक योगदान

स्वतन्त्र भारत में हमारे समाज में जो अनेक परिवर्त्तन हुए हैं उनमें से एक है हमारा शेष विश्व के साथ व्यापक संपर्क। ज्ञान-विज्ञान, व्यापार-वाणिज्य, सेवा-जीविका के कारण हमारे युवक आज देश से बाहर पहिले झाँकते हैं और वहाँ सफलता न मिलने पर अपने देश में सीमित रह पाते हैं। यह आश्चर्य की बात है कि एक ओर तो हमारे भीतर आत्मविश्वास जगा है, दूसरी ओर हमको अपना देश, अपनी संस्कृति, अपना समाज, अपना साहित्य रुचिकर नहीं लगता—कम-से-कम यह तो मानना होगा कि हमने अपने को अपने आप ही "विश्व का द्वितीय श्रेणी का नागरिक" बना लिया है। साहित्य पर इसका सीधा प्रभाव यह पड़ा कि आज के हमारे साहित्य में अन्तर्राष्ट्रीयता तो है, राष्ट्रीयता नहीं है; हम सारे संसार की झाँकी उसमें खोज सकते हैं परन्तु हमको अपने देश की छाया नहीं मिल पाती। आज के पाठकों को देश के इतिहास-पुराण की सामान्य बातों का भी ज्ञान नहीं है; छायावाद-युग तक का साहित्य उनको अपना-सा नहीं लगता। परन्तु स्वस्थ विकास के लिए अनागत से अधिक महत्त्व विगत का है; अतीत का अन्वेषण करके हम उसका संतुलित मूल्याँकन करें और भविष्य की कल्पना के निमित्त वर्तमान को उस मूल्यांकन को छाया में सुधारें। इस कार्य के लिए पुराने साहित्य के संपादन, उसकी व्याख्या एवं उसकी सहायक-सामग्री की उपलब्धि की महती आवश्यकता है। ऐसे कोष जो प्राचीन को ठीक प्रकार प्रस्तुत कर सकें आज की शिक्षा के परम सहायक अंग हैं; शब्दावली, कथावली, प्रसंगावली आदि का योग्य एवं अधिकारी विद्वानों द्वारा संपादन होना चाहिए। डॉ० रामशरण गौड़ की प्रस्तुत पुस्तक इस दिशा का एक सराहनीय प्रयास है।

डॉ० रामशरण गोड़ हमारे पुराने छात्र हैं। इन्होंने सन् 1972 में एम० ए० किया था और चार वर्ष बाद पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त की थी। इनके शोध का विषय था: "आधुनिक कृष्ण-काव्य में पौराणिक आख्यान"। यह ग्रंथ प्रकाशित भी हो चुका है और पाठकों ने इसकी प्रशंसा की है। रामशरण जी अपनी क्षमता के अनुसार पूर्णतः दत्तचित्त होकर कार्य में लग जाते हैं और उसको यथावसर सुधारते रहते हैं। उनका जीवन "परिश्रमेण सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः" का सजीव उदाहरण है। ईश्वर ऐसे अध्यवसायी व्यक्तियों को अवश्यमेव सफलता तक पहुंचा देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पौराणिक आख्यान कोष" डॉ० रामशरण गौड़ की दूसरी रचना है। इसका उपजीव्य ग्रंथ लेखक का शोध-प्रबन्ध ही है। प्रथम खण्ड में अकारादि क्रम से पौराणिक आख्यानों का परिचय दिया गया है। द्वितीय खण्ड में पौराणिक आख्यानों के विविध प्रयोगों का विश्लेषण है। इस प्रकार डॉ० गौड़ की यह रचना भी पाठक को पुराणों के साथ जोड़ती है और उसके सुप्तप्राय संस्कारों को जगाने का काम करती है। स्कूलों और कालेजों के छात्र और अध्यापक दोनों का इस रचना से लाभ होगा।

डॉ० रामंशरण गौड़ पौराणिक संस्कारों का पाथेय लेकर अपने मार्ग पर चल पड़े हैं। आस्था, आत्मविश्वास तथा परिश्रम का संबल उनके पास है। उनकी अभिव्यक्ति में एक प्रकार की सहजता है जो उनकी शैली को सुगम बना देती है। रामशरण जी का निश्छल व्यक्तित्व उनकी दोनों रचनाओं में झलकता है। मुझको विश्वास है कि वे इसी प्रकार शान्त रहकर परिश्रम करते हुए चुपचाप पाठक को साँस्कृतिक परम्परा के साथ जोड़ते रहेंगे। अपनी शुभ कामनाओं के साथ मैं डॉ० रामशरण गौड़ की इस नवीन रचना को गुणग्राही पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता हूं।

दीपावली
सन् 1981 ई०

(डॉ०) ओम्प्रकाश
एम०ए०, एल-एल०बी०, पी-एच०डी०, डी० लिट्०
प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन

भारतीय पुराण भारतीय संस्कृति का आधार हैं। इनमें आगत आख्यानों की व्याप्ति भारतीय समाज में अनादिकाल से चली आ रही है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि पौराणिक आख्यानों से भारतीय समाज सदैव प्रेरित होता रहा है, अतः भारतीय वाङ्मय भी पौराणिक आख्यानों की प्रभाव-परिधि से अछूता नहीं है। संस्कृत साहित्य के अनेक महान ग्रंथ तो इन्हीं आख्यानों के आधार पर रचे ही गये हैं साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य भी पौराणिक-आख्यानों से समृद्ध हुआ है और यह प्रक्रिया अब भी रुकी नहीं है। भारत की सभी भाषाओं के काव्य की प्रभावशालिता में पुराण और पौराणिक आख्यानों का प्रशस्य योगदान है। मराठी के विख्यात साहित्यकार खाण्डेलकर द्वारा लिखे गये ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित उपन्यास "ययाति" की पृष्ठभूमि पौराणिक-आख्यान ही है।

भारतीय वाङ्मय के कवियों और लेखकों ने पुराण कथाओं को एक ओर अपने कथ्य का आधार बनाया है तो दूसरी ओर उन्होंने कथ्य को विचारपूर्ण और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से भी भिन्न-भिन्न आख्यानों का आश्रय लिया है। इस रहस्य को समझने के लिए सभी पौराणिक आख्यानों का समुचित ज्ञान होना आवश्यक है। प्रायः यह देखा गया है कि पौराणिक आख्यानों को गल्प और अतिरंजित घटनाओं की संज्ञा देकर इनकी उपेक्षा कर दी जाती है और तो और साहित्य का विद्यार्थी भी इनसे अनभिज्ञ रहता है। वह नहीं जान पाता कि पौराणिक-आख्यानों के ज्ञान के अभाव में वह साहित्य के मर्म तक पहुंचने में सफल नहीं हो सकता है। वास्तव में पौराणिक आख्यान अनेक साहित्यिक उपादानों के हेतु हैं।

साहित्य के अध्ययन के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि पुराण साहित्य का सब से मूल्यवान तत्व है, अतः मेरे मन में पौराणिक-आख्यानोंके अध्ययन की विशेष जिज्ञासा हुई, जिसकी पूर्ति दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्तर्गत "आधुनिक कृष्ण काव्य में पौराणिक आख्यान" विषय पर शोध-प्रबन्ध द्वारा हुई। यह शोध-प्रबन्ध विभूति प्रकाशन, नवीन शाहदरा, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक की विद्वानों द्वारा सराहना की गई, जिससे मुझे लगा कि मेरा परिश्रम कुछ सीमा तक सार्थक हुआ है, क्योंकि पौराणिक आख्यानों का एक साथ विवेचन इस पुस्तक में उपलब्ध कर सकने में मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्थ हुआ। परन्तु साहित्य के विद्यार्थियों के लिए पौराणिक आख्यानों की एक निर्देशिका की आवश्यकता महसूस हुई थी। उसी आवश्यकता को पूरा करने का प्रयास इस कोश के माध्यम से किया गया है। इस कोश में केवल उन्हीं पौराणिक आख्यानों का समावेश किया गया है जो मुख्य रूप से कृष्ण काव्य में प्रयुक्त हुए हैं। ऐसा करते समय मुझे अपने शोध प्रबन्ध "आधुनिक कृष्ण काव्य में पौराणिक आख्यान" का भी सहारा लेना पड़ा है। परन्तु इनमें प्राय: वे सभी पौराणिक आख्यान सम्मिलित हैं, जिनकी हिन्दी साहित्य में व्याप्ति बहुलता से है। अत: मुझे पूर्ण आशा है कि मैंने जिस उद्देश्य से इस कोश का संकलन किया है उसकी पूर्ति अवश्य ही होगी।

इस कार्य में डा० वीरेन्द्र शर्मा, द्वितीय सचिव, भारतीय दूतावास, मास्को (रूस) विशेष रूप से प्रेरणा स्रोत रहे हैं। इसके साथ ही पुराणों के मर्मज्ञ गुरुवर डा० चन्द्र हंस पाठक, डा० रमानाथ त्रिपाठी, दिल्ली विश्वविद्यालय ने इस कोश संकलन में विशेष रूप से मार्ग दर्शन किया है। मैं इन महानुभावों का सर्वथा आभारी हूं। मित्रवर सुभाष चन्द्र सेतिया तथा डा० सुरेश शर्मा से जो समय-समय पर सहयोग और सद्भाव प्राप्त हुआ है वह मुझे सदैव ही स्मरण रहेगा। इस कार्य संपादन में मेरी धर्मपत्नी 'प्रेमा' का विशेष सहयोग रहा है, जिससे में स्वतंत्र रूप से सभी चिन्ताओं से मुक्त रहकर साहित्य-साधना में संलग्न रहा हूं। उक्त सहयोग के लिए आभार आदि औपचारिकता की पूर्ति निरर्थक सी है।

यह मेरा सौभाग्य है कि डा० ओमप्रकाश प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने इस पुस्तक की भूमिका लिखकर मुझे अपना आशीर्वाद दिया है। यह मेरे इस प्रयास की सफलता का संकेतक ही है।

डॉ० रामशरण गौड़,

दीपावली 2038 वि० (1981) 1460-गुलाबी बाग, दिल्ली-7

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ
1. पौराणिक आख्यानों का परिचय	9 से 56
2. पौराणिक आख्यानों के विविध प्रयोग	57 से 206
3. परिशिष्ट	207 से 224

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक-आख्यानों का परिचय

1. अंग का राज्य त्याग

अंग वेन के पिता थे। यह अत्यन्त समृद्ध-शाली राजा थे। इन्होंने अश्वमेध यज्ञ भी किया। यह अपने पुत्र वेन के अत्याचारों से तंग आकर नगर छोड़कर चले गये थे।

भागवत—4।13।24-49.

2. अंगद का लंकापुरी को जाना

अंगद वाली का पुत्र था। यह सीता की खोज करने के लिए हनुमान के साथ गया था तथा राम का दूत बनकर लंका गया था।

1. रामायण-युद्ध-कांड-सर्ग—41।77.
2. भागवत—9।10।19-20.

3. अंगिरस की उत्पत्ति

पुराणों में अंगिरस नामक अनेक ऋषियों का उल्लेख मिलता है। एक अंगिरस की दस प्रजा-पतियों में गणना होती है। एक अन्य ऋषि का उल्लेख ब्रह्माण्ड पुराण में मिलता है, जो ब्रह्मा के हवन करते समय अंगार से उत्पन्न हुए। अत: अग्नि के पुत्र कहलाये।

ब्रह्माण्ड-पुराण—2।36।62.
3।1।40-42.

4. अम्बरीष पर कृपा दुर्वासा का कष्ट में पड़ना

अम्बरीष सूर्यवंशी अयोध्या के राजा थे। ये भगवान् विष्णु के परम भक्त थे। एक समय दुर्वासा इनके अतिथि होकर उपस्थित हुए। दुर्वासा के स्नान करने के लिए चले जाने पर उन्होंने विद्वान्

1. भागवत—9।4।13-71.
2. ब्रह्म वैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड) अभ्याय—25, 50.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणों के परामर्श से द्वादशी व्रत का पारण कर लिया। इस पर दुर्वासा क्रुद्ध हो गये और अम्बरीष को मारने के लिए कृत्या उत्पन्न की, परन्तु विष्णु के चक्र ने कृत्था को नष्ट कर दुर्वासा का पीछा किया। अन्त में दुर्वासा को राजा से क्षमा माँगनी पड़ी।

5. अगस्त्य-आख्यान

(1) अगस्त्य और वशिष्ठ का जन्म

एक समय सूर्य के आमंत्रण पर उर्वशी उनके पास जा रही थी। उसे देखकर मित्रावरुण का वीर्य कमल पर स्खलित हो गया, जिससे अगस्त्य और वशिष्ठ उत्पन्न हुए।

1. वृहद्देवता—5।134.
2. विष्णु पुराण— 4।5।11-12.

(2) अगस्त्य के आगे विन्ध्याचल का झुकना

एक बार विन्ध्याचल ने सूर्य से अपनी परिक्रमा करने के लिए कहा था। सूर्य ने मना कर दिया, इससे विन्ध्याचल आकाश में ऊपर बढ़ने लगा। कहीं बढ़ता हुआ विन्ध्याचल सूर्य का मार्ग न रोक दे—यह सोंचकर ऋषियों ने अगस्त्य को इसके पास भेजा। अगस्त्य इसके पास पहुँचे (और महाभारत के अनुसार उन्होंने दक्षिण दिशा को जाने के लिए विन्ध्याचल से मार्ग देने को कहा) विन्ध्याचल ने अगस्त्य को साष्टाँग प्रणाम किया। तब अगस्त्य अपने लौटने तक इसी स्थिति में रहने के लिए कहकर चले गये और लौटे नहीं। तब से विन्ध्याचल पृथ्वी पर इसी तरह से पड़ा हुआ है।

1. महाभारत-वनपर्व, अध्याय—104
2. ब्रह्म पुराण-अध्याय—118.
3. स्कन्द-पुराण-काशीखण्ड-अध्याय—5
4. देवी भागवत-–10।3-7.

(3) अगस्त्य द्वारा समुद्र पान

तारक, कार्तिकेय तथा दूसरे असुरों ने संसार को पीड़ित कर रखा था एवं वे समुद्र में जाकर छिप जाते थे। देवताओं के आग्रह पर अगस्त्य समुद्र को अंजलि में भरकर पी गये ताकि असुरों का वध किया जा सके। लोक मान्यतःनुसार टिट्टिभि के आग्रह

1. महाभारत-वनपर्व-अध्याय—105
2. पद्म-पुराण-सृष्टि खण्ड अध्याय—19।165-75. 22।1-13.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर यह समुद्र का पान कर गये, क्यों समुद्र टिटहरी के अंडों को बहा ले गया था।

3. भविष्य-पुराण-उत्तरार्द्ध अध्याय—106.
4. स्कंद-नागर खण्ड-अ०— 35. (श्री वेंकटेश्वर प्रेस)

6. अग्नि का स्वाहा से विवाह

स्वाहा प्रसूति के गर्भ से उत्पन्न दक्ष की पुत्री थी, जिसका विवाह अग्निदेव के साथ हुआ।

1. ब्रह्माण्ड—2।9।55. 2।12।1.
2. ब्रह्म वैवर्त-प्रकृति खण्ड-40.

7. अज-इन्दुमती आख्यान

इन्दुमती विदर्भ देश के राजा भोज की पुत्री थी, जिसने अयोध्या के सम्राट इच्छाकुवंशी अज का स्वयंवर में वरण किया था।

1. रघुवंश-सर्ग—6।84-85.

8. अजामिल पर कृपा

अजामिल कान्यकुब्ज नगर का रहने वाला दासी पति ब्राह्मण था। वह निन्दनीय कार्य करके अपने कुटुम्ब का पालन-पोषण करता था। उसका सम्पूर्ण जीवन निंदनीय कार्यों के आचरण में ही व्यतीत हो गया। उसने अपने छोटे पुत्र का नाम नारायण रखा। मृत्यु के समय उसने यमदूतों को देखकर 'नारायण' को पुकारा। भगवान के पार्षदों ने तुरन्त छोड़कर उसकी यमदूतों से रक्षा की और स्वर्ग को ले गये।

1. भागवत—6।1.

9. अभिमन्यु वध

महाभारत के युद्ध में द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह का निर्माण किया, जिसका सफलतापूर्वक भेदन अर्जुन के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता था। अभिमन्यु ने भी गर्भावस्था में इस विद्या को सीख लिया था, परन्तु वह चक्रव्यूह में प्रवेश करना जानता था निकलना नहीं। अर्जुन की अनुपस्थित में वह कौरवों के विरुद्ध युद्ध करने गया। वह चक्रव्यूह का भेदन कर अन्दर प्रवेश कर गया, किन्तु बाहर निकल

महाभारत-द्रोण पर्व अध्याय—45-49.
विष्णु—4।20।51.
भागवत—9।22।33.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने में असमर्थ रहा। अन्त में युद्ध करता हुआ सात महारथियों द्वारा अन्याय पूर्वक मारा गया।

10. अर्जुन आख्यान

(1) अर्जुन की परीक्षा

एक बार द्रोणाचार्य ने अपने सभी शिष्यों की परीक्षा ली और सभी को एक चिह्न पर निशाना लगाने के लिए कहा गया, जिसमें अर्जुन ने लक्ष्य भेदकर प्रशंसा प्राप्त की।

महाभारत-आदि पर्व—अ० 132.

(2) अर्जुन द्वारा सुभद्रा हरण

अर्जुन अपने तीर्थाटन काल में द्वारका गया। वहाँ से सुभद्रा को अपने रथ में बैठाकर भाग लिया। यादवों ने इसका विरोध किया परन्तु कृष्ण ने अर्जुन का पक्ष लेकर बलराम को समझाकर सुभद्रा का विवाह अर्जुन से कर दिया।

1. महाभारत-आदि पर्व अध्याय—218,
2. भागवत—10।86.

(3) अर्जुन द्वारा खाण्डव दहन

राजा केतकी के यज्ञ में घृत अधिक पी लेने के कारण अग्नि को अजीर्ण हो गया, अतः अर्जुन की सहायता से अग्नि ने खाण्डव वन को जला दिया। इस जलते वन में अर्जुन ने मय दानव की रक्षा की थी, जिसने बदले में ऐसा महल निर्मित करके दिया, जिसमें स्थल और जल परस्पर भ्रम पैदा करते थे।

1. महाभारत-आदि पर्व अध्याय—222-227.
2. भागवत—1।15।8, 10।58।25-27. 10।71।44-45.

(4) अर्जुन-किरात युद्ध

पाण्डवों की वनवास अवधि में अर्जुन ने पाशुपतास्त्र की प्राप्ति के लिए शिव की भारी तपस्या की थी। शिव ने अर्जुन की परीक्षा लेने के लिए किरात का रूप धारण कर अर्जुन से युद्ध किया। किरात रूप शिव को अर्जुन ने अपने युद्ध पराक्रम से प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र प्राप्त किये।

महाभारत-वन पर्व—अ० 8-40.
2. शिव पुराण-शतरुद्र संहिता—अ० 19-20.
3. भागवत—1।15।12, 3।1।38, 10।89।34.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(5) अर्जुन-चित्ररथ युद्ध

पाण्डव अपनी पांचाल यात्रा के समय एक दिन गंगा तट के सौमात्रयायण नामक तीर्थ पर गये। वहाँ पर गंगा में चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ क्रीड़ा कर रहा था। पाण्डवों के गंगा में घुसते ही वह क्रोधित हो उठा। अर्जुन और चित्ररथ में युद्ध हुआ और अन्त में चित्ररथ अर्जुन से पराजित हुआ।

1. महाभारत-आदि पर्व—169.

(6) अर्जुन-चित्रसेन युद्ध

एक समय दुर्योधन घोष यात्रा के लिए निकला। इन्द्र के कहने पर चित्रसेन दुर्योधन का अपमान करने के लिए गया तथा युद्ध में कर्ण को पराजित करके दुर्योधन को बाँधकर ले गया। अन्त में इसका अर्जुन से युद्ध हुआ और अर्जुन की विजय हुई। बाध्य होकर चित्रसेन को दुर्योधन मुक्त करना पड़ा।

1. महाभारत-वन पर्व—241-246

(7) अर्जुन का ब्रहन्नला बनना

पाण्डवों के अज्ञात-वास के समय अर्जुन विराट नगरी में बृहन्नला का वेश धारण करके रहे थे। उन्हें राजा विराट ने उत्तरा को नृत्यादि का प्रशिक्षण देने के लिए नियुक्त किया था।

महाभारत-विराट पर्व—अ० 11.

(8) अर्जुन द्वारा विराट की गायों की रक्षा

पाण्डवों के अज्ञातवास के समय दुर्योधन ने विराट की गायों का हरण किया। अर्जुन बृहन्नला के रूप में युद्ध में उत्तर के साथ उसका सारथी बनकर आया। युद्ध में से उत्तर भयभीत होकर भागने लगा। तब अर्जुन ने शमी वृक्ष से अपने अस्त्र-शस्त्र लेकर दुर्योधन से युद्ध किया और कर्ण को भगाकर उसके भाई को मार दिया तथा गायों की रक्षा की।

1. महाभारत-विराट पर्व—अ० 53.
2. भागवत—1।15।14.

(9) अर्जुन और दुर्योधन का कृष्ण के पास जाना

महाभारत युद्ध की तैयारी के समय दुर्योधन

1- महाभारत-उद्योग पर्व—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अर्जुन दोनों ही सहायता प्राप्त करने के लिए कृष्ण के पास गये। कृष्ण सो रहे थे। दुर्योधन सिराने की ओर जाकर बैठ गया और अर्जुन नम्रता वश पैरों की ओर बैठा। जागने पर कृष्ण को पहले अर्जुन दिखाई दिया, अतः कृष्ण ने उससे माँगने के लिए कहा। अर्जुन के माँगने पर निशस्त्र कृष्ण पाण्डवों की ओर हो गये और दस कोटि नारायण सेना दुर्योधन को दे दी। — अ० 7.

(10) अर्जुन द्वारा युद्ध न करना

महाभारत के युद्ध में अपने विपक्ष में अपने सगे-सम्बन्धियों को देखकर अर्जुन ने उन्हें मारने से मना कर दिया तथा अपने हथियार डाल दिये। श्रीकृष्ण के समझाने पर अर्जुन ने युद्ध किया। — महाभारत-भीष्म पर्व, अ० 25-42

(11) अर्जुन का पाताल से जल धारा निकालना

महाभारत युद्ध के दसवें दिन भीष्म घायल अवस्था में शरशय्या पर लेट गये। भीष्म के पानी माँगने पर अर्जुन ने भूमि में वाण मार कर जलधारा निकाल दी, जिससे भीष्म ने पानी पिया। — महाभारत-भीष्म पर्व-अ० 121.

11. अष्टावक्र आख्यान

ये उद्दालक की पुत्री सुजाता के गर्भ से उत्पन्न मुनि कहोडक के पुत्र थे। इन्होंने गर्भावस्था में ही अपने पिता को कहा था कि रात-दिन पठन-पाठन के उपरान्त भी आपका अध्ययन शुद्ध उच्चारणपूर्ण नहीं है। अतः पिता ने अपमान अनुभव करते हुए इन्हें अष्टावक्र होने का शाप दे दिया। फलस्वरूप इनका शरीर आठ स्थान से टेढ़ा हो गया। — महाभारत-वन पर्व—अ० 132।10-11.

12. इन्द्र-आख्यान

(1) इन्द्र की असुर वाहिनी पर विजय

पुराणों में देव और असुरों में हुए अनेक — 1. भागवत—8।10.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्धों का उल्लेख मिलता है, जिनमें अन्ततः इन्द्र विजयी हुए।

2. मत्स्य—अ० 152.
3. ब्रह्माण्ड—3।72।70-106. (संपादक-जगदीशचंद)

(2) इन्द्र का अहिल्या के साथ व्यभिचार

इन्द्र ने काम पीड़ित होकर गौतम का रूप धारण कर गौतम की पत्नी अहिल्या के साथ रमण किया था। गौतम नें अहिल्या को सूखी नदी होने तथा इन्द्र को सहस्त्रभग होने का शाप दिया था। इस कृत्य में चन्द्रमा ने इन्द्र की सहायता की थी, अतः क्रोधित गौतम ने चन्द्रमा को कमण्डल और मृग-छाला फेंककर मारी इससे चन्द्रमा में दाग पड़ गये। बहुत अनुनय विनय के पश्चात् उन्होंने अहिल्या को गौतमी गंगा (गोदावरी) से मिलने पर पुनः पूर्ववत होने तथा इन्द्र के योनि-चिह्न के स्थान पर नेत्र होने का वरदान दिया था। अन्य मतानुसार अहिल्या शाप से शिला बन गई थी जिसका राम की पद-रज से बहुत तपस्या के बाद उद्धार हुआ।

1. ब्रह्म-अध्याय—87, 123.
2. विष्णु—4।4।90.
3. पद्म-सृष्टि—खण्ड-56.
4. ब्रह्म वैवर्त—47' 61.

(3) इन्द्र का इन्द्राणी (पुलोमजा) के साथ विवाह

पुलोमा दक्ष पुत्री दनु और कश्यप के प्रधान पुत्रों से एक असुर पुत्र थे और वृत्रासुर के साथ इन्द्र से लड़े थे। यह इन्द्र के द्वारा मारे गये तथा इनकी पुत्री शची का इन्द्र से विवाह हुआ।

1. विष्णु—1।21।5.
2. भागवत—6।6।31, 68।7
3. मत्स्य—6।20.

(4) इन्द्र को कल्पतरु की प्राप्ति

अमृत प्राप्ति के लिए देव और असुरों द्वारा किये गये समुद्र-मंथन से चौदहरत्न निकले थे, जिनमें से कल्पवृक्ष एक है। यह इन्द्रलोक का अलंकार है तथा याचकों की मनोकामना पूर्ण करता है।

भागवत—8।8।6.

(5) इन्द्र का पर्वतों के पर काटना

पौराणिक मतानुसार प्राचीन काल में पर्वतों के पंख थे, उनके इधर-उधर उड़ने ऋषि-मुनियों कैं तप में विघ्न होने का डर था। अतः इन्द्र ने उनके पंख काट डाले।

भागवत-2।7।1
स्कन्द—1।19।9
रघुवंश—3।42.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(6) इन्द्र का यज्ञ करना

देवराज इन्द्र ने सौ यज्ञ किये थे, इसी से उसका नाम शतक्रतु पड़ा।

भागवत—4।19।2, 29.

(7) इन्द्र-वैश्वानर

वैश्वानर एक पुण्यात्मा ब्रह्मचारी तथा शिव भक्त थे। नारद से अल्पायु होने का समाचार प्राप्त होने पर इन्होंने महादेव की पूजा कर अग्नि का पद प्राप्त किया और एक लोकपाल होकर देव जाति में सम्मिलित हो गये।

1. शिव-शतरुद्र-संहिता—8.
2. स्कन्द-काशी खण्ड—अ० 10-11.

(8) इन्द्र द्वारा वृहस्पति का अनादर करना

एक समय देवराज इन्द्र सिंहासन पर बैठे थे उस समय सुरगुरु इन्द्र सभा में पधारे। इन्द्र ने उसको नमस्कार नहीं किया। इस पर वृहस्पति इन्द्र का राज त्यागकर अन्यत्र चले गये। यह जानकर असुरों ने इन्द्र से युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया, तब ब्रह्मा के समझाने पर असुरों के गुरु विश्वरूप को अपना गुरु बना दिया। पर यज्ञ में असुरों को आहुति दे दी गई है यह जानकर इन्द्र ने विश्वरूप की हत्या कर दी और उसे चार भांगों में विभक्त कर दिया। विश्वरूप के पिता त्वष्टा को पता चला तो उसने अपनी जटा उखाड़कर वृत्रासुर उत्पन्न किया जिसे इन्द्र ने दधीचि की हड्डियों का वज्र वनाकर वृत्रासुर का वध कर दिया, जिससे इन्द्र ब्रह्महत्या के डर से कमल की नाल में जाकर छिप गया। तब वृहस्पति इन्द्र को वहाँ से निकालकर लाये तथा यज्ञ करके उसे हत्या से मुक्ति दिलाई।

भागवत-पुराण

(9) इन्द्र-वृत्रासुर युद्ध

वृत्रासुर एक दानव था, जो कि त्वष्टा का पुत्र था। उसका वध करने के लिए इन्द्र ने दधीचि की हड्डियों को माँगकर एक वज्र का निर्माण किया था और वृत्र से युद्ध करके उसे मार दिया था।

1. भागवत—6।12.
2. स्कन्द-माहेश्वर खण्ड अध्याय—17।
3. देवी भागवत—6।6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(10) इन्द्र को ब्रह्महत्या लगना

ब्राह्मणों से प्रेरणा प्राप्त कर देवराज इन्द्र के वृत्रासुर का वध करने पर ब्रह्महत्या इन्द्र के पीछे लग गई थी, जिससे इन्द्र मानसरोवर के कमल नाल के तन्तुओं में एक हजार वर्षों तक छिपे रहे थे।

भागवत—6।13.

(11) इन्द्र द्वारा शम्ब वध

शम्ब या शम्बर दिवोदास का एक शत्रु दैत्य था। इन्द्र ने दिवोदास की रक्षा के लिए इसे पहाड़ पर से गिराकर मार डाला था। एक अन्य मतानुसार यह कश्यप और दनु का पुत्र था, जिसने वाल्यावस्था में ही इन्द्र की सेना को नष्ट कर दिया था। बाद में वह इन्द्र के हाथों मारा गया।

1. महाभारत-आदि पर्व—137-43.
2. उद्योग 16।14.

(12) इन्द्र का वृहस्पति के घर जाना

वृहस्पति देवताओं के गुरु और इन्द्र देवताओं के अधिपति थे। प्रायः इन्द्र को परामर्श लेने के लिए वृहस्पति के पास जाना पड़ता था।

भागवत—4।1।35.

(13) इन्द्र का कर्ण से कवच और कुण्डल लाना

कर्ण के पास जन्म से ही कवच-कुण्डल थे, जिनके होते हुए कर्ण को कोई मार नहीं सकता था। युद्ध से पूर्व इन्द्र इन कवच-कुण्डलों को कर्ण से माँग कर लाये थे।

महाभारत

13. इला-बुध आख्यान

इल (सुद्युम्न) वैवस्वत मुनि के ज्येष्ठ पुत्र थे, जोकि दिग्विजय के समय शरवट वाटिका में चले गये थे। वहाँ पार्वती के शाप से स्त्री बन गये और इनका नाम इला हो गया। मार्ग में सोमपुत्र बुध से भेंट होने पर बुध इन्हें पत्नी बनाकर ले गया, जिससे पुरूरवा पैदा हुआ। पुरूरवा से ही चन्द्र वंश चला।

1. ब्रह्म-पुराण-अ० 108.
2. विष्णु—4।1।9-12.
3. भागवत—9।1।33-38.
4. मत्स्य— 11।42-66. 12।1-14.

14. उत्तंक ऋषि का सर्प यज्ञ

ऋषि उत्तंक की गुरुपत्नी ने गुरु-दक्षिणा में

1. महाभारत-आदि पर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनसे पौष्य की पत्नी के कानों के कुण्डल माँगे। तक्षक ने उक्त गुरु-दक्षिणा को देने में उत्तंक के समक्ष बाधा उत्पन्न की। अतः तक्षक द्वारा राजा परीक्षित को डस लेने के पश्चात मुनि उत्तंक ने परीक्षित के पुत्र को सर्पों से प्रतिशोध लेने के लिए सर्प यज्ञ करने का उपदेश दिया।

अध्याय—3।171-188.
2. देवी भागवत—2।11.

15. उर्वशी का अर्जुन को शाप

उर्वशी इन्द्र लोक की एक अप्सरा है। एक बार अर्जुन के इन्द्रपुरी में जाने पर. उर्वशी उनको देखकर उन पर आसक्त हो गई। उसने अर्जुन से प्रेम याचना की। अर्जुन के अस्वीकार कर देने पर उसने अर्जुन को नपुंसक होने का शाप दे दिया। यह समय अर्जुन ने विराट नगरी में वृहन्नला बनकर काटा।

महाभारत-वन पर्व, अध्याय—46

16. ऊषा-अनिरुद्ध आख्यान

ऊषा वाणासुर की पुत्री थी, जो स्वप्न में अनिरुद्ध को देखकर मोहित हो गई थी। इसने चित्र-लेखा द्वारा अनिरुद्ध को द्वारका से शोणितपुर मँगवा लिया था। कुछ दिन अन्तपुर में ऊषा-अनिरुद्ध छिपकर रहे। बाद में पता लगने पर वाणासुर ने अनिरुद्ध को बाँध लिया। नारद से समाचार मिलने पर श्रीकृष्ण सेना सहित शोणितपुर पहुँचे तथा वाणासुर से घोर संग्राम हुआ, जिसमें वाणासुर पराजित हुआ। बाणासुर ने अनिरुद्ध को अपनी कन्या सोंपकर श्रीकृष्ण को विदा किया।

1. विष्णु—5।32-33.
2. भागवत—10।62-63.
3. ब्रह्मवैवर्त—12 .
4. हरिवंश-विष्णु पर्व—128.

17. एकलव्य आख्यान

गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य को धनुर्विद्या सिखाना स्वीकार नहीं किया था। लेकिन उसकी आस्था द्रोणाचार्य में थी। अतः वह द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर धनुर्विद्या स्वयं ही सीखता रहा और धनुर्विद्या में कुशल हो गया। उसके शस्त्र कौशल से ईर्षा के कारण पाण्डवों के कहने पर द्रोणाचार्य ने गुरु-दणिक्षा में उसके दाहिने हाथ का अंगूठा माँग लिया ताकि वह बाण न चला सके।

महाभारत-आदि पर्व अध्याय—131.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

18. कच्च-देवयानी आख्यान (कच-देवयानी)

कच देवगुरु वृहस्पति का पुत्र था। वह दैत्यगुरु शुक्राचार्य से मृत-संजीवनी विद्या सीखने गया। शुक्राचार्य की पुत्री इस पर आसक्त हो गई और इससे देवयानी ने विवाह करने के लिए कहा। इसके द्वारा विवाह प्रस्ताव अस्वीकार कर देने पर देवयानी ने शाप दिया कि तुम्हारी विद्या सफल न होगी। कच्च ने भी देवयानी को शाप दे दिया कि तुझे ब्राह्मण पति न प्राप्त हो। इस शाप के कारण ही देवयानी का विवाह क्षत्रिय राजा ययाति के साथ हुआ।

1. महाभारत-आदि पर्व—76-77.
2. स्कंद-पुराण-काशीखंड-अध्याय 16.
3. मत्स्य-अध्याय—25-26.

19. कच्छप-अवतार (कूर्म-अवतार)

यह विष्णु भगवान का द्वितीय अवतार माना जाता है। समुद्र-मंथन के समय भगवान विष्णु ने कच्छप रूप धारण किया था। जिनकी पीठ पर मंदराचल पर्वत को रखकर समुद्र का मंथन किया गया।

1. विष्णु—1।9।88.
2. भागवत—1।3।16. 2।7।13, 11।4।18.
3. अग्नि—3

20. कपिल-आख्यान

(1) कपिल-अवतार/कपिल का देवहूती को ज्ञान देना

ये भगवान के पांचवें अवतार माने जाते हैं। ये देवहूती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे तथा उन्होंने अपनी माता को ब्रह्मज्ञान दिया था। ये सांख्यशास्त्र के आदि प्रवर्तक माने जाने हैं।

भागवत—1।3।10, 2।7।3, 3।24।30.

(2) कपिल-सगर सुत आख्यान

सगर के द्वारा छोड़े गये यज्ञ के घोड़े को इन्द्र कपिल के आश्रम में बाँध गये थे। सगर-पुत्रों ने इनके आश्रम के निकट घोड़ा बँधा देखकर इन पर आक्रमण किया। इसमें सगर के साठ हजार पुत्र इनके शाप से भस्म हो गये।

1. ब्रह्म-अध्याय—78.
2. विष्णु—4।4।16-22.
3. भागवत—9।8.

21. कर्ण-आख्यान

(1) कर्ण-जन्म

कर्ण कुन्ती के कुमारी अवस्था में सूर्य के

1. महाभारत-वन०—308-309

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंश से पैदा हुआ था। लोक-लज्जा के भय से कुन्ती ने इसे सन्दूक में रखकर यमुना में फेंक दिया था। इसे राधा नामक सूत पत्नी ने निकाल लिया। यह निंसन्तान थी। उसने कर्ण का पालन-पोषण किया। इसीलिए कर्ण सूत पुत्र कहलाया।

2. विष्णु—4।14।36, 4।18।24-29.
3. भागवत—9।23।13, 9।24।32-36.

(2) कर्ण का अपमान

एक बार द्रोणाचार्य ने अपने सभी शिष्यों के शस्त्र विद्या-प्रदर्शन का समारोह किया। इस अवसर पर अर्जुन ने अपना कौशल दिखाकर प्रशंसा प्राप्त की, परन्तु कर्ण इसे सहन न कर सका। उसने अर्जुन द्वारा किये गये समस्त कार्य कर दिखाये और अर्जुन से द्वन्द्व युद्ध करने के लिए तैयार हो गया, जिस पर कृपाचार्य ने इसका अपमान किया।

महाभारत-आदि—135।31-33.

(3) कर्ण द्वारा गौ-हत्या

एक बार कर्ण धनुष बाण और तलवार लेकर आश्रम से बाहर गया। असावधानी से एक ब्राह्मण की गाय का बछड़ा इसके हाथों से मारा गया। तब ब्राह्मण ने इसे शाप दिया।

महाभारत-शांति-अध्याय—2.

(4) कर्ण का अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डवों को न मारने का वचन

महाभारत युद्ध में कर्ण के मान लेने से पूर्व कुन्ती कर्ण के पास उसे यह बताने गयी कि वह भी पाण्डवों का भाई है, अतः वह पाण्डवों के विरुद्ध युद्ध न करे। कर्ण ने उसकी इस याचना को अस्वीकार कर यह वचन दिया था कि वह अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डवों को न मारेगा।

महाभारत-उद्योग पर्व-अ०—46

(5) कर्ण की मृत्यु

महाभारत के युद्ध में द्रोणाचार्य, के मारे जाने के बाद सोलहवें दिन कर्ण कौरव सेना का सेनापति बना। युद्ध के सत्रहवें दिन अर्जुन से युद्ध करते हुए शापवश इसके रथ का पहिया जमीन में

महाभारत-कर्ण पर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

074842

धंस गया। यह उसे निकालने में लगा कि कृष्ण की प्रेरणा से अर्जुन ने इसे मार दिया।

22. कल्कि-अवतार

पुराणों में कल्कि का भविष्य में होने वाले अवतार के रूप में उल्लेख मिलता है। यह अवतार-कलियुग के अन्त में होगा। जब अधर्म की पराकाष्टा होगी तब म्लेछ, दस्यु, लोभी और पापियों का नाश करके वैदिक धर्म की स्थापना कर भगवान विष्णु सबको अपने-अपने धर्म में स्थापित करेंगे। उस समय सतयुग का आरम्भ होगा।

1. ब्रह्म-अ०—213.
2. विष्णु—4।24।98.
3. वायु—98।104-126.
4. भागवत—1।3।25, 2।7।38, 11।4।22.
5. अग्नि—6।8-13.

23. कामदेव का प्रद्युन के रूप में जन्म

कामदेव प्रेम के देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यह इन्द्र के आदेश से शिव का पार्वती से विवाह कराने के उद्देश्य से शिव की समाधि भंग करने गये थे, परन्तु शिव की कोपाग्नि से भस्म हो गये। रति के निवेदन करने पर शिव ने प्रद्युम्न के रूप में काम-देव का पुनर्जन्म होने का वर दिया।

1. विष्णु—5।27।28.
2. भागवत—10।55।1-2.

२
९.३
34

24. कार्तिकेय-आख्यान

(1) कार्तिकेय-जन्म

कार्तिकेय महादेव शंकर के पुत्र थे। तारकासुर के वध के लिए इनका जन्म हुआ था। इनका लालन-पालन चन्द्रमा की स्त्री कृतिकाओं ने किया था, इसलिए इन्हें कार्तिकेय कहा जाता है।

विष्णु—1।15।115-116.
वायु—41।38, 72।43-50.
मत्स्य—अ० 158.

(2) कार्तिकेय-तारकासुर युद्ध। कार्तिकेय का देव सेनापति होता।

कार्तिकेय देवासुर संग्राम में देव सेनापति बने तथा इन्होंने तारकासुर से युद्ध करके उसे रण क्षेत्र में मार दिया।

1. वायु—72।50.
2. मत्स्य—अ० 160.
3. ब्रह्माण्ड—3।10।59.

25. कालनेमि-इन्द्रजित

कालनेमि-रावण का मामा था, जिसने राम-

रामयण-युद्ध-कांड-10।1।68.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावण के युद्ध के समय रावण की सहायता की थी। इन्द्रजित रावण का पुत्र था जोकि लक्ष्मण के हाथों मारा गया था।

26. कुम्भकर्ण-आख्यान

रावण का यह छोटा भाई केकसी से उत्पन्न विश्रवा का पुत्र था जो अत्यन्त उपद्रवी और भयंकर था। इसलिए इसे ब्रह्मा से यह वरदान प्राप्त हुआ था कि वह छः महीने सोए और एक दिन भोजन करे। यह राम द्वारा राम-रावण युद्ध के समय गया था।

1. वाल्मीकि-रामायण-युद्ध-कांड — 10।45.
2. महाभारत-वन पर्व—275।28.
3. भागवत—9।10।18.

27. कुबेर को धनादि की प्राप्ति

कुबेर देववर्णिनी से उत्पन्न विश्रवा के पुत्र थे। ये धनाध्यक्ष थे। इन्द्र ने इन्हें नौ निधियों के भण्डार का प्रभारी नियुक्त किया था।

1. महाभारत-वन पर्व 274।15-17.
   वायु—40।8, 47।1, 70।38.
2. शिव पुराण-रुद्र-संहिता, सृष्टि खण्ड—16.

28. कृत्या-आख्यान

अपने शत्रुओं का नाश के लिये तांत्रिक लोग मंत्रबल से कृत्या को उत्पन्न कर लेते हैं। ऋषि दुर्वाशा ने अपनी जटा के बल से राजा अम्बरीष को मार डालने के लिए कृत्या उत्पन्न की थी। कृष्ण से अपने पिता का बदला लेने के लिए काशिराज के पुत्र सुदक्षिणा ने भगवान शंकर के आदेश से माहेश्वरी कृत्या उत्पन्न की थी।

भागवत—9।4।46, 10।66।27-40.

29. कृष्ण-आख्यान

(1) पूतना-वध

पूतना बलि की पुत्री थी, जिसका वास्तविक नाम रत्नमाला था। विष्णु के समान बालक को दूध पिलाने की इच्छा के कारण यह दानवी बनी थी। कंस ने इसे बालक कृष्ण का वध करने के लिए भेजा

1. ब्रह्म-अ० 185.
2. विष्णु — 5।5.
3. ब्रह्म वैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खंड-अध्याय —10.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। इसने कृष्ण को स्तन पान कराया। उस समय कृष्ण ने इसका सारा रक्त चूस कर वध कर दिया।	4. हरिवंश-विष्णु पर्व—अध्याय 7.

(2) शकट-भंजन

एक बार शिशु श्रीकृष्ण छकड़े के नीचे सोये हुए थे। उन्होंने छकड़े में अपना पैर मार दिया, जिससे छकड़ा उलट गया। उस पर बैठे लोमश ऋषि के शाप से देह रहित हुए उत्कच की श्रीकृष्ण के चरण स्पर्श से मुक्ति हो गई।	1. ब्रह्म-अ०—184. 2. विष्णु—5।6।1-7. 3. भागवत—10।7।4।15. 5. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म) अ० 12.

(3) तृणावर्त-वध

यह कंस का एक दैत्य मित्र था, जिसे कंस ने कृष्ण को मारने के लिए गोकुल भेजा। यह वहाँ पर चक्रवात का रूप धारण करके गया और कृष्ण को ऊपर उड़ा ले गया। श्रीकृष्ण ने ऊपर आकाश में ही इसे गला दबाकर मार दिया था।	1. भागवत—10।7. 2. ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड अध्याय—11.

(4) कृष्ण का मिट्टी खाना

एक समय कृष्ण के साथ खेल रहे ग्वाल-बालों ने यशोदा से कृष्ण के मिट्टी खाने की शिकायत कर दी। जब यशोदा ने कृष्ण का मुँह खुलवाया तो वह उनके मुँह में चर-अचर सम्पूर्ण जगत देखकर आश्चर्य चकित रह गई।	भागवत—10।8।32-38.

(5) कृष्ण का ऊखल बंधन

यशोदा श्रीकृष्ण के नटखटपन से तंग आकर उन्हें रस्सी से बाँधने लगीं। इन्होंने अपने घर की सारी रस्सियाँ जोड़ ली, लेकिन श्रीकृष्ण को न बाँध सकीं। बाद में यशोदा को परेशान देखकर कृष्ण स्वयं बंधन में बंध गये।	भागवत—10।9।15-18.

(6) यमलार्जुन-उद्धार

यमल और अर्जुन पूर्वजन्म में कुवेर के नलकूबर और मणिग्रीव नामक पुत्र थे। नारद के शाप से यह वृक्ष हो गये थे। एक बार कृष्ण को दण्ड देने के लिए यशोदा ने उन्हें इन वृक्षों से बाँध दिया।	1. ब्रह्म-अ० 184. 2. विष्णु—5।6।8-17. 3. भागवत—10।10. 4. ब्रह्म वैवर्त—(श्रीकृष्ण जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय कृष्ण ने इनका उद्धार किया। — खण्ड) अ० 14, 5. हरिवंश पुराण-विष्णु पर्व-अध्याय—8.

(7) वत्सासुर वध

वत्सासुर कंस द्वारा कृष्ण को मारने के लिए भेजा गया एक दैत्य था, जोकि एक बछड़े का रूप धारण करके आया था। कृष्ण ने इसके दोनों पिछले पैर पकड़कर मार दिया था।

भागवत—10।11.

(8) बकासुर-वध

यह कंस का मित्र था तथा वक्ष का रूप धारण कर कृष्ण को मारने गया था। श्रीकृष्ण ने पकड़कर चोच चीर कर मार डाला था।

1. भागवत—10।11.
2. ब्रह्मवैवर्त-(श्रीकृष्ण जन्म) अध्याय—16.

(9) अघासुर-वध

यह बकासुर और पूतना का भाई था। कृष्ण को मारने के लिए यह अजगर का रूप धारण करके गया था। श्रीकृष्ण ने इसे फेट फाड़कर मार डाला था।

भागवत—10।12.

(10) ब्रह्मा-मोह

कृष्ण के मानवोचित कार्यों को देखकर ब्रह्मा को भ्रम हो गया कि ये परब्रह्म नहीं हैं, अतः उन्होंने बछड़े ग्वाल-ब्राल आदि को ले जाकर अलक्षित कर दिया। कृष्ण ने ऐसे ही अन्य ग्वाल-बाल आदि वना लिए और अपनी क्रीड़ा में निरन्तर रत रहे। एक वर्ष बाद जब ब्रह्मा ने आकर देखा तव उनका भ्रम नष्ट हुआ और उन्होंने कृष्ण की स्तुति की।

1. भागवत—10।13-20.
2. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म खंड) अध्याय—20.

(11) कालिय-दमन

कालिय कद्रू का पुत्र था, जोकि गरुड़ के भय से समुद्र छोड़कर व्रज के समीप यमुना। सरोवर में छिपकर रहता था। इसके समीप जो भी जाता था, वह कालिय की भयंकर विषय ज्वाला से मर जाता

1. ब्रह्म-अ० 185.
2. विष्णु—5।7-8.
3. भागवत—10।16.
4. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। श्रीकृष्ण ने इसे वश में करके समुद्र में भेज दिया।	खण्ड) अ० 19.

(12) दावानल पान

एक समय व्रजवासी और गायें यमुना के तट पर सो गये। आधी रात के समय समीप के वन में आग गई, जिसमें सभी घिर गये। श्रीकृष्ण ने उस समय दावानल पान कर सभी गोप और गायों की रक्षा की। दूसरी बार गौ-चारण के समय सभी ग्वालों और गायों को वन में लगी आग ने व्याकुल कर दिया, जिससे भी श्रीकृष्ण ने सबकी रक्षा की।	भागवत—10।19.

(13) श्रीकृष्ण का गौ-चारण

श्रीकृष्ण का पालन पोषण गोकुल में नन्द के घर में हुआ था। नन्द एक सम्मानित गोप थे। गोकुल में गाय चराने का कार्य प्रमुख था। श्रीकृष्ण को भी गौ-चारण का कार्य करना पड़ा।	भागवत—10।19.

(14) गोपी चीर-हरण

गोपिकायें एक दिन अपने वस्त्र किनारे पर रखकर निर्वस्त्र होकर यमुना में जल विहार कर रही थीं। श्रीकृष्ण उनके वस्त्र हरण करके कदम्ब पर चढ़ गये तथा बहुत अनुनय-विनय के बाद वस्त्र लौटाये।	1. भागवत—10।22. 2. ब्रह्म वैवर्त (श्री कृष्ण जन्म खण्ड) अ० 27.

(15) द्विज-पत्नियों पर कृपा

एक समय वन में गाय चराते हुए श्रीकृष्ण ने स्वर्ग पाने की इच्छा से आंगिरस यज्ञ कर रहे ब्राह्मणों से भोजन माँगने के लिए ग्वाल-वालों को उनके पास भेजा। उनके भोजन न देने पर ग्वाल-बाल उनकी पत्नियों के पास गये। तब वे द्विज पत्नियाँ स्वयं भोजन लेकर कृष्ण के पास आईं। कृष्ण ने उनका भोजन स्वीकार कर उन पर अनुग्रह किया।	1. भागवत—10।23. 2. ब्रह्म वैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड) अ०-18.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(16) गोवर्धन-धारण । इन्द्र मान मर्दन

श्रीकृष्ण ने इन्द्र-यज्ञ भंग कर गोवर्धन पूजा करने की व्रजवासियों को सलाह दी। गोवर्धन-पूजा से इन्द्र रुष्ट हो गये और उन्होंने व्रज पर मूसलाधार वर्षा की। कृष्ण ने व्रजवासियों की रक्षार्थ अंगुली पर गोवर्धन पर्वत को उठा कर धारण किया और इन्द्र का मान भंग किया।

1. ब्रह्म-188.
2. विष्णु—5।10-12.
3. भागवत—10।24-25.
4. ब्रह्मवैवर्त—श्रीकृष्ण जन्म) अ० 21.
5. हरिवंश—अ० 19 (विष्णु-पर्व)

(17) वरुण लोक से नन्द को छुड़ाना

एक बार नन्द बाबा स्नान करने के लिए यमुना में गये। वहां पर वरुण का एक सेवक असुर नन्द को पकड़ कर वरुण के पास ले गये। जहाँ से श्री कृष्ण उन्हें छुड़ा कर लाये।

भागवत—10।28.

(18) रास-लीला

श्रीकृष्ण ने यमुना के तट पर गोपियों के साथ रास क्रीड़ा की थी। इसका पुराणों में प्रायः उल्लेख मिलता है।

1. ब्रह्म—189.
2. विष्णु—5।13.
3. भागवत—10।33.

(19) सुदर्शन-उद्धार

सुदर्शन पूर्व जन्म में एक विद्याधर था और अंगिरा के शाप से एक सर्प बन गया था। एक समय गोपों और अपने पुत्रों के साथ नन्द अम्बिका वन गये। वहाँ इस साँप ने नन्द के पैर पकड़ लिया श्रीकृष्ण ने आकर इसे हटाया। श्रीकृष्ण के स्पर्श से इसे मोक्ष मिली और अपने लोक को चला गया।

1. भागवत--10।34.

(20) शंख चूड़-वध

मथुरापति कंस ने इसे श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजा था। परन्तु यह श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया। पूर्व जन्म में यह कृष्ण का एक पार्षद था, जो एक कारण से राधा के शाप से राक्षस हो गया था।

भागवत—10।34.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(21) अरिष्टासुर-वध

अरिष्ट एक भयंकर बैल का रूप धारण कर श्रीकृष्ण को मारने आया था, लेकिन यह श्रीकृष्ण के हाथों से मारा गया। इसे वृषभासुर भी कहते हैं।

1. ब्रह्म—189.
2. विष्णु—5।14.
3. भागवत—10।39.
4. हरिवंश—अ०-22. (विष्णु पर्व)

(22) केशी-वध

केशी एक दैत्य था, जिसे कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजा था। यह घोड़े का रूप धारण करके ब्रज में आया था तथा उसने कृष्ण पर दुलत्ती मारकर आक्रमण किया, परन्तु श्रीकृष्ण ने उसके पिछले पैर पकड़ कर घुमा दिया और उसका गला घोंट कर मार दिया।

1. ब्रह्म —190.
2. विष्णु—5।16.
3. भागवत—10।36.
4. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड) अ० 16.
5. हरिवंश (विष्णु पर्व) अ० 25.

(23) व्योमासुर-वध

एक बार ग्वाल-बाल पहाड़ की चोटी पर गाय चरा रहे थे तथा आपस में खेल रहे थे। उसी समय व्योमासुर भी इनमें आकर शामिल हो गया एवं ग्वाल वालों को ले जाकर गुफा में छिपाने लगा। श्रीकृष्ण को इसका पता लग गया। उन्होंने इसे गला घोंट कर मार दिया और ग्वाल-बालों को गुफा से निकाला।

भागवत—10।37.

(24) कुब्जा पर कृपा

कुब्जा कंस की 'माल्यानुलेपन वाहिनी' दासी थी। यह कुबड़ी थी। श्रीकृष्ण के मथुरा में धनुष यज्ञ में जाते समय यह उन्हें मार्ग में मिली और माँगने पर श्रीकृष्ण को अनुलेपनादि सहर्ष दिये, जिससे प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण से उसे परम सुन्दरी बना दिया।

1. ब्रह्म—193.
2. विष्णु—5।20।6-10.
3. भागवत—10।42.
4. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड, 72.

(25) कुवलयापीड़-वध

कंस ने कुवलयापीड़ गज को धनुष-यज्ञ के

1. विष्णु—5।20।30-34.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण्डल से द्वार पर खड़ा कर दिया था, ताकि कृष्ण अन्दर आयें तो यह उन्हें मार दे, परन्तु यह श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया और इसके महावत अम्बष्ट को बलराम ने मार दिया।

2. भागवत—10।43.
3. हरिवंश (विष्णु पर्व) अ०-30

(26) चाणूर और मुष्टिक वध

चाणुर और मुष्टिक दोनों कंस के असुर पहलवान थे। जिन्हें श्रीकृष्ण और बलराम का वध करने के लिए नियुक्त किया था। मल्लयुद्ध में चाणूर श्रीकृष्ण द्वारा और मुष्टिक बलराम द्वारा मारा गया।

1. विष्णु—5।20।66-80
2. भागवत—10।44

(27) कंस-वध

कंस मथुराधिपति था जो अपने पिता उग्रसेन को कारागार में डाल कर स्वयं सिंहासन पर बैठ गया था। उसने कृष्ण के माता-पिता को भी कारागार में बन्द कर दिया तथा प्रजा पर और अत्याचार किए। श्रीकृष्ण ने केश पकड़ कर उसका वध कर दिया।

1. ब्रह्म—193.
2. विष्णु—5।20।82-89.
3. भागवत—10।46.
4. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण-जन्म) अ० 72.
5. हरिवंश (विष्णु पर्व) अ०-31.

(28) कृष्ण का साँदीपनि गुरु के आश्रम में विद्याध्ययन के लिए जाना

श्रीकृष्ण और बलराम धनुर्वेद की शिक्षा ग्रहण करने सांदीपनि मुनि के पास उज्जयिनी में उनके आश्रम में गये थे। इन्होंने केवल चौंसठ दिनों में अस्त्रमंत्रोपनिषद् सम्पूर्ण धनुर्वेद, अंगों सहित चारों वेद, सम्पूर्ण शास्त्र और सब प्रकार की विद्याएँ प्राप्त कर ली थीं।

1. विष्णु—3।51।16-24
2. भागवत—10।45, 10।85।32.
3. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड) अ० 102.

(29) मृत गुरु पुत्र को जीवित करना

श्रीकृष्ण द्वारा शिक्षा समाप्त कर लेने पर सांदीपनि ने गुरु दक्षिणा के रूप में अपने मृतपुत्र को जीवित रूप में माँगा था। श्रीकृष्ण ने पंचजन असुर को मारकर गुरु पुत्र को जीवित अवस्था में लाकर अपने गुरु को सौंप दिया।

1. विष्णु 5।21।24-31.
2. भागवत—10।45.
3. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड) अ० 102.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(30) जरासंघ के भय से मथुरा त्यागना

जरासंघ मगध का अधिपति तथा कंस का श्वसुर था। कंस को इसकी 'अस्ति' और 'प्राप्ति' नामक पुत्रियाँ ब्याही गई थीं। श्रीकृष्ण द्वारा कंस के मारे जाने पर इसने क्रोधित हो मथुरा पर अठाहर बार आक्रमण किया। इससे तंग आकर श्रीकृष्ण मथुरा को छोड़कर द्वारका में जा बसे।

भागवत—10।50.

(31) कालयवन-वध

यह गोपाली नामक अप्सरा से उत्पन्न गार्ग्य ऋषि का पुत्र था, जिसने जरासंघ के साथ ही मथुरा पर चढ़ाई की थी। इसे मथुरावासी पराजित करने में असमर्थ थे। इसलिए श्रीकृष्ण ने इसे छल से मारा। श्रीकृष्ण एक गुफा में जा छिपे जहाँ मुचकुन्द सो रहे थे। कालयवन भी उसी गुफा में घुस गया और सो रहे मुचकुन्द को कृष्ण समझकर लात मारी। मुचकुन्द के उठने पर वर के फलस्वरूप उनकी क्रोधाग्नि से यह भस्म हो गया।

1. ब्रह्म—169.
2. विष्णु—5।23.
3. भागवत—10।51.
4. हरिवंश—विष्णुपर्व-अ०-58.

(32) रुक्मिणी-हरण

रुक्मिणी विदर्भ नरेश भीष्मक की पुत्री थी। इसका विवाह शिशुपाल के साथ तय कर दिया गया था, पर यह श्रीकृष्ण में आसक्त थी। विवाह से एक दिन पूर्व रुक्मिणी इन्द्राणी की पूजा करने के लिए मन्दिर में गई तभी श्रीकृष्ण बलराम के साथ वहाँ पहुँच गये। रुक्मिणी के मन्दिर के बाहर आते ही वे उसे रथ में बैठाकर चल पड़े। समाचार पाकर रुक्मी आदि श्रीकृष्ण से युद्ध करने के लिए आये, परन्तु वे श्रीकृष्ण और बलराम से पराजित हुए।

1. ब्रह्म—199.
2. विष्णु—5।26.
3. भागवत—10।53.
4. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड) अ० 107-10।9.
5. हरिवंश-विष्णु पर्व अ० 52.

(33) प्रद्युम्न-विवाह। शम्बरासुर वध

कामदेव ने प्रद्युम्न के रूप में रुक्मिणी के उदर से जन्म लिया था। इसकी पत्नी रति मायावती के रूप में उत्पन्न हो शम्बरासुर के पास रहती

1. ब्रह्म—200.
2. विष्णु—5।27.
3. भागवत—10।16.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। जब प्रद्युम्न कुल दस दिन का था सम्बरासुर ने उसे समुद्र में फेंक दिया। प्रद्युम्न को एक मच्छ निगल गया। उस मच्छ को पकड़कर मछुओं ने शम्बरासुर को भेंट कर दिया। रसोइयों ने मच्छ के पेट से निकले प्रद्युम्न को मायावती को दे दिया। मायावती ने प्रद्युम्न को पाला। जब वह जवान हो गया तब उन्होंने शम्बरासुर को मार कर मायावती से विवाह कर लिया।

4. हरिवंश-विष्णु पर्व-अध्याय—105-108.

(34) स्यमन्तक-मणि आख्यान। शतधन्वा-वध

सत्याजित को स्यमन्तक मणि सूर्य से प्राप्त हुई थी। इस मणि को सत्याजित का भाई धारण कर शिकार खेलने गया था वहाँ एक शेर ने सत्याजित का वध करके मणि ले ली थी। परन्तु इसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण को लगा। श्रीकृष्ण ने जाम्बवान से इस मणि को लाकर पुनः सत्याजित को लौटा दिया था। सत्याजित ने श्रीकृष्ण पर लगाये चोरी के आरोप से लज्जित होकर अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह श्रीकृष्ण से कर दिया, जिससे शतधन्वा सत्याजित का शत्रु हो गया और एक दिन उसने सत्याजित का वध करके मणि छीन ली। जब श्रीकृष्ण को पता चला तो उन्होंने बलराम के साथ शतधन्वा का पीछा किया और श्रीकृष्ण ने उसका सिर काट डाला।

1. ब्रह्म—अ० 4
2. विष्णु—4।13.
3. भागवत—10।56-57.
4. हरिवंश—आदि पर्व अ०-38-39.

(35) भौमासुर-वध

यह एक प्रसिद्ध असुर था, जिसे नरकासुर भी कहा जाता है। पुराणों की मान्यता है कि यह विष्णु का पुत्र था, जो पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। यह वाणसुर की संगति में पड़कर दुष्ट हो गया था। इसने अपने भंडार में अपार सम्पति और सोलह हजार राजकुमारियाँ वन्द करली थीं। श्रीकृष्ण ने इसे चक्र से मार डाला और बंदी राजकुमारियों को मुक्त कर द्वारका ले आये।

1. विष्णु—5।29.
2. भागवत—10।59.
3. हरिवंश-विष्णु-पर्व—अ० 64

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(36) कृष्ण द्वारा पारिजात हरण

एक समय श्रीकृष्ण सत्यभामा सहित इन्द्रपुरी गये। सत्यभामा के कहने पर वे पारिजात वृक्ष को उखाड़ कर गरुड़ की पीठ पर रख कर चल दिये। इन्द्र को पता चला तो उसने अन्य देवताओं के साथ कृष्ण पर आक्रमण किया। कृष्ण इन्द्र के साथ समस्त देवताओं को हराकर पारिजात को द्वारकापुरी में ले आये।

1. ब्रह्म—203.
2. विष्णु—5।30.
3. भागवत—10।59।38-40.
4. हरिवंश-विष्णु पर्व—अ० 74.

(37) कृष्ण का वाणासुर से युद्ध

अनिरुद्ध के विवाह के अवसर पर श्रीकृष्ण का वाणासुर से युद्ध हुआ, जिसमें वाणासुर की पराजय हुई।

1. ब्रह्म—205-206.
2. विष्णु—5।33.
3. भागवत—10।63.
4. ब्रह्मवैवर्त—अ० 120.

(38) कृष्ण का शिव से युद्ध

वाणासुर शंकर भगवान का परम भक्त था, अतः कृष्ण के साथ हुए वाणासुर के युद्ध में शंकर अपने पुत्र कार्तिकेय और गणों के साथ रणभूमि में आये और कृष्ण बलराम से उन्होंने युद्ध किया। अन्त में शंकर श्रीकृष्ण के द्वारा पराजित हुए।

1. ब्रह्म—206.
2. विष्णु—5।33.
3. भागवत—10।63.
4. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म) अ० 120.

(39) पौण्ड्रक-वध

यह पुण्डुदेश के राजा वसुदेव का पुत्र था। श्रीकृष्ण के समान अपना रूप बनाकर रहता था और वसुदेव का पुत्र होने के कारण अपने को वासुदेव कहता। इसने द्वारका पर चढ़ाई की और कृष्ण के हाथों से मारा गया।

1. ब्रह्म—207.
2. विष्णु—5।3৪.
3. भागवत—10।66.
4. हरिवंश-भविष्य पर्व—101-102.

(40) शाम्ब-विवाह

दुर्योधन की कन्या लक्ष्मणा को स्वयंवर से शाम्ब हर लाये। कौरवों ने शाम्ब को लक्ष्मणा सहित पकड़ लिया और हस्तिनापुर ले आये।

1. ब्रह्म—208.
2. विष्णु—5।35.
3. भागवत—10।68.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलराम के समझाने पर दुर्योधन ने लक्ष्मणा का विवाह शाम्ब से कर दिया।

(41) जरासंध-वध

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर श्रीकृष्ण अर्जुन और भीम को लेकर जरासंध के पास गये तथा इससे युद्ध की याचना की। भीम ने इससे सत्ताईस दिन तक युद्ध किया और अन्त में श्रीकृष्ण की दुरभिसंधि से इसे बीच में से चीर डाला।

भागवत-—10।72.

(42) श्रीकृष्ण की अग्रपूजा-शिशुपाल-वध

युधिष्ठिर द्वारा किये गये राजसूय यज्ञ के अवसर पर श्रीकृष्ण की अग्रपूजा की गई, जिससे शिशुपाल श्रीकृष्ण को कटु वचन कहने लगा। इस पर कृष्ण पक्षीय राजा लोग शिशुपाल को मारने दौड़े। शिशुपाल भी लड़ने के लिए उद्यत् हो गया। उसी समय श्रीकृष्ण ने चक्र से उसका सिर काट दिया।

1. विष्णु—4।15।51-53.
2. भागवत—10।74.

(43) शाल्व-वध

यह शिशुपाल का मित्र था। श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल के मारे जाने का समाचार सुनकर इसने द्वारका पर आक्रमण कर दिया और युद्ध में स्वयं मारा गया।

भागवत—10।77.

(44) दन्तवक्र-वध

दन्तवक्र कुरुप देश का अधिपति था और शिशुपाल का भाई था। शिशुपाल, शाल्व तथा पोण्ड्रक के वध का प्रतिशोध लेने के लिए यह कृष्ण के पास आया तथा युद्ध में कृष्ण के द्वारा मारा गया।

भागवत—10।78.

(45) सुदामा पर कृपा

सुदामा श्रीकृष्ण के सहपाठी और सखा थे। यह अत्यन्त दरिद्र थे। अपनी पत्नी के कहने पर यह

भागवत—10।80-81.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारकापुरी श्रीकृष्ण के पास गये और उनकी कृपा से ऐश्वर्यवान हो गये ।

(46) कृष्ण की श्रीदामा पर कृपा

श्रीदामा कृष्ण के बालपन के मित्र थे। श्रीकृष्ण ने उसके साथ मित्रता का पूरी तरह से निर्वाह किया। किसी प्रकार का भेद नहीं रखा।

भागवत—-10।15-20.

(47) कृष्ण का विदुर के घर साग खाना

विदुर व्यास तथा राजा विचित्र वीर्य की रानी अम्बिका की दासी के संयोग से उत्पन्न हुये थे, अतः दासी पुत्र कहलाये। एक बार श्रीकृष्ण दुर्योधन के महलों को छोड़कर विदुर के बिना बुलाये चले गये और उनके पास जाकर उनका आतिथ्य स्वीकार किया।

1. महाभारत-उद्योग पर्व—अ० 91.
2. भागवत—3।1।2.

(48) कृष्ण की आयुध न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा

महाभारत के युद्ध से पूर्व अर्जुन और दुर्योधन श्रीकृष्ण के पास युद्ध का निमंत्रण लेकर गये थे। श्रीकृष्ण ने एक ओर अपनी नारायण सेना दी तथा स्वयं आयुध न ग्रहण करने का वचन देकर दूसरी ओर हो गये। अर्जुन ने निःशस्त्र कृष्ण को स्वीकार कर लिया।

महाभारत-उद्योग पर्व—-7।19.

(49) कृष्ण का सारथी बनना

महाभारत के युद्ध में कृष्ण अर्जुन के सारथी बने। उन्होंने पांडवों को भयंकर कष्टों से बचाया। रथ के घोड़ों की सेवा की तथा उन्हें पानी तक पिलाया। अन्त में अर्जुन को विजय दिलाई।

1. महाभारत-उद्योग पर्व—अ० 7।37-38.
2. भागवत—1।15।17.

(50) अर्जुन को गीतोपदेश। विराट रूप दिखाना

महाभारत युद्ध के आरम्भ में अपने विपक्ष में अपने ही बन्धु-बाँधवों को देखकर अर्जुन युद्ध से विमुख हो गया। उस समय कृष्ण ने अर्जुन को गीता सुनाकर युद्ध के लिए प्रवृत्त किया और अपना विराट रूप दिखाया।

1. महाभारत-भीष्म पर्व—अ० 25-42.
2. भागवत—1।9।36.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(51) कृष्ण का ब्राह्मण पुत्र को जीवित करना

द्वारिकापुरी में एक ब्राह्मण रहता था। उसके यहाँ पैदा होते ही पुत्र की मृत्यु हो जाती थी। इस प्रकार उसके नौ पुत्र मृत्यु को प्राप्त हुए। ब्राह्मण के बुरा-भला कहने पर अर्जुन ने उसके पुत्र की रक्षा का आश्वासन दिया, पर वे भी रक्षा करने में असमर्थ रहे। वे संयमनपुरी बालक को खोजने गये परन्तु फिर भी असफल रहे, अतः उन्होंने अग्नि में प्रवेश करना चाहा। उसी समय श्रीकृष्ण ने उस ब्राह्मण बालकों को यथोचित वय और रूप के अनुरूप लौटा दिया।

1. भागवत––10।89।22-62.
2. हरिवंश-विष्णु––112-114.

(52) यादवों का विनाश

एक समय कुछ यादव कुमारों ने शाम्ब को स्त्री बनाकर विश्वामित्र आदि मुनियों के उपहास का प्रयास किया। उनके शाप से सम्पूर्ण यादव एक दूसरे पर प्रहार करते हुए समाप्त हो गये।

1. विष्णुपुराण—5।37।41-50.
2. भागवत––11।30.

(53) कृष्ण की ब्याध के वाण से मृत्यु। ब्याध पर कृपा

कृष्ण पीपल के वृक्ष के नीचे 'दाहिनी जाँघ' पर बाँया पैर रखकर वृक्ष से चिपक कर लेटे हुए थे। उसी समय जरा नामक ब्याध ने हिरण समझ कर इन पर वाण चला दिया। बाण इनके बाँये तलवे में लगा, जिससे इनकी मृत्यु हो गई। ब्याध ने आकर इनसे अपने अपराध की क्षमा माँगी। श्रीकृष्ण ने ब्याध को क्षमा कर उसे स्वर्ग को भेज दिया।

1. ब्रह्म—211.
2. विष्णु—5।37।66-72.
3. भागवत—11।30।31-40.

30. कौरव पाण्डव आख्यान

(1) कौरवों द्वारा भीम को विष देना

भीम एक बलवान योद्धा था। अतः बल के कारण दुर्योधन इनसे ईर्ष्या करता था। एक दिन दुर्योधन ने इन्हें विष पिलाकर नदी में फिकवा दिया। वहाँ सर्पों के काट लेने पर इनका पहला विष उतर गया।

महाभारत आदि पर्व—अ० 127.

2. भागवत—1।13।23.
3. ब्रह्मांड—3।71।65.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) कौरव पांडव द्यूत-क्रीड़ा

दुर्योधन और पांडवों में राज्य के लिए वैमनस्य हो गया, जिसके परिणामस्वरूप दुर्योधन की जब कोई चाल सफल न हुई तो दुर्योधन ने युधिष्ठिर के सामने द्यूत का प्रस्ताव रखा तथा कपट छल से सम्पूर्ण राज-पाठ छीनकर पांडवों को वन में भेज दिया।

1. महाभारत-सभा पर्व—अ० 60-61.
2. भागवत—3।1।8.

(3) कौरवों द्वारा द्रोपदी चीर-हरण और श्रीकृष्ण द्वारा चीर का बढ़ाया जाना

उक्त द्यूत क्रीड़ा में युधिष्ठिर ने अपना सब-कुछ हार जाने पर दुर्योधन ने द्रौपदी को भी दाँव पर लगवा दिया था। युधिष्ठिर द्रौपदी को भी जुए में हार गये। दुश्शासन रजस्वला अवस्था में द्रोपदी को केश पकड़ कर महलों से सभा के मध्य में लाया और सभी के सामने निर्वस्त्र करने का प्रयास किया। ऐसे समय में विवश हुई द्रौपदी ने श्रीकृष्ण से आर्त-स्वर में प्रार्थना की कि वे उसकी रक्षा करें। श्रीकृष्ण ने उस समय द्रौपदी के चीर को इतना बढ़ाया कि दुशासन उसे खींचने-खींचते थक गया तथा द्रौपदी निर्वस्त्र होने से बच गई।

1. महाभारत-सभा-पर्व—अ० 67-68.
2. भागवत—1।13।23. 3।1।7.

(4) कौरव द्वारा पाण्डवों को लाक्षागृह में जलाना

पाण्डव कौरवों के चचेरे भाई थे। कौरव इनसे अधिक द्वेष और ईर्ष्या रखते थे। अतः कौरवों ने इन्हें बहु त कष्ट दिये। भीम को विष देकर नदी में फेंक दिया। इन्हें लाक्षागृह में जलाने का भी षड्यंत्र किया तथा शकुनि की सहायता से इनका सर्वस्व अपहरण कर बारह वर्ष बनवास के लिए भेज दिया।

1. महाभारत-आदि पर्व—अ० 147.
2. भागवत—1।13।23. 3।1।6, 10।57।1.

(5) पाण्डवों की महर्षि दुर्वासा से रक्षा

एक बार दुर्योधन ने पाण्डवों से बदला लेने के उद्देश्य से अपने ऊपर प्रसन्न हुए दुर्वासा ऋषि को उनके दस हजार शिष्यों सहित युधिष्ठिर के पास भोजन करने के लिए भेज दिया। द्रौपदी के

महाभारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास एक बटलोई थी, जिसमें सिद्ध किया हुआ अन्न द्रौपदी के भोजन कर लेने से पूर्व समाप्त नहीं होता था। लेकिन जिस समय दुर्वासा अपने शिष्यों सहित पाण्डवों की कुटिया में पहुँचे उस समय द्रौपदी पाण्डवों को भोजन कराके स्वयं भोजन करके रसोई बढ़ा चुकी थी। इससे द्रौपदी को बड़ी चिन्ता हुई। ऐसे समय में विश्वम्भर श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की बटलोई में शेष एक साक के पत्ते का भोग लगाकर त्रिलोकी को तृप्त कर दिया। दुर्वासा अपने शिष्यों सहित नदी पर स्नान करके गये थे। उनकी वहीं तृप्ति हो गई और वे वहीं से भाग गये।

31. खट्वांग की मुक्ति

यह राजा विश्वसद् के पुत्र थे। देवासुर-संग्राम में यह देवपक्ष की ओर लड़े थे। जब इन्हें पता चला कि इनका जीवन कुल दो घड़ी ही शेष रह गया है तो रण क्षेत्र से आ गये और दो ही घड़ी में सब-कुछ त्यागकर भगवान का अभय पद प्राप्त कर लिया।

1. विष्णु—4।4।75-80.
2. भागवत—2।1।13-14. 9।9।41-49.

32. गजेन्द्र-मोक्ष

पाण्डवराज इन्द्रद्युम्न अगस्त्य के शांप से हाथी होकर एक बार त्रिकूट पर्वतों के मध्य में स्थित एक झील से पानी पीने के लिए गया। वहाँ पर इसका एक मगर ने पैर पकड़ लिया और अन्दर पानी में खींचने लगा। इसने अपने को मुक्त होने में असमर्थ जानकर हरि का स्मरण किया। भगवान ने चक्र से मगर का सिर काटकर इसे मुक्त कराया।

1. भागवत—4।7।15-16. 3।9।35-36, 8।3
2. वामन—अ० 85.

33. गणिका-उद्धार (पिंगला-आख्यान)

पिंगला विदेह राज्य की एक वृद्ध वेश्या थी, जो नित्य वेश्यावृत्ति से अपनी जीविका चलाती थी, एक बार इसने ग्राहक की प्रतीक्षा में काफी समय व्यतीत कर दिया तो इसे अपने जीवन से ग्लानि हो गई और भगवद् भजन करके शान्ति प्राप्त की।

1. भागवत—11।8।22-24.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

34. गय द्वारा यज्ञ

यह राजा नक्त और द्रुति के पुत्र थे। इन्होंने प्रजा का पालन धर्मों का आचरण करते हुए किया। इन्होंने महान यज्ञ किया, जिसमें इन्द्र सोमपान करने से उन्मुक्त हो गये तथा यज्ञफल को भगवान यज्ञपुरुष ने साक्षात् प्रकट होकर ग्रहण किया। महाभारत के अनुसार यह अमूर्तरया के पुत्र थे।

1. महाभारत वन पर्व—95/18-29.
2. भागवत—5।15।6-14.

35. गरुड़-आख्यान

(1) गरुड़-अरुण आख्यान

गरुड़ कश्यप और विनता का पुत्र और अरुण का छोटा भाई था। यह अपने बड़े भाई वरुण को पीठ पर बैठाकर पिता के घर से माता के समीप महासागर के दूसरे तट पर रख आये थे। सूर्य ने जब अपने तेज से सम्पूर्ण दिशाओं को जलाने का विचार किया तो यह फिर अरुण को उठाकर सूर्य के समीप पूर्व दिशा में रख आये।

महाभारत-आदि अ० 24।4-5.

(2) गरुड़ का अमृत लाना

गरुड़ की माता को उसकी सौत कद्रू ने कपट से दासी बना लिया था। अपनी माता को दासीत्व से मुक्त कराने के लिए गरुड़ अमृत लेने इन्द्रलोक गया। वहाँ से अमृत चुरा कर ला रहा था तभी इन्द्र को पता चल गया। दोनों में घोर युद्ध हुआ जिसमें देवताओं को पराजित कर यह अमृत ले आया।

1. महाभारत-आदि पर्व—28-32.
2. भागवत 3।1।49. 10।52।16-17.

(3) गरुड़-सर्प वैर

अमृत लाने के उप-क्रम में हुए उक्त युद्ध में विजयी गरुड़ की इन्द्र से मित्रता हो गई थी। मित्रता हो जाने पर इन्द्र ने सख्यत्व दर्शाने के लिए गरुड़ को वर दिया कि सर्प तुम्हारा भक्ष्य बनेंगे।

1. महाभारत-आदि पर्व—अ० 34।12-13.

36 गालव की गुरु दक्षिणा से मुक्ति

ये विश्वामित्र के शिष्य थे। एक बार

1. महाभारत-उद्योग-पर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्होंने विश्वामित्र की बहुत सेवा की थी। अतः विश्वामित्र ने प्रसन्न हो इन्हें पूर्ण विद्वान होने का आशीर्वाद दिया। इन्होंने विश्वामित्र से गुरु दक्षिणा लेने का हट किया। विश्वामित्र ने इनसे आठ सौ श्याम कर्ण घोड़े माँग लिये, जिससे ये परेशानी में पड़ गये। राजा ययाति की कन्या माधवी की सहायता से विश्वामित्र की गुरु दक्षिणा से मुक्त हुए।

अ० 106-119

37. गंगावतरण/भगीरथ आख्यान

अपने पूर्वजों का उद्धार करने के लिए भगीरथ को गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर लानी थी। गंगा की उत्पत्ति वामनावतार के चरण धोने के लिए ब्रह्मा के कमण्डल से छोड़े गये जल से हुई है। इसलिए गंगा को 'विष्णुपदी' भी कहा जाता है। परन्तु गंगा के प्रबल वेग को पृथ्वी पर कोई धारण करने में समर्थ नहीं था, अतः भगीरथ ने शिव की आराधना की। शिव ने गंगा को अपनी जटाओं में धारण किया। तत्पश्चात् उसे भूमण्ड पर छोड़ा, जिससे भगीरथ के पूर्वजों का उद्धार हुआ।

1. भागवत—8।24।4 9।9
2. मार्कण्डेय—73

38. गांधारी को सौ पुत्रों की प्राप्ति

एक समय व्यास भूख और परिश्रम से थके हुए धृतराष्ट्र के पास आये। गांधारी ने उनके लिए भोजन और विश्राम की व्यवस्था कर प्रसन्न किया। अतः व्यास ने उसे सौ पुत्रों की प्राप्ति का वरदान दिया। कालान्तर में वर के अनुसार इनके गर्भाधान हुआ। जल्दी पुत्र हो इस अभिलाषा से इसने बलपूर्वक गर्भ बाहर निकाल दिया, पर मृतप्राय माँस पिण्ड ही इसके उत्पन्न हुआ। व्यास की कृपा से यह मांस पिण्ड सौ पुत्रों में बदल गया।

1. महाभारत आदि पर्व अ० 114.

39 गांधारी का कृष्ण को शाप

दुर्योधन की मृत्यु के बाद पुत्र शोक से संतप्त हो गांधारी ने रणक्षेत्र में आकर सब पुत्रों के शव देखे तथा कृष्ण को शाप दिया कि छत्तीस वर्षों

महाभारत-स्त्री विलाप पर्व—अ० 25.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में यादव कुल का नाश हो जायेगा और तुम भी किसी निन्दित उपाय से मृत्यु को प्राप्त होगे।

40. चन्द्र-आख्यान

(1) चन्द्रदेव द्वारा राजसूय यज्ञ

चन्द्र समुद्र-मंथन से निकले चौदह रत्नों में से एक हैं। अन्य मतानुसार यह अत्रि के पुत्र माने जाते हैं। इनकी गणना देवताओं में होती है। चन्द्रमा वनस्पतियों के स्वामी तथा यज्ञों और औषधियों के अधिष्ठाता हो गये थे, अतः इन्हें सोम भी कहते हैं। इन्होंने कुरुक्षेत्र में राजसूय यज्ञ किया, जिसके होता अत्रि बने थे।

1. ब्रह्म 1.
2. विष्णु 4।6।8.
3. भागवत 9।14।2-3.
4. वायु—90.

(2) चन्द्रमा का गुरुपत्नी से व्यभिचार चन्द्रमा का कलंकी होना

एक समय चन्द्र ने बृहस्पति की पत्नी तारा के साथ रमण किया था तब बाद में इस विषय को लेकर देवताओं में आपस में युद्ध हुआ। शंकर ने इन पर क्रोधित हो इनके दो हिस्से कर दिये और तारा के शाप से चन्द्रमा के कलंकी और मृगाकृति होने की पुष्टि की। चन्द्र और तारा के संयोग से बुध का जन्म हुआ था, जो चन्द्रमा के पास रहा।

1. ब्रह्म 9.
2. विष्णु 4।6।9-21.
3. भागवत 9।14.4-10.
4. वायु—90.
5. ब्रह्म वैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म) अ० 81.
6. मत्स्य—23।29-49.

(3) चन्द्रमा का शशांक होना

एक बार देव और दैत्य शशपान तीर्थ पर एकत्रित हुए। वहाँ देर हो जाने के कारण चन्द्रमा को अमृत नहीं मिली। वहाँ पर देवों ने उस तीर्थ को इनसे लेने के लिए कहा, वहां एक खरगोश उस तीर्थ का प्राशन कर रहा था, उसे भी ये खा गये। तब से वह इनके उदर में विद्यमान है।

स्कन्दपुराण 7।1।25-8.
(प्राचीन चरित्रकोष)

(4) चन्द्र का रोहिणी से विवाह

रोहिणी दक्ष प्रजापति की पुत्री थी। जो चन्द्र की पत्नी बनी।

पद्म-सृष्टि खण्ड-26

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

41. चन्द्रहास आख्यान

चन्द्रहास केरल के अधिपति सुधार्मिक का पुत्र था। इसका मूल नक्षत्र में जन्म हुआ था तथा इसके बाये पैर में छः अंगुली थी, अतः अशुभ चिह्नों के कारण यह अल्पायु में ही अनाथ हो गया। इसने अत्यन्त कष्ट उठाये। धृष्ट बुद्धि ने इसके वध का प्रयास किया, पर यह सब कष्टों से मुक्त होकर अन्त में कोन्तल का राजा बन गया।

जैमिनि अश्वमेघ—50।59.

42. जगदम्बा का चामुण्डा बनना

शुम्भ निशुम्भ के सेनापति चण्ड और मुण्ड को मारकर काली देवी 'चामुण्डा' नाम से प्रसिद्ध हुई। काली का यह रूप अत्यन्त भीषण एवं भयंकर माना जाता है। जगदम्बा में जगत पोषण शक्ति निहित है तो चामुण्डा में संहारक शक्ति की व्यंजना है।

मार्कण्डेय अ० 87।25.

43. जनक द्वारा सिद्धि-प्राप्ति

जनक मिथिला नगर के संस्थापक थे। ये निमि को मथने से उत्पन्न हुये। इनकी गणना ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त ऋषियों में की जाती है। ये राज्य करते हुए भी अनासक्त रहे थे। ऋषि होते हुए भी लोक में प्रवृत्त रहे।

1. महाभारत—शांति पर्व-अध्याय-27
2. वायु—86।2-6.
3. भागवत—9।13।11-14.
4. नारद-पूर्व भाग—2।77.

44. जनमेजय का नाग-यज्ञ

परीक्षित की मृत्यु साँप के डसने से हुई थी, अतः प्रतिशोध लेने के लिए मुनि उत्तंक के उपदेश अनुसार परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने सर्प यज्ञ की व्यवस्था की। जिसमें अनेक सर्प यज्ञ कुण्ड में गिरकर मृत्यु को प्राप्त हुए।

1. महाभारत-आदि—51-52
2. भागवत—9।22-36.
3. देवीभागवत—10।1I.

45. जड़भरत-आख्यान

भरत ऋषभदेव के पुत्र थे। ऋषभदेव के वन को भागवत चले जाने पर उन्होंने धर्म और न्याय के साथ प्रजा का पालन किया तत्पश्चात

भागवत-पुराण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पुत्रों को राज्य देकर राज्य को त्याग कर वन में रहकर हरिभजन में रम गये। वन में वे एक हिरणी के बच्चे को ले आये और उसका पालन-पोषण करने लगे। एक समय वह हिरण का बच्चा वन में कहीं चला गया। भरत उसे ढूँढ़ते फिरे और अन्त में मृग के ध्यान में ही प्राण त्याग दिये, जिससे वे अगले जन्म में हिरण बने।

46. जड़भरत-रहूगण आख्यान

भागवत-पुराण

एक समय राजा रहूगण कपिल मुनि से ज्ञान प्राप्त करने के लिए पालकी पर बैठकर चले। रास्ते में एक कहार अस्वस्थ हो गया। रहूगण जिस रास्ते से जा रहे थे वहाँ जड़भरत पड़े हुए थे, अतः उन्होंने उन्हें पालकी में लगा लिया। जड़भरत पालकी को उठाकर नीचे जमीन में कीट पतंगों से बचकर चलने लगे ताकि उनके पैर से दबकर न मर जाँय। इससे पालकी इधर-उधर हिलने लगी। इस पर राजा रहूगण ने भरत से कहा कि अरे कहार तू टेढ़ा-मेढ़ा चलता है तुझे मरने का हृदय में डर नहीं है। इस पर जड़भरत ने राजा रहूगण को उत्तर दिया कि यह जीव कर्म करके तदनुसार जन्म प्राप्त करता है। इस प्रकार जन्म धारण करते-करते यह थक गया है, परन्तु इसका कर्म करना नहीं छूटा है। उत्तर सुनकर राजा रहूगण को प्रतीत हुआ कि यह कोई ज्ञानी पुरुष है। अतः रहूगण ने जड़भरत के चरणों में गिरकर क्षमा मांगी।

47. जयद्रथ का शिव से वर प्राप्त करना

महाभारत—द्रोण पर्व, अध्याय-32।17-21.

जयद्रथ सिंधु देश का राजा था। जिसे दुर्योधन की बहिन दुःसला ब्याही गई थी। एक बार पाण्डवों से अपमानित होने पर इसने शंकर की घोर तपस्या करके उनसे यह वर माँगा कि मैं समस्त पाण्डवों को जीत सकूँ। शंकर ने इसे यह वर दिया कि तुम पाण्डवों को अर्जुन की अनुपस्थिति में पराभूत कर सकोगे। अभिमन्यु के चक्रव्यूह के भेदन के समय इसने पाण्डवों का पराभव किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

48. जयद्रथ-वध

महाभारत के युद्ध में इसने कौरवों की ओर से लड़ते हुए अन्य महारथियों के साथ मिलकर अभिमन्यु को अन्याय से मारा था। अतः श्रीकृष्ण की योगमाया की सहायता से यह अर्जुन के द्वारा मारा गया। इसके पिता व्रद्धक्षत्र ने इसके जन्म के समय यह वर दिया था कि जो इसे मारेगा, उसके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे। अर्जुन ने दिव्यास्त्र से जयद्रथ का सिर व्रद्धक्षत्र की गोद में डाला, जिससे उनके ही सिर के सौ टुकड़े हो गये।

महाभारत—द्रोण पर्व-146।129-130.

49. जयन्त द्वारा सीता का अपमान

जयन्त इन्द्र और शची का पुत्र था। इसे उपेन्द्र भी क ा जाता है। राम के बनवास के समय इसने कौए का रूप बनाकर सीता के स्तनों में चोंच मारकर अपमान किया था। इसलिए राम ने इसकी एक आँख फोड़ दी।

1. वायु—68।24.
2. पदम-उत्तर खण्ड---242।195-210.
3. नृसिंह—49।1-15.
4. रघुवंश 12।21-23.

50. जय-विजय आख्यान

जय-विजय बैंकुण्ठ के द्वारपाल थे। इन्होंने सनकादिक को बैंकुण्ठ में प्रवेश नहीं करने दिया। अतः उनके शाप से अगले जन्मों में ये राक्षस बने। बिना अपराध के जय-विजय को शाप देकर सनकादिक को भी पश्चात्ताप करना पड़ा।

भागवत—3।15-16, 41.

51. जह्नु द्वारा गंगा-पान

भगीरथ गंगा के भू लोक में आने पर गंगासागर तक उस स्थान से होकर ले जा रहे थे जहाँ पर सगर-पुत्र भस्म हुए थे। उस स्थान पर ऋषि-जह्नु यज्ञ कर रहे थे। उन्होंने यज्ञ के विघ्न को दूर करने के लिए गंगा का पान कर लिया। प्रार्थना करने पर इन्होंने फिर गंगा को कान से निकाला और गंगा जाह्नवी कहलाई।

विष्णु—4।7।2-6.
वायु—91।54-60.
भागवत—8।15।3.

52. दधीचि-आख्यान (दधीचि द्वारा हड्डियों का त्याग)

वृत्र नामक असुर ने अपने कुकृत्यों से संसार

1. ब्रह्म—110.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पीड़ित कर रखा था। वह केवल दधीचि की हड्डियों से बने अस्त्र से ही मारा जा सकता था, अतः देवराज इन्द्र ने इनसे आकर हड्डियाँ माँगी। इन्होंने सहर्ष इन्द्र की हड्डियाँ दान कर दी थी और शरीर त्याग कर दिया था। इनकी हड्डियों के बने अस्त्र से ही वृत्रासुर मारा गया।

2. भागवत—6।9।51-55. 6।10.

53. तारकासुर-वध

तारक तार का पुत्र था, जिसने ब्रह्मा की तपस्या करके अपने समान किसी के बलवान न होने और केवल शिव के पुत्र द्वारा ही मारे जाने का वरदान प्राप्त किया था। वर प्राप्ति के बाद उसने घोर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। इसके मारने के लिए देवताओं ने शिव और पार्वती के विवाह का प्रयास किया। शिव-पार्वती के विवाह के उपरान्त कार्तिकेय का जन्म हुआ। वे देवताओं के सेना नायक बने और उन्होंने घोर युद्ध करके तारकासुर का वध किया।

1. शिव-रुद्र संहिता-कुमार-खण्ड-10.

54. दत्तात्रेय-अवतार

दत्तात्रेय एक प्राचीन ऋषि हैं, जो विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक माने जाते हैं। ये परम-योगी एवं सिद्ध थे तथा इन्होंने चौबीस पदार्थों से शिक्षा ग्रहण की थी। इन्होंने अलर्क और प्रह्लाद को ब्रह्मज्ञान की शिक्षा दी थी और यदु और सहस्त्रार्जुन को योग का उपदेश देकर मोक्ष दिलाई थी।

1. ब्रह्म—213.
2. भागवत— 1।3।11, 5।7।4.

55. दिलीप द्वारा नन्दिनी की सेवा

दिलीप अंशुमान के पुत्र एवं अयोध्या के अधिपति थे। एक बार इन्द्र के दरबार से लौटते हुए दिलीप ने कामधेनु का प्रदक्षिणादि सत्कार नहीं किया था। इसलिए गौ ने इसे शाप दे दिया था कि तुम्हारे संतान नहीं होगी। कुछ समय बाद नन्दिनी गौ की रक्षा के लिए अपने प्राण तक अर्पण कर दिये

1. पद्म-पुराण-उत्तर खण्ज— अ० 203.
2. रघुवंश, सर्ग—12.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। जिससे इनको गाय का दिया शाप समाप्त हो गया।

56 दीर्घतमस-आख्यान

दीर्घतमा उशिज ऋषि के पुत्र थे। वृहस्पति ने उशिज पत्नी से बलपूर्वक मैथुन किया। उस समय ये गर्भ में थे। इन्होंने वृहस्पति के मैथुन में बाधा उत्पन्न की अतः वृहस्पति के क्रोध से अंधे हो गये थे।

1. वायु—99।36-62.
2. भागवत—9।20।36-39,
3. मत्स्य—अ० 48

57. द्रुपद-द्रोण वैर

द्रुपण द्रोणाचार्य के मित्र थे। द्रुपद के राजा होने के बाद द्रोणाचार्य एक गाय माँगने के लिए उसके पास गये। इस पर द्रुपद ने द्रोणाचार्य का तिरस्कार कर दिया। अतः द्रुपद से बदला लेने के उद्देश्य से उन्होंने कौरव पाण्डवों से गुरु दक्षिणा में द्रुपद को बाँध कर लाने के लिए कहा था। पाण्डव द्रुपद को बाँध कर ले आये थे। द्रोणाचार्य ने इनसे इनका आधा राज्य लेकर मुक्त कर दिया।

महाभारत—आदि पर्व-अध्याय-130, 137

58. दुर्गा की उत्पत्ति

महिषासुर से त्रस्त होकर विष्णु के कहने के अनुसार अपना-अपना तेज निकाल कर देवताओं ने एक देवी को प्रकट किया, जिसने महिषासुर का वध किया। स्कन्द-पुराण अनुसार रुरु के पुत्र महादैत्य दुर्ग ने जब देवताओं को यातना देनी प्रारम्भ की तब शिव ने दुर्गा को उसके वध के लिए भेजा। दुर्ग को मारने के कारण यह देवी दुर्गा हुई। पुराणों में दुर्गा के अनेक रूपों का उल्लेख मिलता है।

1. ब्रह्म—64.
2. मार्कण्डेय—83.
3. ब्रह्मवैवर्त-ब्रह्म-खण्ड, 64.
4, स्कन्द-काशी खण्ड—71.72.

59. दुर्वासा का कृष्ण को वर

एक समय दुर्वासा ने कृष्ण का सत्व हरण करने का प्रयास किया। इन्होंने अपनी झूठी खीर कृष्ण और रुक्मिणी से अपने शरीर पर लगाने के लिए कहा। कृष्ण के खीर शरीर पर लगाने पर

1. महाभारत—5।57-62.
2. विष्णु—5।38।68.
3. स्कन्द-शतरुद्र संहिता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने वर दिया कि तुम्हारे शरीर के जितने भाग में खीर लगी है, वह सारा ८ त्रवत हो जायेगा। इस प्रकार कृष्ण का सारा शरीर वज्र प्राय हो गया, पर तलवे पर उन्होंने खीर नहीं लगाई। परिणाम-स्वरूप बहेलिये का बाण तलवे में लगने पर उनकी मृत्यु हो गई।

60. दुर्योधन-वध

दुर्योधन धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र था। यह पाण्डवों से अधिक ईर्ष्या करता था और उनके अहित का कोई न कोई षड्यंत्र बनाता रहता था। दोनों के आपसी मन-मुटाव के कारण महाभारत का युद्ध हुआ, जिसमें सारे कौरव मारे गये। अन्त में भीम ने द्वंद्व-युद्ध में इसकी जाँघ तोड़ दी, जिससे इसकी मृत्यु हुई।

1. महाभारत – शल्य पर्व— अ० 58.
2. भागवत—3।3।13.
3. मत्स्य—103.

61. दुशासन-वध

युधिष्ठिर दुर्योधन के साथ हुये जुए में अपना सर्वस्व हारकर द्रौपदी को भी हार गये थे। दुशासन द्रौपदी को रजस्वला अवस्था में महलों से खींचकर ले गया था एवं सभा के बीच में नग्न करने की कोशिश की। इस पर भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि जिन हाथों से दुशासन ने द्रोपदी की साड़ी खींची है वह उन हाथों को उखाड़ कर रक्त पान करेगा और रक्त से द्रोपदी की वेणी धुलवायेगा। युद्ध के मैदान में भीम ने दुशासन की भुजा उखाड़कर उसका रक्त पान किया तथा प्रतिज्ञा पूर्ण की।

महाभारत—कर्ण पर्व—अ०-८3.

62. दुष्यन्त-शकुन्तला

दुष्यन्त-रैभ्य के पुत्र तथा पाण्डवों की कुल परम्परा के चक्रवर्ती राजा थे। ये शिकार खेलते हुए कण्व ऋषि के आश्रम में पहुंचे। कण्व की अनुपस्थिति में विश्वामित्र और मेनका के संयोग से उत्पन्न हुई शकुन्तला से इनकी भेंट हुई। इन्होंने इसके साथ गन्धर्व विवाह कर लिया। पहले इन्होंने शकुन्तला को पुत्र सहित स्वीकार नहीं किया। बाद में आकाश

1. महाभारत—आदि-71-74.
2. विष्णु—4।19।12-13.
3. भागवत—1।12।20, 9।20.
4. वायु—99।133-139.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाणी होने पर अपनी पत्नी को ग्रहण कर लिया।

63. देवशर्मा की तपस्या

ये रथीतर के चार शिष्यों में से एक शिष्य थे। इन्होंने तपस्या करके मुक्ति प्राप्त की थी।

1. वायु-पुराण—1।60।66.
2. पद्म-पुराण-पाताल खण्ड—89-91.

64. देवासुर-संग्राम

समुद्र-मंथन के बाद जब असुरों को अमृत न मिला तो देव और असुरों में युद्ध प्रारम्भ हो गया। इन्द्र की सहायता करने के लिए विष्णु स्वयं आये और कालनेमि, माल्यवान, माली, सुमाली आदि असुरों का वध किया। बाद में नारद ने इस युद्ध को रोका।

1. वायु—92।76-99.
2. भागवत—8।10, 11।1-45.

65. द्रोणाचार्य-आख्यान

(1) द्रोणाचार्य का जन्म

एक समय ऋषि भरद्वाज धृताची नामक अप्सरा को देखकर कामासक्त हो गये, जिससे उनका रेतः पात हो गया। ऋषि ने वीर्य को द्रोण नामक यज्ञ पात्र में रख दिया। उसी से द्रोणाचार्य का जन्म हुआ। इसी से वह द्रोण कहलाये। महाभारत में एक अन्य स्थान पर उल्लेख है कि महर्षि भरद्वाज का वीर्य किसी द्रोणी (पर्वत की गुफा) में स्खलित होकर धीरे-धीरे पुष्ट होने लगा। उसी से द्रोण का जन्म हुआ।

1. महाभारत-आदि पर्व—67-69 (आदि पर्व-62।106)
2. भागवत—1।7।27, 9।21।36.

66. द्रौपदी-आख्यान

(1) यज्ञ की वेदी से द्रौपदी का जन्म

द्रुपद ने संतान की कामना से पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया। उस यज्ञ की अग्नि से धृष्टद्युम्न तथा द्रौपदी प्रकट हुये।

महाभारत-आदि पर्व—67।157, 166.

(2) द्रौपदी को पांच पति प्राप्ति का वर

द्रौपदी अपने पूर्वजन्म में ऋषि कन्या थी। उसने अच्छे पति की प्राप्ति के लिए शंकर की

1. महाभारत-आदि पर्व-अ०—196।45-51.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आराधना की, जिससे शंकर ने प्रसन्न होकर उसे पांच पति प्राप्त होने का वर दिया।

ब्रह्मवैवर्त पुराण अनुसार वियोगिनी सीता ने शंकर को प्रसन्न कर पांच बार पति समागम माँगा। शंकर ने अगले जन्म में पाँच पति प्राप्त होने का वर दे डाला।

2. ब्रह्म वैवर्त— अ० 116. (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड)

(3) द्रौपदी-स्वयंवर

राजा द्रुपद की प्रतिज्ञा थी कि जो भी स्वयंवर में मत्स्यभेदन करेगा वही द्रौपदी का पति होगा। अर्जुन ने स्वयंवर में मत्स्य भेद कर द्रौपदी को पत्नी रूप में प्राप्त किया। कुन्ती की आज्ञानुसार यह पांच पाण्डवों की पत्नी बनी। इस अवसर पर मत्स्यभेदन के लिए कर्ण भी तैयार हुआ था, लेकिन द्रौपदी ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि मैं कुलहीन से विवाह नहीं करूंगी।

1. महाभारत—आदि पर्व अ०-186.
2. भागवत—1।15।7.

(4) द्रौपदी का विराट की दासी बनना

पाण्डव अज्ञात वास के समय राजा विराट के राज्य में अपना-अपना रूप बदल कर रहे थे। द्रौपदी भी एक दासी बनकर रही और उसे कीचक द्वारा किये गये अपमान को भी सहन करना पड़ा।

1. महाभारत-विराट पर्व—अ०9

67. धन्वन्तरि-अवतार

धन्वन्तरि समुद्र-मंथन के समय चौदह रत्नों के साथ समुद्र से हाथ में कलश लेकर निकले। इन्हें विष्णु का तेरहवां अवतार माना जाता है। ये आयुर्वेद के प्रवर्तक तथा आदि वैद्य स्वीकार किये जाते हैं।

1. विष्णु—1।9।98, 2।7।21, 4।8।8-11
2. भागवत—8।8।33-37.

68. ध्रुव आख्यान

यह राजा उत्तानपाद का पुत्र था। उत्तानपाद के दो पत्नियाँ थीं। सुरुचि और सुनीति। एक समय ध्रुव अपने पिता की गोद में जाकर बैठ गया। तब इसकी विमाता ने उपेक्षा कर इसे गोद में से

1. विष्णु—1।11-12,
2. भागवत-2।7।8 4।8-9.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतार दिया। इससे अपमानित हो पाँच वर्ष की अवस्था में इसने नारद का आशीर्वाद प्राप्त कर तप किया तथा विष्णु को प्रसन्न कर समस्त लोकों, ग्रहों और नक्षत्रों के ऊपर अचल रहने का वरदान प्राप्त किया। भगवान ने ध्रुव को अग्नि, कश्यप और शुक्र आदि नक्षत्र एवं सप्तर्षि गण जिसकी प्रदिक्षणा करते हैं वह ध्रुवलोक प्रदान किया।

69. नग्नजित-आख्यान

कौशल नरेश नग्नजित ने प्रण किया था कि जो भी व्यक्ति उसके सात बैलों को जीत लेगा वह उसी व्यक्ति के साथ अपनी पुत्री नाग्नजीति का विवाह कर देंगे। श्री कृष्ण ने उन बैलों को नाथकर नाग्नजीति से विवाह किया।

भागवत—3।3।4.
10।58।45

70. नर-नारायण अवतार

ये भगवान का चौथा अवतार माना जाता है। विष्णु ने इस अवतार में धर्म की मुक्ति नाम वाली स्त्री से नर-नारायण ऋषि होकर बुद्धि शान्त करने वाला कठिन तप किया।

भागवत—1।3।9.
2।7।6.
11।4।16.

71. नल-दमयन्ती आख्यान

नल निषध देश के राजा थे। इनका विवाह विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री से हुआ था। कलि के प्रभाव से पुष्कर ने इन्हें जुए में हराकर इनका सब कुछ ले लिया और कंगाल बना दिया। ये पत्नी को लेकर के जंगल में चले गये। वहाँ पत्नी को सोता हुआ छोड़कर अन्यत्र चले गये।

महाभारत--वन पर्व-नलोपाख्यान

72. नहुष का सर्प होना

वृत्रासुर का वध करने के कारण इन्द्र को ब्रह्महत्या का पाप लग गया था, जिससे इन्द्र को अपने पद से हटना पड़ा। वृहस्पति ने नहुष को इन्द्र के पद पर बैठा दिया। इन्द्र पद प्राप्ति के गर्व से चूर होकर इन्द्राणी शची को पत्नी बनाने के उद्देश्य

1. भागवत—6।13।16.
2. देवी भागवत—6।8-9.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से इन्द्राणी की इच्छानुसार सप्त ऋषियों की पालकी में उसके पास चले गये। लेकिन अगस्त्य ऋषि के शाप से सर्प हो गये।

73. नारद-जन्म

नारद अपने पूर्वजन्म में वेदपाठी ब्राह्मणों की एक दासी के पुत्र थे। ब्राह्मणों की सेवा करते-करते उनका हृदय शुद्ध हो गया और उनके अनुग्रह से नारद के मन में भक्ति का प्रादुर्भाव हो गया।

भागवत—1।5

74 नारद का नलकूबर और मणिग्रीव को शाप

नलकूबर और मणिग्रीव कुबेर के पुत्र थे। एक समय ये दोनों मद्यपान कर स्त्रियों के साथ क्रीड़ा कर रहे थे। अतः नारद। देवल ने इन्हें वृक्ष होने का शाप दे दिया, जिससे ये वृंदावन में यमलार्जुन नामक वृक्ष हुये और श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया।

1. भागवत—10।9।22-23, अ०—10
2. ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म-खण्ड-अ०—14.

75. नारद-मोह

नारद एक देवर्षि माने जाते हैं तथा ब्रह्मा के मानस पुत्र कहे जाते हैं। ये शीलनिधि राजा की पुत्री श्रीमती (देवी भागवत के अनुसार दमयन्ती) को देखकर मोहित हो गये एवं उससे विवाह करना चाहा। इसलिए भगवान विष्णु से रूप माँगने गये। भगवान ने इनका वानर का मुँह बना दिया, जिससे उपहास के पात्र बने।

1. शिव-रुद्र संहिता—अ०-3-4.
2. भविष्य-उत्तरार्द्ध—अ०-3.
3. लिंग-उत्तरार्द्ध—अ० 5.
4. देवी भागवत—6।26-27.

76. राजा निमि को शाप

राजा निमि एक दिन स्त्रियों के साथ द्यूत क्रीड़ा में रत थे। उसी समय वहाँ वशिष्ठ पहुँचे। राजा ने स्त्रियों के मध्य में वशिष्ठ का यथायोग्य सत्कार नहीं किया, अतः वशिष्ठ ने इन्हें विदेह होने का शाप दे दिया।

मत्स्य 61।32.

77. निषाद-जन्म

राजा वेन के कोई पुत्र नहीं था। ऋषियों

1. विष्णु—1।13।33-37.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने वेन की जाँघ का मंथन किया, जिससे नाटा तथा काला व्यक्ति पैदा हुआ। यह निषाद कहलाया और निषाद जाति का आदि पुरुष हुआ।

2. भागवत—4।14।43-46.

78. नृग-आख्यान

नृग एक अत्यन्त दानी राजा थे। इन्होंने एक बार भूल से दान की गई गाय को पुनः एक ब्राह्मण के लिए दान में दे दिया, जिससे इन्हें गिरगिट होने का शाप मिला। ये शाप के अनुसार गिरगिट हो गये और एक हजार वर्ष तक कुये में पड़े रहे। बाद में श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया।

भागवत—10।64.

79. नृसिंह-अवतार

हिरण्यकशिपु का वध करने के लिए विष्णु ने यह अवतार धारण किया था। इनका मुंह शेर का था तथा शेष शरीर मनुष्य का। इसीलिए इन्हें नृसिंह कहा गया। इन्होंने हिरण्यकशिपु का वध नखों की सहायता से करके प्रह्लाद की रक्षा की थी।

1. ब्रह्म—अ० 213.
2. विष्णु—1।16-20.
3. भागवत-1।3।18.
   2।7।74.
   7।7-8-
4. अग्नि—अ० 4.
5. हरिवंश--भविष्य-पर्व-अ०-41

80. परशुराम-आख्यान

(1) परशुराम-अवतार

परशुराम जमदग्नि और रेणुका के पुत्र थे। ये नारायण के उग्रप्रभावपूर्ण अंशावतार माने जाते हैं। इन्होंने कार्त्तवीर्य के सहस्रबाहु भाले से काट दिये थे और संपूर्ण क्षत्रियों के नाश की प्रतिज्ञा की थी। ये समस्त क्षत्रियों का नाश करने के बाद वन में तप करने के लिए चले गये थे। इन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया और सारी पृथ्वी कश्यप को दान कर दी।

1. ब्रह्म—213.
2. विष्णु—4।7।36.
3. भागवत—1।3।20, 2।7।22, 9।15, 10।40।20.

(2) परशुराम द्वारा अपनी माता का वध करना

परशुराम ने अपने पिता की आज्ञा से अपनी माता का सिर काट दिया। पिता के प्रसन्न होने

1. महाभारत—धनपर्व-अ० 116।1-18.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर इन्होंने अपनी माता को पुनः जीवित करने के लिए कहा। इनके पिता ने इनकी माता को पुनः जीवित कर दिया तथा युद्ध में अजेय होने का आशीर्वाद दिया

2. भागवत—9।16।1-8.

(3) परशुराम का कर्ण को शाप

कर्ण ब्राह्मण-पुत्र बनकर परशुराम के आश्रम में धनुर्विद्या प्राप्त करने गया। एक दिन परशुराम कर्ण की जाँघ पर सिर रखकर सो रहे थे। कर्ण को अलर्क नामक कीड़े ने काट लिया, जिससे वह खून में लथपथ हो गया। कर्ण की सहनशीलता को देखकर परशुराम को संदेह हो गया कि यह ब्राह्मण पुत्र नहीं। इसलिए उन्होंने कर्ण को शाप दे दिया कि तुम्हारी प्राप्त विद्या असफल हो जाय। परिणामस्वरूप परशुराम से ग्रहण की विद्या कर्ण के काम न आई और वह अर्जुन के हाथों से मारा गया।

महाभारत—शान्ति पर्व-अ० 3.

81. पराशर-सत्यवती आख्यान

सत्यवती राज नामक धीवर की कन्या थी, जिसे मत्स्यगंधा भी कहते थे। इसके शरीर से मछली की गंध आती थी। इस पर पराशर मुनि आसक्त हो गये तथा कुमारी अवस्था में ही इसका रमण किया, जिससे व्यास पैदा हुये। पराशर की कृपा से इसके शरीर की दुर्गन्ध सुगंध में बदल गई।

1. महाभारत—आदि पर्व—63।70-83.
2. देवी भागवत—2।2

82. पराशर द्वारा राक्षस यज्ञ

पराशर प्रसिद्ध ऋषि वशिष्ठ के पौत्र थे। इनके पिता को एक राक्षस ने खा लिया था। अतः इन्होंने एक राक्षस यज्ञ किया। जिसमें अनेक राक्षस भस्म हो गये। अन्त में वशिष्ठ के कहने पर पराशर ने यह यज्ञ रोका।

विष्णु—1।1।11-20.

83. परीक्षित पर अश्वत्थामा का शस्त्र प्रयोग

अपने पिता की मृत्यु से दुःखी अश्वत्थामा ने प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर उत्तरा के गर्भ पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार कर दिया, जिससे परीक्षित की

1. विष्णु-पुराण—4।20।52.
2. भागवत—1।8।12-16.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भ में ही मृत्यु हो गई। कृष्ण ने इसे पुनः जीवित किया।

84. परीक्षित को तक्षक द्वारा डसा जाना

राजा परीक्षित एक दिन शिकार को गये। इन्होंने कलियुग के प्रभाव से शमीक ऋषि के गले में मरा हुआ सर्प डाल दिया। जिससे मुनिपुत्र शृंगी ऋषि ने इन्हें शाप दे दिया कि इनकी मृत्यु सर्प के काटने से होगी। शापवश इनको तक्षक ने डस लिया और परीक्षित का शरीर वहीं भस्मशात हो गया।

1. भागवत—1।17-19.
2. देवीभागवत-स्कन्ध—2.

85. पाण्डवों का विराट राज्य में रहना

पाण्डव अपने वनवास के अज्ञात वास में विराट के यहाँ अपना रूप बदल कर रहे थे। युधिष्ठिर ने कंक का, भीम ने वल्लभ का, अर्जुन ने ब्रहन्नला, नकुल ने ग्रंथिक, सहदेव ने अरिष्टनेमी और द्रौपदी ने सैरन्धी का रूप धारण किया था।

महाभारत-विराट पर्व-1-12.

86. प्रियव्रत-आख्यान

प्रियव्रत स्वायंभुव मनु के एक पुत्र पुत्र थे। इन्हें एक प्रसिद्ध वंश का आदि पुरुष माना जाता है। इन्होंने घोर तपस्या कर स्वर्ग प्राप्त किया था। रात्रि को दिन कर देने के उद्देश्य से इन्होंने दूसरे सूर्य के समान सूर्य के पीछे पीछे चक्कर लगाया। इनके रथ के पहियों से बने गढ्ढ़ों से सात समुद्र बन गये एवं ऊंचे स्थान सात महादेश बन गये हैं। इनके दस पुत्र थे। तीन ने संन्यास ले लिया था। सात को इन्होंने एक-एक महादेश दे दिया।

भागवत—3।12।55, 3।21।2, 4।1।9, 5।1.

87. पृथु-आख्यान

राजा वेन के हाथों को मथकर ब्राह्मणों ने पृथु को उत्पन्न किया। पृथु ने सर्वप्रथम पृथ्वी को समतल बनाया तथा कृषि आदि का आविष्कार किया। इनकी राज्य व्यवस्था सर्वोत्तम थी।

भागवत—4।15-20.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

88. पुरंजन-आख्यान

राजा पुरंजन एक बड़ा यशस्वी राजा था। भोगों की लालसा में वह अनेक नगरों को देखता फिरा। अंत में एक दिन उसने हिमालय के दक्षिण तट-वर्ती शिखरों पर भरत-खण्ड में एक नगर देखा। उस नगर के बाहर उसकी एक सुन्दरी से भेंट हुई। पुरंजन उसे पत्नी रूप में स्वीकार करके उस नौ द्वारों वाली पुरंजन पुरी में सौ वर्ष तक आनन्द पूर्वक रहा। उसके भोगों की कामना में रत रहने के कारण उसका कल्याण करने वाले कर्मों की ओर कोई ध्यान नहीं रह गया और वृद्धावस्था को प्राप्त हो गया। ऐसे समय में मय नामक यवनराज केवल एक बूढ़े सांप से सुरक्षित सुख सामग्री से सम्पन्न पुरंजन पुरी में घुसकर उसका विध्वंस करने लगा और पहले से ही वहाँ भेजी गई। काल कन्या के सम्पर्क से पुरंजन का सभी विवेक नष्ट हो गया। उसकी विषयों में आसक्ति होने के कारण वह दीन हो गया। भोगों की लालसा में वह दीन अपनी पारलौकिक गति और बंधुजनों के स्नेह से वंचित रहकर उसका चित्त केवल स्त्री और पुत्र के लालन-पालन में ही लगा रहा और अन्त में उसे पुरंजनपुरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा, परन्तु उसी समय उसे यवनराजन मय ने उसे पकड़ लिया। स्त्री की आसक्ति में उसकी यह दुर्गति हुई। अन्त समय में भी पुरंजन को उसका चिन्तन बना हुआ था। इसलिए दूसरे जन्म में वह नृपश्रेष्ठ विदर्भराज के यहाँ सुन्दर कन्या उत्पन्न हुआ।

भागवत-पुराण

89. पुरुरवा-उर्वशी आख्यान

पुरुरवा चन्द्रवंश का पूर्वज था। एक बार शापवश उर्वशी पृथ्वी पर आई थी। जिस पर पुरुरवा मोहित हो गया और उर्वशी भी नारद के मुंह से पुरुरवा के सौंदर्य का वर्णन सुन विवाह के लिए तैयार हो गई।। तीन शर्तों के साथ दोनों का विवाह हो गया। कुछ समय बाद उर्वशी एक शर्त टूट जाने पर स्वर्ग वापिस चली गई। मत्स्य-पुराण के अनुसार

1. विष्णु—4।1।9-12
2. भाववत—9।14, 11।26।4-5.
3. भत्स्य – 24।33.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुरवा के प्रेम में आसक्त होने के कारण उर्वशी भरत 'विरचित' लक्ष्मी स्वयंवर नाटक के नियमों का पालन नहीं कर सकी थी, इसलिए उसे पृथ्वी पर आना पड़ा।

90. पुलिन्द-आख्यान

पुलिन्दगण विंध्याचल के वनों में रहकर राजा का धन लूटते थे। एक बार इनको राजकीय सैनिकों से युद्ध करना पड़ा। उस समय इनकी कंस ने सहायता की, जिससे ये कंस के सेवक हो गये। उनकी पत्नियां श्रीराम के वरदान से उत्कृष्ट कन्याओं के रूप में प्रगट हुई। इन कन्याओं ने श्री कृष्ण के रास में भाग लिया तथा कृष्ण की कृपा से उनको परमपद् प्राप्त हुआ।

गर्ग संहिता-माधुर्य-खण्ड-अ० 10.

91. पुण्डरीक-आख्यान

पुण्डरीक ब्राह्मण किसी पुण्य तीर्थ में जप किया करता था। वह मुनि नारद से श्रेय मार्ग का उपदेश ग्रहण कर नारायण के भजन में सदा तत्पर रहने लगा। दीर्घकाल के पश्चात भगवान विष्णु ने उसे दर्शन दिये तथा अपने धाम को ले गये।

1, महाभारत-अनुशासन पर्व—अ० 24.
2. पद्म पुराण-उत्तरकाण्ड-अ० 89.

92. बलराम आख्यान

(1) बलराम-अवतार

यह श्रीकृष्ण के भाई थे, जिनका जन्म रोहिणी के उदर से हुआ था। ये विष्णु के अंशावतार माने जाते हैं।

विष्णु—4।15।19.

(2) बलराम का रेवती से विवाह

रेवती शर्याति कुल के रेवत नामक राजा की पुत्री थी। यह लम्बाई में अधिक ऊंची थी। अतः इससे कोई विवाह नहीं करता था। इसका विवाह द्वापर में बलराम से आकर हुआ। इसकी अवस्था सतयुग में सताईस युगों की हो गई थी।

1. विष्णु—4।15।19.
2, पद्म-भूमि-खण्ड—4।1।65-96.
3. ब्रह्मवैवर्त (श्रीकृष्ण जन्म खण्ड) अ० 106.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) बलराम द्वारा धेनुक-वध

धेनुक एक दुष्ट दैत्य था तथा गधे के रूप में ताल वन में रहता था। श्री कृष्ण और बलराम गोप ग्वालों के साथ एक बार वहाँ गये। इन्हें देखकर इसने इन पर आक्रमण कर दिया। तब बलराम ने उसके पिछले पैर पकड़कर ताड़ के वृक्ष से दे मारा, जिससे उसकी मृत्यु हो गई।	1. ब्रह्म--86. 2. विष्णु—5।8।11. 3. भागवत—10।15. 4. ब्रह्म वैवर्त (श्रीकृष्ण-जन्म खण्ड) अ० 22. 5. हरिवंश-पुराण-विष्णु पर्व-14.

(4) बलराम द्वारा प्रलम्बासुर वध

एक समय श्रीकृष्ण और बलराम सब ग्वाल बालों के साथ खेल रहे थे। प्रलम्ब भी आकर इनके मध्य में खेलने लगा और बलराम को कंधे पर बिठाकर भाग निकला। बाद में बलराम को इसने अपना असली रूप दिखाया तथा बलराम के द्वारा मारा गया।	1. विष्णु—5।19. 2. भागवत—10।18. 3. ब्रह्म वैवर्त श्रीकृष्ण जन्म, अ० 16. 4. हरिवंश-विष्णु—15.

93. ब्रह्मा-आख्यान

(1) ब्रह्मा-उत्पत्ति

विष्णु भगवान ने पहले लोकों को रचने की इच्छा से महत्व और अहंकारादिकों से उत्पन्न सोलह कला पुरुष रूप ग्रहण किया। इसके पश्चात योग-निन्द्रा में पड़ कर सोते हुए उनकी नाभि से कमल निकला, जिस पर प्रजापति ब्रह्मा उत्पन्न हुए।	भागवत—1।3।1-2, 3।8।13-16. 9।1।8-10.

(2) ब्रह्मा का अपनी पुत्री से व्यभिचार

ब्रह्मा की पुत्री सरस्वती अत्यन्त सुन्दर एवं सुकुमार थी। वे उसके रूप सौन्दर्य को देखकर काम मोहित हो गये। तब उनके पुत्र मरीचि आदि ने उन्हें समझाया तथा इस दुष्तर आचरण से रोका।	1. भागवत—3।11।29-30। 2. ब्रह्म वैवर्त-अ० 35।42-58. 3. मत्स्य—3।30-42.

(3) ब्रह्मा-सावित्री

सावित्री पृश्नी नामक पत्नी से उत्पन्न सूर्य की पुत्री थी, जो ब्रह्मा की पत्नी बनी थी।	स्कन्द-पुराण—7।1।165.

93. बुद्ध अवतार

बुद्ध कलियुग के आरम्भ में मायादेवी के	1. भागवत—1।3।24,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भ से उत्पन्न विष्णु के बीसवें अवतार माने जाते हैं। मत्स्य-पुराण अनुसार यह विष्णु का नवां अवतार था। भागवत पुराण में ये देवताओं के द्वेषी और दैत्यों में लोभ और मोह उत्पन्न करने वाले और असुरों को वेद विरुद्ध करने वाले बताये गये हैं।

2।7।37, 11।4।22.
2. अग्नि-अ० 16.
3. मत्स्य—47।247. 285।7.

95 वृद्धक्षत्र-वध

वृद्धक्षत्र सिंधु देश के राजा जयद्रथ के पिता थे। इन्होंने जयद्रथ को वर दिया था कि जो इसे मारेगा उसके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे। कृष्ण की योग माया से जयद्रथ का सिर अर्जुन ने इनकी गोद में डाल दिया, जिससे इनकी ही मृत्यु हो गई।

महाभारत-द्रोण पर्व—146।129-130.

96. भरत आख्यान

भरत दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र थे। ये बड़े प्रतापी, वीर, तेजस्वी राजा थे। इनके शासन काल में पृथ्वी और आकाश प्रजा की सभी कामनायें पूर्ण करते थे। इन्होंने गंगा जी के तट पर पचपन अश्वमेध यज्ञ किये गये थे। इनके शासन के ही कारण इस देश का नाम भारत हुआ।

1. विष्णु—4।19।10-12.
2. भागवत—9।20।17-35.

97. भरत आख्यान (दशरथ पुत्र)

यह दशरथ की दूसरी रानी कैकेयी के पुत्र थे। कैकेयी ने इन्हें राज्य दिलवाने के लिए राम को वनवास दिलाया, परन्तु इन्होंने राम के प्रेम के कारण राज्य स्वीकार नहीं किया और राम को लौटाने के लिए चित्रकूट गये। राम के अयोध्या वापिस न आने पर यह अयोध्या के निकट नंदी ग्राम में तपस्वियों के समान रहे। राम के लौटने तक वहीं पर अपना समय व्यतीत किया।

1. बाल्मीकि रामायण-अयोध्या काण्ड, सर्ग—115.
2. भागवत—9।10।34-40, 43.

98. भस्मासुर द्वारा पार्वती का अपमान/विष्णु द्वारा शिव की सहायता

वृकासुर दैत्य ने शिव की तपस्या करके यह वरदान प्राप्त कर लिया कि वह जिसके सिर पर हाथ रख दे वही भस्म हो जाय। यह पार्वती पर

1. ब्रह्मवैवर्त—(श्रीकृष्ण जन्म खण्ड) अ० 36।25-40.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसक्त हो गया और पार्वती की प्राप्ति के उद्देश्य से शिव के ऊपर ही हाथ रखकर उन्हें भस्म करना चाहा। श्रीकृष्ण ने चालाकी से इसका हाथ इसी के सिर पर रखवा दिया, जिससे यह स्वयं ही भस्म हो गया।

99. भीम आख्यान

(1) भीम द्वारा हिडिम्ब वध

हिडिम्ब हिडिम्बा का भाई था। पाण्डवों के वनवास के समय इसने हिडिम्बा को उनके मारने के लिये भेजा था। परन्तु हिडिम्बा भीम पर आसक्त हो गई तथा भीम से विवाह करना चाहा। इतने में वहाँ हिडिम्ब आ गया, जिसका भीम से युद्ध हुआ। भीम ने हिडिम्ब को मारकर हिडिम्बा से विवाह कर लिया।

महाभारत-आदि पर्व—अ० 151-153.

(2) भीम द्वारा कीचक-वध

यह राजा विराट का साला था तथा विराट-सेना का नायक था। जब पाण्डव अपने अज्ञातवास के समय विराट नगरी में रह रहे थे तब इसने द्रौपदी पर मोहित होकर उससे बलात्कार करना चाहा था, जिससे भीम ने छिपकर इसका वध कर दिया।

महाभारत-विराट पर्व—अ० 14-22.

100. भीष्म-आख्यान

(1) भीष्म का ब्रह्मचारी रहना

गंगा के शान्तनु के पास से चले जाने पर कुछ दिनों के बाद वे एक धीवर कन्या पर आसक्त हो गये। उनके विवाह का प्रस्ताव भेजने पर धीवर अपनी कन्या का इस शर्त पर विवाह करने को तैयार हुआ कि मत्स्यगंधा का ही पुत्र राज्य का अधिकारी बनाया जाय। इस विवाह के लिए भीष्म ने आजन्म ब्रह्मचारी रहने और राज्य न लेने की प्रतिज्ञा की थी तथा आजन्म ब्रह्मचारी रहे।

महाभारत-आदि पर्व अ० 100।95-97.

(2) भीष्म द्वारा अम्बा हरण/भीष्म परशुराम युद्ध

भीष्म काशी नरेश की तीन पुत्रियों का

1. महाभारत-उद्योग पर्व—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचित्रवीर्य के लिए हरण करके हस्तिनापुर ले आये थे। अम्बा शाल्व को मन में वरण कर चुकी थी, अतः उसके आग्रह पर भीष्म ने उसे शाल्व के पास भेज दिया। लेकिन शाल्व ने उसे अस्वीकार कर दिया भीष्म ने भी उसे स्वीकार नहीं किया। भीष्म से प्रतिशोध लेने के लिए वह परशुराम के पास गई। भीष्म परशुराम में घोर युद्ध हुआ और वे दोनों तुल्य विजयी रहे।

अम्बा उपाख्यान.
2. भागवत—9।22।21-25. 10।60।47.

(3) भीष्म द्वारा कृष्ण की प्रतिज्ञा भंग करना

महाभारत के युद्ध के समय कृष्ण ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वे युद्ध में शस्त्र धारण नहीं करेंगे, लेकिन भीष्म ने इतना भयंकर युद्ध किया कि कृष्ण क्रोधित होकर भीष्म के ऊपर चक्र सुदर्शन लेकर दौड़ पड़े।

1. महाभारत-भीष्म-अ० 106.
2. भागवत—1।9।37-38.

(4) भीष्म पराजय (भीष्म-वध)

भीष्म ने महाभारत के युद्ध में दस दिन तक भयंकर युद्ध किया। काशीराज की कन्या अम्बा जो दूसरे जन्म में शिखण्डी बनी थी। उसके सामने आने पर हथियार न उठाने के प्रण की पूर्ति के लिए भीष्म ने शस्त्र नहीं उठाये तथा शिखण्डी और अर्जुन के वाणों से घायल होकर शरशय्या पर लेट गये।

1. महाभारत-भीष्म पर्व—108-117.
2. भागवत—1।9।1, 10।78.

101. भृगु द्वारा विष्ण के पद प्रहार करना

एक समय सरस्वती नदी के तट पर समस्त ऋषि मुनि एकत्र हुये। उन लोगों में वाद-विवाद चल पड़ा कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश में 'कौन बड़ा है। तीनों की परीक्षा का कार्य भृगु ऋषि को सौंपा गया। भृगु विष्णु के निवास स्थान पर बैकुण्ठ में गये। विष्णु लक्ष्मी जी की गोद में सिर रखकर सो रहे थे। भृगु ने उनके वक्षस्थल पर जाकर लात मारी। विष्णु ने उठकर भृगु से क्षमा माँगी और भृगु के चरण चिह्न को अपने वक्षस्थल पर धारण किया।

भागवत—10।89।1-19.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

102. मत्स्यावतार

मत्स्यावतार का उल्लेख पुराणों में विविध रूपों में मिलता है। विष्णु-पुराण में मत्स्यावतार का संबंध प्रजापति से स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त पुराणों में इसे विष्णु के प्रमुख दस अवतारों में से सत्ययुग में हुआ प्रथम अवतार माना जाता है, परन्तु अवतार के हेतु में विविधता मिलती है। कहीं वैवस्वत मनु की रक्षा के लिए, कहीं प्रलय में सत्यव्रत मनु की रक्षा तथा वेद की रक्षा के लिए कहीं मनु की रक्षा तथा दिति पुत्र-वध के लिए और कहीं हयग्रीव को मारकर वेद के उद्धार के लिए विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया आदि उल्लेख मिलते हैं।

1. विष्णु—1।4।7-8.
2. भागवत—1।3।15. 2।7।12-13, 8।24 11।4।18.

103. मधु-कैटभ वध

मधु और कैटभ दोनों विष्णु के कान के मैल से उत्पन्न हुये थे। इन्होंने सारे संसार को अपने कुकृत्यों से त्रस्त कर दिया। तब विष्णु ने इनका वध करने के लिए युद्ध किया। इन दोनों से विष्णु का हजारों वर्षों तक युद्ध चलता रहा। अन्त में महादेवी की अनुकम्पा से विष्णु ने इनका वध कर दिया।

1. पद्म—अ० 54.
2. वायु—25।29-80.
3. मार्कण्डेय—अ० 81.
4. मत्स्य—170.
5. देवीभागवत—1।9.

104. मनु-आख्यान

मनु ब्रह्मा के प्रथम पुत्र और पृथ्वी के प्रथम सम्राट थे। इनकी राजधानी बर्हिष्मती थी। शतरूपा इनकी पत्नी, प्रियव्रत और उत्तान पाद पुत्र एवं देवहूति, आकूति और प्रसूति पुत्रियाँ थीं। ये प्रियव्रत को राज्य देकर तप करने वन में चले गये थे।

1. ब्रह्म—अ० 2.
2. विष्णु—1।7।16-19.
3. भागवत—8।1।1-5.

105. मरुत का अपने गुरु को त्यागना

मरुत चन्द्रवंशी राजा अविक्षित का पुत्र था। बृहस्पति इसके पुरोहित थे। इसका इन्द्र से विरोध रहता था, अत: इन्द्र ने बृहस्पति को इस बात पर राजी कर लिया कि वे मरुत का यज्ञ कार्य न करें। कुछ समय के बाद मरुत ने यज्ञ करना चाहा। उस समय बृहस्पति ने यज्ञ कार्य कराने से

1. महाभारत-वन पर्व-
2. विष्णु—4।1।31-33.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मना कर दिया। इसने नारद के कहने के अनुसार संवर्त्त को अपना गुरु बना लिया और वृहस्पति को त्याग दिया।

106. महाभारत-युद्ध/कुरुक्षेत्र युद्ध

महाभारत युद्ध कौरव और पाण्डवों के मध्य में लड़ा गया था, जिसमें अठारह अक्षोहिणी सेना अठारह दिनों में समाप्त हो गई थी। पाण्डवों की ओर से भीम और अर्जुन मुख्य योद्धा थे तथा कौरवों की ओर से भीष्म और कर्ण आदि।

1. महाभारत—
2. विष्णु—5।37।2.
3. भागवत—1।9।35.

107. महिषासुर मुकुन्द युद्ध

देवासुर-संग्राम के समय अन्य अपने साथी दैत्यों के मारे जाने पर महिषासुर युद्ध के लिए तैयार हुआ। उसने आकर विष्णु के ऊपर आक्रमण किया तथा शक्ति से गरुड़ पर भी वार किया, पर विष्णु ने इसके अस्त्रों को निरर्थक करते हुए घायल कर दिया एवं युद्ध क्षेत्र से भाग जाने के लिए कहा, क्योंकि इसे ब्रह्मा ने वर दिया था कि तुम पुरुष के हाथों से नहीं मारे जा सकोगे।

मत्स्य—152।17-24.

108. महिषासुर वध

महिषासुर के अत्याचारों से परेशान होकर समस्त देवता ब्रह्मा के पास गये। क्योंकि उसे कोई भी पुरुष नहीं मार सकता था, अतः विष्णु के आदेश से सभी देवताओं ने अपना-अपना तेज निकालकर एक देवी को पैदा किया, जिसने महिषासुर का वध किया।

1. मार्कण्डेय—अ० 82-83.
2. देवीभागवत—5।18.

109. मांधाता-आख्यान

यह सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र और अयोध्या के अधिपति थे। यह अत्यन्त लोकप्रिय शासक, विजेता, यज्वा और सच्चरित्र थे। इनके जन्म के अवसर पर इन्द्र ने 'माम् धात्' कहते हुये इन्हें अपनी अंगुली पिलाई थी। इसी से इनका नाम मान्धाता हुआ।

1. विष्णु—4।2.
2. भागवत—9।6।30-31.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110. मार्कण्डेय-आख्यान

मार्कण्डेय आठ सिद्धों में से एक हैं, जोकि प्रलय काल में भी नष्ट नहीं होते। इन्होंने शिव की स्तुति कर मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी। इनको भगवान ने प्रलयकाल में वट वृक्ष के पत्ते पर सोये हुये दर्शन दिये थे।

1. महाभारत—वन-188-189.
2. ब्रह्म—52-53.
3. भागवत—12।8-10.

111. मुद्‌गल की अतिथि सेवा

मुद्‌गल कुरुक्षेत्र में शिलोच्छवृत्ति से जीवन निर्वाह करते थे। दुर्वासा ने एक बार इनके सत्य की परीक्षा ली। यह अपने सत्य पर अन्त तक डटे रहे, अतः दुर्वाशा ने इन्हें स्वर्ग प्राप्ति का आशीर्वाद दिया।

महाभारत—वन पर्व-अ० 260.

112. मोहिनी-अवतार

समुद्र-मंथन के समय निकले अनृत के लिए सुर और असुरों में झगड़ा हो गया था था। अतः विष्णु ने मोहनी का रूप धारण कर असुरों को अपने सौन्दर्य से मोहित कर दिया तथा अमृत कलश लेकर देवताओं को अमृत पिला दिया।

1. विष्णु—1।9।106-109.
2. भागवत—1।3।17.

113 ययाति-आख्यान

(1) ययाति का शर्मिष्ठा से सम्बन्ध। ययाति के सुख स्थिर होना

शर्मिष्ठा दैत्यराज बृषपर्वा की पुत्री थी। जो कि देवयानी के साथ दासी बनकर आई थी। परन्तु ययाति का इससे अनुचित सम्बन्ध था। इसलिये देवयानी के पिता शुक्राचार्य के शाप से ये बूढ़े हो गये। इनके पुत्र पुरु ने इन्हें अपनी जवानी देकर बुढ़ापा ले लिया। ययाति ने युवावस्था लेकर अभीष्ट विषय भोगों का सेवन किया तथा अनेक यज्ञ करके स्वर्ग प्राप्त किया।

1. विष्णु—4।10।1-17.
2. भागवत—9।18.
3. मत्स्य—33-34.

(2) ययाति का यदु को शाप

शुक्राचार्य के शाप से ययाति असमय हो

महाभारत—आदि पर्व-अ०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये। उन्होंने अपने पुत्र यदु, तुर्वसु, द्रुह्यु और धनु से अपनी युवावस्था देकर वृद्धावस्था लेने का आग्रह किया। उनके अस्वीकार कर देने पर उन सभी को शाप दे दिया तथा राज्य से वंचित कर दिया।

(3) ययाति का स्वर्ग से गिरना

ययाति राजा नहुष के पुत्र थे और चंद्र वंश के पांचवें राजा थे। एक बार यह इन्द्र के शाप से स्वर्ग से गिर गये थे और अंतरिक्ष में निवास करने लगे। अष्टक ॠषि ने इन्हें पुनः स्वर्ग में भेज दिया।

1. महाभारत—आदि पर्व-88
2. मत्स्य—अ॰ 36-42.

114. याज्ञवल्क्य-गार्गी आख्यान

याज्ञवल्क्य राजा जनक के दरबार के एक ऋषि थे। गार्गी ने इनसे जनक की सभा में शास्त्रार्थ किया था। बाद में गार्गी इनकी पत्नी बन गई।

वृहदारण्यकोपनिषद्— 6।52.

115. युधिष्ठर का कंक बनना

युधिष्ठिर अपने अज्ञातवास में विराट नगरी में ब्राह्मण के रूप में 'कंक' बनकर रहे थे। वहां पर यह राजा विराट का मनोरंजन कराते थे।

महाभारत—विराट पर्व-अ॰8

116. रघु द्वारा सर्वत्याग

राजा रघु सुविख्यात इक्ष्वाकुवंशीय राजा थे। इन्होंने एक बार विश्वजीत यज्ञ किया। जिसमें वशिष्ठ की आज्ञानुसार अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति दान कर दी थी और वन में चले गये थे।

रघुवंश——सर्ग-4।86-88, 5।1-2.

117. रक्तवीज-आख्यान

रक्तवीज शुम्भ निशुम्भ का सेनापति था। इसके रक्त की प्रत्येक बूंद से एक नया राक्षस उत्पन्न हो जाता था। इसका वध दुर्गा ने रक्त पीकर किया।

1. स्कन्द—काशीखण्ड.
2. मार्कण्डेय—अ॰ 88.
3. देवी भागवत—5।29.

118. रंतिदेव-आख्यान

पुराणों में रंतिदेव का उल्लेख परमदानी

भागवत—9।21।1-18.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा के रूप में हुआ है। एकबार इन्होंने अपना सर्वस्व दान कर दिया। इन्हें अड़तालीस दिन तक जल भी न पीने को मिल सका। उनचासवे दिन जैसे ही कुछ भोजन करने बैठे इतने में एक ब्राह्मण, शूद्र और एक कुत्ता आ गया। रंतिदेव ने अपना सर्वस्व भोजन उन्हें दे दिया। उनके पास केवल पानी बचा। वह भी प्यासे चण्डाल को दे दिया।

119. राम-आख्यान

(1) राम-अवतार

त्रेता युग में रावण का वध करने के लिए विष्णु भगवान ने कौशल्या के गर्भ से राम के रूप में जन्म लिया था। बाल्यावस्था में भी इन्होंने अनेक राक्षसों को मारा था तथा पिता की आज्ञा-पालन के लिए वन में गये यहाँ अनेक राक्षसों का वध किया एवं अन्त में रावण को मारकर लंका का राज्य विभीषण को दे दिया।

1. ब्रह्म --213.
2. विष्णु—1।3।22, 4।4।87
3. भागवत—2।7।23-25, 9।10.

(2) राम द्वारा यज्ञ रक्षा। जनकपुरी गमन। धनुष भंग

विश्वामित्र के यज्ञ में राक्षस बाधा उत्पन्न करते थे तथा उन्हें निर्विघ्न यज्ञ नहीं करने देते थे। अतः विश्वामित्र अयोध्या में आकर यज्ञ रक्षार्थ राम-लक्ष्मण को माँगकर ले गये। राम लक्ष्मण ने विश्वमित्र के यज्ञ की रक्षा की और अनेक राक्षसों का वध किया। इसके उपरान्त वे विश्वामित्र के साथ जनकपुरी गये। वहाँ सीता से विवाह किया।

1. विष्णु—4।4।88-90
2. भागवत—9।10।5-6

(3) राम वन-गमन

राम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर कैकेयी की दासी कुब्जा (मंथरा) ने उसे भड़काया तथा दशरथ से वर माँगने के लिए कहा। कैकेयी ने दशरथ से एक वर में भरत को राज्य तथा दूसरे वर में राम को चौदह वर्ष का वनवास मांग लिया। अपने पिता की आज्ञा पालन के लिए राम-राज्य त्याग कर वल्कल वस्त्र धारण कर वन में चले गये। वन में उन्होंने अनेक राक्षसों का वध किया।

1. रामायण—अयोध्या काण्ड-सर्ग-9.
2. विष्णु—2।7।23-25, 4।4।95.
3. भागवत—9।10।8.
4. अग्नि—6।7-17.
5. देवी भागवत—3।17-19.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) राम की शवरी पर कृपा

शवरी पूर्व जन्म में एक गन्धर्व कन्या थी। शापवश यह भीलनी बन गई थी। यह भगवान की परम भक्त थी तथा पतंग ऋषि की सेवा करती थी और राम की प्रतीक्षा में रही। राम लक्ष्मण सहित उसकी कुटिया में पधारे और शवरी ने उनका उचित सत्कार किया। राम की कृपा और अपने समाधि बल से शवरी स्वर्गलोक में चली गई।

1. रामायण-अरण्यकाण्ड-सर्ग 74
2. पद्म-उत्तराखण्ड—242।266 276.

(5) जटायु-उद्धार

जटायु श्येनी से उत्पन्न गरुड़ का पुत्र था। यह दशरथ का मित्र था। सीता-हरण के समय इसने रावण से युद्ध किया। उस युद्ध में यह घायल हो गया। जब रामचन्द्र इसके पास आये तो सीता-हरण की सूचना देकर इसने प्राण त्याग दिये। राम ने स्वयं इसकी अंत्येष्टि क्रिया की और उसे कैवल्य मोक्ष प्रदान किया।

1. रामायण-अरण्यकाण्ड—-51, 68.
2. भागवत—91।10।12.
3. अग्नि—7।22.
4. देवी भागवत—3।29।14-16.

(6) विराध पर कृपा

विराध तुम्वरु नामक गन्धर्व था जो कुवेर के शाप से भयंकर राक्षस बन गया था। इसने ब्रह्मा से वर प्राप्त कर उपद्रव करना प्रारम्भ कर दिया था। राम के वन में जाने के समय यह राम लक्ष्मण से लड़ने लगा तथा राम के हाथों मारा गया और इसे शाप से मुक्ति मिली।

रामायण-अरण्यकाण्ड-सर्ग—2-4

(7) राम द्वारा बालि वध-सुग्रीव से मित्रता। वानरों पर कृपा

सीता हरण के उपरान्त राम ने ऋष्यमूक पर्वत पर जाकर सुग्रीव से मित्रता की थी और भाई वालि का वध किया था। राम ने वानरों की सहायता से लंका पर चढ़ाई भी की थी और लंका के राजा रावण का वध करके अयोध्या वापिस आये थे। इन्होंने वानर जैसी पशु जाति से मित्र भाव रखा तथा अन्त में उन्हें सुगति दी।

1. रामायण-किष्किंधाकाण्ड-16.
2. विष्णु-—4।4।96.
3. भागवत—9।10।13.
4. देवी भागवत—3।29।18.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(8) राम और लक्ष्मण पर शूर्पणखा का मोहित होना

शूर्पणखा लंकापति रावण की बहिन थी। यह वनवास के समय पंचवटी में ठहरे हुए राम के पास गई तथा कामासक्त हो राम से विवाह का प्रस्ताव किया, लेकिन राम के संकेत पर लक्ष्मण ने इसे नाक-कान विहीन कर दिया।

1. रामायण-अरण्डकाण्ड-सर्ग—17-18.
2. भागवत—9।10।4, 9.
3. ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड 9।32.

(9) खर, दूषण और त्रिशिरा वध

खर, दूषण और त्रिशिरा विश्रवा के पुत्र थे। खर विश्रवा की पत्नी पुष्पोत्कटा और दूषण व त्रिशिरा वाका से उत्पन्न हुए थे। दण्डक वन में ये रामचन्द्र के हाथों से मारे गये थे।

1. रामायण-अरण्डकाण्ड-सर्ग—16-17.
2. विष्णु—4।4।96.
3. वायु—70।49-50.
4. देवीभागवत—3।28।23-24.

(10) राम द्वारा समुद्र बंधन

राम ने लंका पर आक्रमण करने से पूर्व लंका में प्रवेश करने के लिए रास्ता देने हेतु समुद्र से प्रार्थना की, परन्तु समुद्र ने तीन दिन के अनुरोध के उपरान्त भी राम की ओर ध्यान नहीं दिया, तब राम ने लक्ष्मण से अग्निबाण देने को कहा ताकि समुद्र का पानी सोख कर राह बनाई जा सके। राम के अग्निबाण संधान करते ही ब्राह्मण का रूप धारण कर राम के सम्मुख प्रस्तुत हुआ और उन्हें नल नील द्वारा पुल बनवाने की सलाह दी। तदनुसार समुद्र पर नल व नील द्वारा राम की आज्ञा से पुल बनवाया गया।

रामायण

(11) विभीषण पर कृपा

यह रावण का छोटा भाई और केकसी के गर्भ से उत्पन्न विश्रवा का पुत्र था। यह अपने भाई से अपमानित हो राम की शरण में आया। राम ने इसके निष्काम और अनन्य प्रेम से द्रवीभूत हो इसे शरणागति दी। रावण को मारकर राम ने विभीषण को लंका का अधिपति बना दिया।

1. रामायण-युद्ध-काण्ड-सर्ग- 9.
2. भागवत—9।10।32
3. अग्नि—10

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(12) रावण-कुम्भकर्ण वध

राम ने सुग्रीव की सहायता से वानरों के द्वारा सीता का पता लगवाया। सीता का पता लगने पर उन्होंने बंदरों की सेना लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी तथा रावण और कुम्भकर्ण का वध करके अपनी पत्नी सीता को मुक्त कराया।

1. रामायण-युद्ध-काण्ड-67-111.
2. विष्णु—4।4।96-97.
3. भागवत—9।1।43-44, 9।10।12-15, 18.
4. अग्नि—10।10-14.

(13) सीता-परीक्षा

सीता काफी समय तक लंका में रहीं थी। अतः उनकी पवित्रता के सत्यापन के लिए सभी वानर समुदाय एवं लक्ष्मण आदि के समक्ष राम ने सीता के अग्नि परीक्षा ली थी।

1. रामायण-युद्ध-काण्ड-सर्ग—119.
2. विष्णु—4।4।96-97.
3. अग्नि—10।27.
4. स्कन्द-सेतु महात्म्य

(14) सीता-परित्याग

राम ने लोकापवाद के भय से सीता का त्याग कर दिया था। सीता वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में रहीं और यहाँ पर उसने लव और कुश नामक दो पुत्रों को जन्म दिया।

1. ब्रह्म—154.
2. भागवत—9।11।8-11.

(15) राम का कुश से युद्ध

राम द्वारा किये गये अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर छोड़े गये घोड़े को लव कुश ने पकड़ लिया, जिससे लव कुश का राम की सेना से युद्ध हुआ। राम की सेना लव-कुश से पराजित हुई।

1. जैमिनी अश्वमेध—28-36.
2. पद्म-पुराण-उत्तरखण्ड---60-65.

120. रावण आख्यान

(1) रावण-जन्म

रावण लंका का प्रसिद्ध राजा था। यह विश्रवा का पुत्र था, जिसका जन्म कैकसी के उदर से हुआ था। विश्रवा एक ऋषि थे। अतः रावण ऋषि पुत्र था। परन्तु रावण की गणना अपने कुकृत्यों के परिणामस्वरूप राक्षसों में होने लगी।

रामायण

(2) रावण को नलकूवर का शाप

एक समय रावण ने नलकूबर के पास जा

रामायण-उत्तरकाण्ड-सर्ग—26.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही रम्भा के साथ बलात्कार किया। रम्भा के मुख से इस वृत्तान्त को सुनकर नलकूवर ने रावण को शाप दे दिया कि वह (रावण) न चाहने पर किसी स्त्री को स्पर्श करेगा तो उसके सिर के सात टुकड़े हो जायेंगे।

(3) रावण द्वारा सीता-हरण

राम लक्ष्मण के शूर्पणखा के नाक कान काटकर विरूप कर देने पर रावण ने सीता के हरण की योजना बनाई। उसने मारीच को अद्भुत हरिण के वेश में उनकी पर्णकुटी में भेजा। हरिण का पीछा करते हुए राम के जंगल में दूर निकल जाने पर उसने सीता को हर लिया। तथा सीता को लंका में ले जाकर अशोक वन में रखा।

1. भागवत—9।10।10-11.
2. ब्रह्मवैवर्त—62.
3. देवी भागवत—3।28।26-31

121. राहु-केतु आख्यान

राहु सिंहिका का पुत्र था। जब मोहनी रूप विष्णु देवताओं को समुद्र-मंथन से निकले अमृत का पान करा रहे थे, यह आकर देवताओं की पंक्ति में बैठ गया और अमृत पी लिया। सूर्य और चन्द्रमा ने इसकी शिकायत विष्णु से कर दी। विष्णु ने चक्र से इसका सिर काट दिया। इसका मस्तक 'राहु' और 'धड़' केतु हो गया। तभी से दोनों सूर्य और चन्द्र को ग्रसित करते हैं।

1. भागवत—5'24।13,
   8।9।24-26.
2. भत्स्य —251.

122. रोहिणी का व्रज में जाना

यह वसुदेव की पत्नी थीं। कंस के अत्याचारों से बचाने के लिए इन्हें वसुदेव ने अपने मित्र नन्द के पास गोकुल भेज दिया था। जहाँ इन्होंने बलराम को जन्म दिया।

1. ब्रह्म—182।1-6.
2. विष्णु—4।15।19.
   10।2।6-8.

123. ऋषभ-अवतार

महाराज नाभि के मेरुदेवी के गर्भ से उत्पन्न भगवत्प्रतिरूप पुत्र तथा अजनाभ राज्य के राजा के रूप में इनका उल्लेख मिलता है। इन्होंने दिगम्बर

भागवत—1।3।13,
2।7।10.
5।3।20.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संन्यासी और ऊर्ध्वरेता मुनियों का धर्म प्रगट करने के लिए अवतार धारण किया था।

124. लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध

मेघनाद मंदोदरी से उत्पन्न रावण का पुत्र था। राम-रावण युद्ध में राम लक्ष्मण को उसने दो बार पराजित किया था। यह अन्त में लक्ष्मण के हाथों से मारा गया।

1. रामायण–युद्ध-काण्ड-सर्ग–91
2. भागवत – 9।10।18.
3. देवी भागवत—29।25.

125. वराह-अवतार/हिरण्याक्ष-वध

वराह-अवतार भगवान विष्णु का एक अन्य अवतार है। त्रिष्णु ने जल में मग्न पृथ्वी का उद्धार करने और हिरण्याक्ष नामक राक्षस का वध करने के लिए यह अवतार धारण किया था। विष्णु-पुराण में इस अवतार का सम्बन्ध प्रजापति से स्थापित किया गया है तथा अवतार का हेतु सृष्टि की रक्षा वताया गया है। भागवत-पुराण में इसका उल्लेख पृथ्वी-उद्धार और हिरण्याक्ष-वध के संदर्भ में है।

1. ब्रह्म—213.
2. भागवत—1।3।7
   2।7।1
   2।3।17।18
   3।13।18-33
   11।4।18.
3. अग्नि—अ० 4
4. हरिवंश—भविष्य-अ० 33.

126. वसु-आख्यान

(1) वसुओं को मुनि वशिष्ठ का शाप

एक वार 'द्यो' नामक वसु ने अपनी पत्नी के कहने पर वशिष्ठ की नंदिनी गाय चुरा ली थी, अतः वशिष्ठ ने सभी वसुओं को मनुष्य योनि में जन्म लेने का शाप दिया था।

1. महाभारत—अ० 99.
2. देवी भागवत—2।4.

(2) वसुओं द्वारा आठ वनिताओं से विवाह

वसु देवताओं का एक गण है, जिसके अन्तर्गत आठ देवता माने गये हैं। ये दक्ष प्रजापति की पुत्री तथा धर्म की पत्नी 'वसु' के गर्भ से पैदा हुये थे। इनके आठ पत्नियाँ थीं। 'अग्नि' नामक वसु के दो पत्नी होने का उल्लेख मिलता है।

भागवत—6।6।10-16.

127. वामन-अवतार

राजा वलि ने इन्द्रादि देवताओं को पराजित

1. ब्रह्म—73, 213.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर उनसे राज्य छीन लिया था। अतः बलि को छलने के लिए विष्णु ने वामन-अवतार धारण किया था। इन्होंने राजा बलि से जाकर तीन कदम भूमि मांगी थी और विराट रूप धारण कर दो ही कदमों में पृथ्वी को नाप दिया था।

2. पद्म—सृष्टि-64
3. भागवत—1।3।19.
   2।7।17-18
   8।18।23-32
4. हरिवंश—भविष्य-69.

127. वाल्मीकि-आख्यान

एक समय वाल्मीकि भरद्वाज के साथ नदी से स्नान करके आ रहे थे। मार्ग में इन्होंने मैथुनासक्त कोंच पक्षियों पर एक व्याध को शर-संधान करते देखा। उस समय दुख से इनके मन में उस पक्षी के प्रति दया उमड़ पड़ी और इन्होंने अनुष्ठप श्लोक बोलकर उसे शाप दे दिया। अध्यात्म रामायण के अनुसार वाल्मीकि शूद्रों का आचरण करते थे और चोरों के समागम से चोर हो गये थे। वह सप्तर्षियों की अनुकम्पा से वाल्मीकि बने।

1. रामायण-बालकाण्ड—अ० 2
2. अध्यात्म रामायण – अयोध्या काण्ड-6।65-86.

128. विदुर-मैत्रेय-आख्यान

वैकुण्ठ-गमन से पूर्व श्रीकृष्ण ने मैत्रेय से विदुर का गुरु होने के लिए कहा था। इन्होंने तब गंगा तट पर विदुर को सृष्टि का वर्णन कर विदुर के अनेक प्रश्नों का उत्तर दिया तथा आत्म-विद्या की शिक्षा प्रदान की।

भागवत—1।13।1, 3।7।1-2.

129. विदुर-जन्म

विदुर कृष्ण द्वैपायन के पुत्र थे, जिनका जन्म विचित्र वीर्य की रानी अम्बिका की दासी के उदर से हुआ था। यह दासी पुत्र थे, परन्तु धर्म नीति तथा राजनीति के कारण यह प्रसिद्ध हुये तथा धर्म के अवतार माने गए।

महाभारत--आदि-63।93-97.

130. विरोचन-आख्यान

विरोचन प्रह्लाद का पुत्र था। यह महान पराक्रमी और वीर योद्धा था। इसने शंकर की आराधना करके अमरत्व तथा अस्त्र-शस्त्रों से न

वायु—97।81-84.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारे जाने का वरदान प्राप्त किया था। यह इन्द्र वध के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता था। इसका विष्णु ने वध किया।

131 विष्णु द्वारा देवांगनाओं की रक्षा

विष्णु ने हरि अवतार में वृत्र वध के कारण ब्रह्म हत्या के भय से छिपे हुए इन्द्र की रक्षा की तथा दानवों द्वारा बन्दी बनाई गई देवताओं की अनाथ स्त्रियों को उनसे मुक्त कराया।

भागवत—11।4।19.

132 विष्णु का वृन्दा के साथ व्यभिचार

यह जालंधर की पत्नी थी। इसका वध केवल शंकर ही कर सकेंगे—ऐसा ब्रह्मदेव ने जालंधर को वरदान दिया था। इसने इन्द्र पर पर भी कब्जा कर लिया था। इसका शिव से युद्ध हुआ शस्त्र युद्ध के बाद यह शंकर का रूप धारण कर पार्वती के पास गया, परन्तु विष्णु जालंधर का रूप धारण कर जालंधर की पत्नी के पास आये और उसके साथ रमण किया। वृन्दा ने इन्हें शाप दिया कि तुम द्वारपाल द्वारा पराजित होंगे। ब्रह्मवैवर्त पुराण में यह कथा अन्य प्रकार दी गई है।

1. पद्म (उत्तर-खण्ड) 4-19.
2. शिव-युद्ध खण्ड—22-24.
3. स्कन्द-वैष्णव खण्ड-14-22.
4. ब्रह्मवैवर्त —ब्रह्मखण्ड-20.

133 विश्वामित्र-आख्यान

(1) विश्वामित्र-मेनका आख्यान

विश्वामित्र की कठोर तपस्या से डरकर इन्द्र ने मेनका को उनके तप को भंग करने के लिए भेजा। विश्वामित्र का तप भंग हो गया और उन्होंने मेनका के साथ रमण किया, जिससे एक पुत्री पैदा हुई। मेनका उसे वन में छोड़कर चली गई।

1. महाभारत—आदि पर्व-अ० 71-72.
2. भागवत—9।20।13.

(2) विश्वामित्र को द्विजत्व की प्राप्ति

विश्वामित्र पुरुवंशी राजा गाधि के पुत्र थे। ये क्षत्रिय कुल में जन्मे थे, परन्तु तपोबल से इनकी गणना ब्राह्मणों में होने लगी।

1. महाभारत—आदि पर्व-174।48.
2. विष्णु—4।7।12-38.

(3) विश्वामित्र रम्भा आख्यान

रम्भा देवलोक की एक अप्सरा है। इसे

रामायण-बालकाण्ड सर्ग—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र ने विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के लिए भेजा। रम्भा के रूप-सौन्दर्य को देखकर एक बार विश्वमित्र सन्देह में पड़ गये। बाद में इन्द्र का कार्य जानकर विश्वामित्र ने रम्भा को दस हजार वर्ष तक पत्थर की रहने का शाप दे दिया। (4।1-12

(4) विश्वामित्र द्वारा कुत्ते का मांस खाना

एक बार संसार में बारह वर्षों तक भयंकर अनावृष्टि हो गई, जिससे अकाल पड़ गया। इस भयंकर समय में मनुष्य एक दूसरे को खाने लगे। विश्वामित्र घर-घर घूमकर भीख मांगते फिरे। उन्हें कोई भी वस्तु उपलब्ध न हुई, अतः इन्होंने एक गत चाण्डाल के घर जाकर वहां से कुत्ते की जाँघ का माँस चुराया तथा उसे खाने के लिए पकाया। महाभारत-पर्व—141।13-100

134 वेन-आख्यान

वेन राजा अंग का पुत्र था। राजा होने के पश्चात इसने प्रजा पर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया था। ऋषि मुनियों ने इसे काफी समझाया और चेतावनी दी, पर वेन पर कुछ असर न हुआ। इसलिए ऋषियों ने कुशा से इसको मार डाला। इसके कोई संतान न थी। अतः वेन के शव को मथकर निषाद और उसकी दाहिनी भुजा को मथकर पृथु को उत्पन्न किया।

1. विष्णु—1।13.
2. भागवत —4।14.

135. शर्मिष्ठा-देवयानी-आख्यान

शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी और दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री में आपस में झगड़ा हो गया, जिससे शर्मिष्ठा ने देवयानी को कुएं में धकेल दिया। राजा ययाति ने देवयानी को कुएं से निकाला। देवयानी ने क्रोधवश घर जाना स्वीकार नहीं किया। दासी से सूचना मिलने पर शुक्राचार्य भी वृषपर्वा से रुष्ट हो गये। वृषपर्वा ने शुक्राचार्य को प्रसन्न करने के लिए देवयानी की इच्छानुसार अपनी पुत्री को

1. विष्णु…4।10।2-4.
2. वायु—1।155.
3. मत्स्य—अ० 30.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवयानी की दासी बना दिया। देवयानी का विवाह ययाति से होने पर शर्मिष्ठा देवयानी की दासी बनकर रही।

136. शर्याति-आख्यान

राजा शर्याति मनु के पुत्र थे। वे वेदों के निष्ठावान विद्वान थे। महर्षि च्यवन ने शर्याति से सोमयज्ञ का अनुष्ठान करवाया और सोमपान के अधिकारी न होने पर भी अश्विनीकुमारों को सोमपान करवाया।

भागवत—9।3.

137. शान्तनु-गंगा आख्यान

गंगा ने शान्तनु से इस शर्त पर विवाह किया कि वह जो चाहेगी सो करेगी। उसके सात पुत्र उत्पन्न हुए, जिन्हें उसने गंगा के जल में प्रवाहित कर दिया। आठवें पुत्र भीष्म हुए। शान्तनु ने आठवें पुत्र को जल में फेंकने से मना किया। गंगा अपनी प्रतिज्ञा भंग होने पर शान्तनु को छोड़कर चली गई।

1. महाभारत—आदि पर्व अ० 98.
2. भागवत—9।22।19.
3. देवी भागवत—2।3.

138. शिव-आख्यान

(1) शिव द्वारा विषपान

समुद्र-मंथन से निकले हुए हलाहल विष का शंकर ने लोकहित के लिए पानकर लिया, जिससे इनका कण्ठ नीला पड़ गया और इनका नाम नील-कण्ठ प्रसिद्ध हुआ।

भागवत—8।6.

(2) शिव को दक्ष द्वारा शाप दिया जाना

एक समय मरीचि आदि प्रजापतियों के यज्ञ में सभी महर्षि, देवता, मुनि आदि एकत्रित हुए। वहाँ पर प्रजापति दक्ष भी गये। शिव के अतिरिक्त सबने उठकर दक्ष का आदर किया, पनन्तु शिव अपने आसन पर बैठे रहे। अतः दक्ष ने शंकर को शाप दे दिया कि इसे यज्ञ का भाग न मिले।

1. भागवत—4।2।5-19.
2. शिव-पुराण-रुद्र-संहिता—सती खण्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) शिव द्वारा सती का त्याग

सती राम की परीक्षा लेने के लिये सीता का रूप धारण करके गई थीं। अत: शिव ने उनका त्याग कर दिया। उनका पुनर्जन्म पार्वती के रूप में हिमाचल के घर में हुआ और दूसरे जन्म में भी उनका विवाह शिवजी से ही हुआ।

1. भागवत।
2. शिव-रुद्र-संहिता-सती-खण्ड—अ० 26.

(4) शिव-पार्वती विवाह

तारकासुर को यह वर प्राप्त था कि वह केवल शिव के पुत्र द्वारा ही मारा जा सकता है। अत: देवताओं ने शिव को विवाह के लिए तैयार करने हेतु सप्तर्षियों को भेजा। सती अपने पुनर्जन्म में हिमाचल के घर उत्पन्न हुईं थीं। पार्वती की तपस्या और ऋषियों के प्रयास से शिव और पार्वती का विवाह हुआ।

1. ब्रह्म-अध्याय—35-36, 72.
2. शिव-पार्वती-खण्ड

(5) शिव द्वारा काम-दहन

कामदेव शिव की समाधि भंग करने के लिए गया। मना करने पर भी जब यह न माना तब शंकर ने इसे तृतीय नेत्र खोलकर भस्म कर दिया। तब से इसका नाम 'अनंग' भी हुआ।

1. ब्रह्म—अ० 38, 71.
2. शिव-रुद्र-संहिता-पार्वती-खण्ड—19.

(6) शिव द्वारा ताण्डव नृत्य

ताण्डव नृत्य शिव का प्रिय नृत्य कहा जाता है। शिव संहार के देवता माने जाते हैं। इसलिए इनके द्वारा किया गया नृत्य भयंकर माना जाता है। वैसे इस नृत्य को शिव ने पार्वती का रोष शान्त करने के लिये किया था। यह सृष्टि संहार करने के लिए रुद्र द्वारा किये जाने वाले भयंकर 'ताण्डव-नृत्य' के लिए रुढ़ हो गया है।

लिंग पुराण.

(7) शिव द्वारा त्रिपुर-दहन

एक समय मय दानव और विन्द्युमाली ने ब्रह्मा की घोर तपस्या करके देवताओं को पराजित करने का वरदान मांगा तथा सोने, चाँदी और लोहे

1. भागवत—5।25।28, 7।10।51-71.
2. शिव-रुद्र-संहिता-युद्ध-कांड—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के तीन नगरों का निर्माण किया जो त्रिपुर नाम से विख्यात हुए। अन्य असुरों सहित उन नगरों में बैठकर इन्होंने पृथ्वी के ऊपर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया था। जब इनका अत्याचार अधिक बढ़ गया तब शिव ने बाण छोड़कर इन नगरों को नष्ट कर दिया और इन तीनों राक्षसों को मार दिया।

10.
3. मत्स्य—129-40.

(8) शिव का मोहनी को देखकर मोहित होना

विष्णु ने अमृत बाँटने के लिए मोहनी रूप धारण किया था और असुर तथा देवताओं का झगड़ा बंद कराया। शिव की इच्छानुसार जब विष्णु उनके समक्ष इसी रूप में आये तो कामातुर होने से शिव का रेतः पात हो गया।

1. भागवत—8।12.
2. शिव-रुद्र-संहिता, अ० 20.

(9) शिव द्वारा इन्द्र को कवच प्रदान करना

त्वष्टा ने भगवान शंकर की तपस्या करके उनके वरदान से वृत्रासुर को उत्पन्न किया था। वृत्रासुर के अत्याचारों से तंग आकर देवता शिव के पास गये, अतः शिव ने देवताओं की सहायता करने के लिए इन्द्र को कवच और उनका मंत्र दिया। उस कवच को धारण कर इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया।

महाभारत-द्रोण पर्व—अ० 94।54-66.

139. शिवि-आख्यान

शिवि राजा उशीनर के पुत्र थे। इन्द्र और अग्नि बाज और कबूतर का रूप धारण कर इनकी परीक्षा लेने गये। इन्होंने अपनी शरण में आये कबूतर की रक्षार्थ अपना सारा शरीर ही अर्पण कर दिया। जिससे इन्द्र इन पर प्रसन्न हुए और इन्हें मुक्ति मिली।

1. महाभारत-वन पर्व अ० 131, 197.
2. ब्रह्म-यगाति वंश वर्णन
3. भागवत—1।12।20.

140. श्रवण-आख्यान

श्रवण कुमार अपने माता-पिता का परम भक्त था। अपने माता-पिता को तीर्थ कराता हुआ

1. वाल्मीकि-रामायण अयोध्याकाण्ड-सर्ग-63-64.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार अयोध्या के निकट आया। दशरथ शिकार खेलने के लिए सरयू नदी के किनारे आये हुए थे। उस समय श्रवण कुमार अपने माता-पिता के लिए जल लेने नदी पर आया हुआ था। दशरथ ने मृग समझ कर श्रवण कुमार को शब्दवेधी बाण से मार दिया। फलस्वरूप उसके माता-पिता ने दशरथ को शाप दिया कि तुम्हारी मृत्यु भी पुत्र वियोग में होगी।

2. अध्यात्म-रामायण अध्योध्याकाण्ड सर्ग—7.
3. ब्रह्म—अ० 123.
4. अग्नि—6।38-40.

141. श्री तीर्थ में कुवेर की तपस्या

नर्मदा और कावेरी के संगम पर कुवेर ने तथा शिव से यज्ञों का अधिपति होने का वरदान प्राप्त किया।

मत्स्य—189-4-11, 191-85.

142. शृंगी आख्यान (शृंगी ऋषि का जन्म)

एक दिन विभाण्डक मुनि जल में स्नान कर रहे थे, उर्वशी अप्सरा को देखकर जल में ही इनका वीर्यपात हो गया, जिसे प्यास से व्याकुल एक मृगी पी गई। इससे उसके गर्भ रह गया, जिससे शृंगी ऋषि का जन्म हुआ।

महाभारत-वनपर्व-110।34-38.

143. शुक्र की तपस्या

शुक्राचार्य दैत्यों के गुरु थे। एक बार इन्होंने असुरों की रक्षार्थ शंकर से उपाय पूछा। उनके बताने के अनुसार यह एक हजार वर्ष तक धुम्रपान कर तपस्या करते रहे। इन्द्र ने डरकर इनकी तपस्या भ्रष्ट करने के लिए अपनी पुत्री जयन्ती को भेजा। इन्होंने तपस्या पूर्ण कर जयन्ती से विवाह कर लिया।

1. मत्स्य—अ० 47.
2. देवी भागवत—4।12.

144. शुम्भ-निशुम्भ वध

शुम्भ और निशुम्भ दोनों दनु से उत्पन्न कश्यप के पुत्र थे। इन्होंने देवताओं को पराजित कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। इन दोनों ने दुर्गा

1. मार्कण्डेय—89-90.
2. देवी भागवत—5।30-31.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वध की प्रतिज्ञा की थी। अन्त में दुर्गा से ही युद्ध करते हुए मारे गये।

145. सगर-आख्यान

(1) सगर के साठ हजार पुत्र पैदा होना

सगर अयोध्या के प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा थे। इनका विवाह कश्यप की पुत्री सुमति और विदर्भ राज्य कन्या केशिनी से हुआ। सुमति के साठ हजार पुत्र उत्पन्न हुये। जिन्हें कपिल ने भस्म कर दिया।

1. ब्रह्म—8.
2. विष्णु—4।4।5-6.
3. भागवत—9।8।9-10.

(2) सगर का अपने पुत्र को निकालना

सगर की दूसरी पत्नी केशिनी से असमंजस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। पूर्वजन्म के कुकृत्य के फलस्वरुप ये बड़ी दुखी और दुष्ट प्रकृति के थे, अतः इनके पिता ने इन्हें देश से निकाल दिया।

1. ब्रह्म—78.
2. विष्णु—4।4।5-10.
3. भागवत—9।8।15-19.

146. सत्यवान-सावित्री

सावित्री भद्र देश के राजा अश्वपति की पुत्री थी। उसका विवाह सत्यवान के साथ हुआ। सत्यवान के पिता अंधे होने के कारण अपना राज्य गवां बैंठे थे। इनकी अल्पायु में ही मृत्यु हो गई, परन्तु सावित्री के पातिव्रत्य धर्म के कारण यह पुनः जीवित हो गये तथा इनके पिता का राज्य भी वापिस मिल गया और उनकी आंखें भी ठीक हो गई।

1. ब्रह्मवैवर्त-प्रकृति खण्ड अध्याय 24-31.
2. मत्स्य—208-214.

147. समुद्र-मंथन

देवासुर-संग्राम के कारण आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के उद्देश्य से विष्णु के परामर्श पर देव और असुरों ने समुद्र-मंथन किया, जिसमें मन्दर पर्वत को मथानी और वासुकी नाग की रस्सी बनाई गई। भगवान कच्छपावतार ने मन्दराचल को अपने ऊपर धारण किया। समुद्र-मंथन से चौदह रत्न निकले जिनको ऋषि, विष्णु, शिव, इन्द्र और असुरों ने ग्रहण किया।

भागवत—8।6।21-25
8।8.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

148. स्वर्ग से मन्दाकिनी का बहना

मन्दाकिनी स्वर्ग में स्थित गंगा की एक धारा है। इसका तट रम्य एवं पुण्यकारी एवं सुवर्णमय है। जिसके किनारे सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले फल के वृक्ष लगे हुए हैं।

भागवत—10।70।44.

149. सुधन्वा-आख्यान

सुधन्वा चम्पक नगरी के हंसध्वज राजा का पुत्र था। लिखित और शंखध्वज नामक मंत्री (प्रधानों) ने षड्यंत्र में फंसाकर इसका वध करना चाहा, परन्तु यह कृष्णभक्ति के कारण बच गया।

1. महाभारत-शान्ति पर्व अ० 23.
2. जैमिनी-अश्वमेध—17.

150. सुन्द-उपसुन्द वध

ये दोनों निकुम्भ के पुत्र थे। ब्रह्मा से यह वरदान प्राप्त कर कि—'यदि तुम आपस में न लड़ोगे तो मरोगे नहीं' इन्होंने अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया। इसलिए ब्रह्मा ने तिलोत्तमा को इनके पास भेजा। जिसकी प्राप्ति के लिए वे दोनों आपस में लड़कर मर गये।

महाभारत—अ० 208-211.

151. सौभरि ऋषि का गरुड़ को शाप

एक समय गरुड़ ने भूखे होने के कारण सौभरि ऋषि के मना करने पर भी यमुना के कुण्ड से एक मत्स्य को जबरदस्ती खा लिया। जीवों की कुशलता के लिए सौभरि ऋषि ने गरुड़ को शाप दिया था कि यदि गरुड़ यमुना-कुण्ड में घुसकर मछलियों को खायेगा तो तुरन्त मर जायेगा।

1. भागवत—10।17.
2. ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्णजन्म खण्ड—अ० 19.

152. सम्पाती के पर जलना

सम्पाती और जटायु दोनों गरुड़ के पुत्र थे। एक समय ये दोनों उड़ने की शक्ति से गर्वित हो सूर्य तक पहुंचने के लिए आकाश में उड़े। जिससे उनके पर सूर्य की गर्मी से झुलस गये।

1. रामायण-किष्किंधाकाण्ड—सर्ग 16.
2. अध्यात्म-रामायण-किष्किंधा-काण्ड—सर्ग 8.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

153. हनुमान आख्यान

(1) हनुमान द्वारा लंका-दहन

हनुमान अंजनी के गर्भ से उत्पन्न वायु या मारुतदेव के पुत्र कहे जाते हैं। राम की सुग्रीव से मित्रता होने पर ये सीता की खोज करने गये थे तथा उन्होंने लंका में जाकर सीता की खोज की, रावण के पुत्र सहित अनेक राक्षसों को मारा तथा लंका को जलाकर भस्म कर दिया।

1. रामायण-सुन्दरकाण्ड—अ० 54.
2. भागवत – 9।10।16.
3. शिवपुराण-शतरुद्र संहिता—अ० 20.
4. ब्रह्मवैवर्त-श्रीकृष्ण जन्म खण्ड —अ० 62.

(2) हनुमान द्वारा द्रोणाचल पर्वत उठाना

राम-रावण युद्ध में लक्ष्मण के मूर्छित होने पर हनुमान को संजीवनी बूटी लेने के लिए भेजा गया। द्रोणाचल पर्वत पर पहुँचने पर यह बूटी की पहिचान न कर सके। अतः सम्पूर्ण पर्वत को उठा लाये।

1. रामायण-युद्धकाण्ड सर्ग-102.
2. अध्यात्म-रामायण युद्ध-कांड सर्ग-7।33-35.

(3) हनुमान का कालनेमि से युद्ध

लक्ष्मण के मेघनाद की शक्ति से घायल होने पर हनुमान को संजीवनी बूटी लाने के लिए भेजा गया था। रावण ने कालनेमि को हनुमान का मार्ग रोकने के लिए भेजा, जिसे हनुमान ने मार दिया।

अध्यात्म-रामायण-युद्ध-काण्ड—6।30-63, 7।1-33.

(4) हनुमान का अर्जुन की ध्वजा पर बैठना

भीमसेन द्रौपदी के आग्रह के कारण सौगन्धिक कमल लाने के लिए कदली बन में गये। वहां उनकी भेंट हनुमान से हुई। दोनों के परिचय तथा मिलन के वाद हनुमान ने भीम को अर्जुन की ध्वजा पर बैठने का वचन दिया।

महाभारत-वन-पर्व अ०—151.

154. हंसावतार

भगवान विष्णु ने हंस के रूप में अवतार धारण कर सनकादिक को ज्ञान दिया था एवं उन्हें बताया था कि विषय और उनका चिन्तन दोनों ही माया हैं।

1. भागवत—2।7।19-20.
2. " 11।4।17.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

155. हयग्रीव-अवतार

हयग्रीब-अवतार की भगवान के चौदहवें अवतार के रूप में गणना की जाती है। इन्होंने मधु-कैटभ नामक दैत्यों जो वेदों को उठा ले गये थे, का वध करके वेदों का उद्धार किया। एक अन्य मत के अनुसार भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार धारण कर हयग्रीव नामक दैत्य को मारकर वेदों का उद्धार किया था। देवी भागवत अनुसार देवी से वरदान प्राप्त हयग्रीव नामक दैत्य का विष्णु ने हयग्रीव के रूप में वध किया।

भागवत—2।7।11.
7।9।36-37.
8।24।57.
11।4।17.

156. हरिश्चन्द्र आख्यान

राजा हरिश्चन्द्र त्रिशंकु के पुत्र सूर्यवंशी राजा थे। ईर्ष्यावश इन्द्र ने विश्वामित्र को इनकी परीक्षा लेने के लिए भेजा। विश्वामित्र की दक्षिणा चुकाने के लिए हरिश्चन्द्र सपरिवार बिक गये। इनकी पत्नी ने दासी का काम किया और स्वयं एक चाण्डाल के नौकर बनकर श्मशान की रखवाली करने में लगे रहे, परन्तु अपने व्रत का पालन किया।

1. वायु—88।118.
2. भागवत—9।7।7.
3. मार्कण्डेय—अ० 8-9.

157. हिमाचल-मैना

हिमाचल या हिमालय पार्वती के पिता थे। इनका विवाह पितरों की मानसी पुत्री मैना के साथ हुआ था। इन दोनों की पुत्री पार्वती थी, जिसका विवाह भगवान शंकर से हुआ।

1. विष्णु—1।8।14.
2. भागवत—4।7।58.
3. वायु—30।28.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक-आख्यानों के विविध प्रयोग

आख्यान एवं प्रयोग का स्वरूप	प्रयोग-सन्दर्भ

अंग का राज्य त्याग

दृष्टान्तमूलक प्रयोग। भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि। — रुक्मिणी-परिचय— पृ० 281.

अंगद का लंकापुरी को जाना

अलंकार (उदात्त) भारत के वैभव का कथन। — मधुपर्क—2।15.

अंगिरस-आख्यान/अंगिरस की उत्पत्ति

प्रतीक। अंगिरस-असह्य तेज। प्रतीक का हेतु-अंगिरस का अंगार से जन्म। — उत्तर। जय, पृ०—21.

अम्बरीष-आख्यान। दुर्वासा का संकट में पड़ना

(1) अलंकार

(1) उदात्त/भगवान के औदात्य का कथन। — सूरसागर, पद—10.

(2) उदाहरण/युधिष्टिर के ऐश्वर्य कथन के लिए अंबरीष का उदाहरण। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ०—308.

(3) काव्यलिंग/दुर्भाव न करने का हेतु अंबरीष का प्रभाव। — कृष्णायन, 4।141.

2. भक्त-हित-हेतु। — सूरसागर, पद—26.

3. भजन में हेतु भक्तों का नाम निवारण। — वही—28.

(4) स्मरण/ऋषि दुर्वासा द्वारा अंबरीष घटना का स्मरण। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ०—209.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

(1) भगवान के सत्य प्रेम का प्रति-पादन। ब्रजचन्द्र विनोद, पृ०—350.

(2) होनी की प्रबलता की पुष्टि। विश्राम-सागर, पृ०—292.

(3) शरणागत की रक्षा करने की पुष्टि। सूरसागर, पद—14.

(4) भगवान द्वारा जाति-पाँति कुल मर्यादा न मानना। वहीं, 15.

(5) भक्त-वत्सलता की पुष्टि। वही, 17,31,171-24.

(6) स्याम भजन से बड़प्पन। —वही, 3, 112.

(7) कष्ट में भगवान सहायक। श्री विष्णु लहरी (रत्नाकर) पद—14.

(3) वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक श्री विष्णुलहरी (रत्नाकार पद—14.

अगस्त्य-आख्यान

(1) अलंकार

(1) उदात्त/योद्धाओं के पौरुष का प्रति-पादन। जरासंध, पृ० —3.

(2) उदाहरण/रणक्षेत्र में दुर्योधन के पराक्रम के लिए उदाहरण। जयद्रथ वध, पृ०—73.

(3) उदाहरण/घटोत्कच का युधिष्ठिर को प्रणाम करने का उदाहरण। सेनापति कर्ण, 168.

(4) उपमा, उदात्त, व्यतिरेक/ 1. विवेक गाम्भीर्य के लिए उपमान। 2. प्रेम की श्रेष्ठता का वर्णन। 3. सिंधु की अपेक्षा प्रेम प्रवाह की श्रेष्ठता। उद्धव-शतक, पद—75.

(5) दीपक/चढ़ी हैं, कढ़ी हैं, सोखने चली हैं क्रियाओं का एक कारक 'किस पै' से सम्बन्ध। पुरुषोत्तम, पृ०—10.

(6) रूपक/रक्त पर समुद्र, अश्वत्थामा पर अगस्त्य का आरोप। उत्तर-जय पृ०—24.

(7) रूपक/आयुध पर रत्न, कर्ण पर अगस्त्य विद्या पर समुद्र का आरोप। अंगराज, पृ०—44.

(2) दृष्टान्त

(1) कृष्ण की बल हीनता का प्रति-पादन। जरासंघ, पृ०—55.

(2) छोटे जीवों द्वारा बड़े कार्य करने की संभावना का प्रतिपादन। कृष्णायन(विसाहूराम) पृ०—86.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) **प्रतीक**

व्योमभेदी विन्ध्यागिरि-अभिमान। — सेनापपि कर्ण, पृ०—56

(4) **वचन-वक्रता**

वियोग प्रस्तुतीकरण। — शृंगार-लहरी (रत्नाकर) पद, 48.

(5) **औचित्य।**

प्रतिभा। — उद्धव-शतक, पद—75.

अग्नि का स्वाहा से विवाह

अलंकार (मालोपमा) अर्जुन और द्रौपदी युगल के लिए अनेक उपमान। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ०—104.

अज का इन्दुमती से विवाह

अलंकार

1. (उदात्त) भारत के वैभव का वर्णन। — मधुपर्क, 2।20.

2. उदाहरण, विरोधाभास, परिकर। — राधा, पृ० 86

1. राधा के कृष्ण के प्रति प्रेम के लिए उदाहरण।

2. रज में विरज का, अमिल में मिलने का अजन्मा में दृष्टि का लगना विरुद्धता की प्रतीति कराता है।

3. तीनों विशेषण साभिप्राय हैं।

अजामिल पर कृपा

अलंकार

1. (उदात्त) श्रीकृष्ण को औदात्य का कथन। —
1. व्रज-विहार (रंगीलाल) पृ०—298,
2. प्रेम प्रलाप, पद, 41, 62 (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
3. विनय प्रेम पचासा, पद—38. (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
4. सूरसागर, पद, 12, 27, 95, 119, 120, 131, 190, 306.

2. (सोपालम्भ उदात्त) श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन। — व्रज-विहार, पृ०—297.

3. (उदाहरण)। खलों का उदाहरण। — सूरसागर, पद, 158, 204,219.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. (उपमा, काव्यलिंग) 1. पापियों का अजामिल उपमान, 2. तारने का हेतु अवगुणों का न देखना।	प्रेम प्रलाप, पद, 5. (भा०-ग्रं०)
5. (काव्यलिंग) 1. विख्याति का कारण भक्तों का तारना। 2. तारने में हेतु हरि स्मरण।	प्रेम-मालिका, पद-90 (भा०-ग्रं०) सूरसागर, पद, 82.
6. (स्मरण) भक्त वत्सलता का स्मरण कराया जाना।	प्रेम-मालिका, पद, 34. (भा०-ग्रं०)

दृष्टान्त

1. भगवान की भक्त वत्सलता की पुष्टि।	1. हृदय-तरंग, पृ०—144. 2. सूरसागर, पद—35.
2. भगवान का भक्तों के उद्धारक होने की पुष्टि।	प्रेम-प्रलाप, पद—33.
3. भगवान की पतित पावनता की पुष्टि।	विनय प्रेम पचासा, पद—36. (भा०-ग्रं०)
4. भगवान का भक्त जनों का उद्धारक होना।	ब्रजचन्द-विनोद (उत्तरार्द्ध) पृ०-466.
5. भगवान का भक्तों के अवगुण न देखने की पुष्टि।	प्रेम-प्रलाप, पद—5. (भा.-ग्रं.)
6. स्मरण से निर्भय पद की प्राप्ति।	सूरसागर, पद—66.
7. भगवान की गति की अलक्षता।	सूरसागर, पद—104.
8. बिना परिश्रम के यश प्राप्ति। (व्यंग्य)	—वही, 132.

वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद, 139, 140, 145, 179.
2. दीनता प्रदर्शन।	—वही, 138, 192.

औचित्य

निवेदन।	सूरसागर, पद—171.

अभिमन्यु वध

1. अलंकार (काव्यलिंग) अधर्म में धर्म का बनने का हेतु दुर्योधन का वेतन पाना।	द्रौपदी, पृ०—48.
2. जीवन-दर्शन-मिथ्याचरण-त्याग।	रश्मिरथी, पृ०—174.

वचन-वक्रता

1. अनौचित्यमूलक।	कृष्णायन, 6।244.
2. घृणामूलक, विपरीत लक्षणामूलक।	रश्मिरथी पृ०—174.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. सद् और असद् प्रवृत्तियों के द्योतन के लिए। — ब्रजचन्द-विनोद, पृ०—398-99. (उत्तरार्द्ध)

औचित्य

1. तत्व। — कृष्णायन, 6।244.
2. निन्दा। — कृष्णायन, 6।233.
3. विचार, निन्दा। — रश्मिरथी, पृ०—174.

जीवन-दर्शन

1. मिथ्याचरण, त्याग। — ब्रजचन्द्र विनोद (उत्तरार्द्ध) पृ० 399.
2. समदर्शिता का संकेत। — रश्मिरथी, पृ०—4.

अर्जुन आख्यान

(1) अर्जुन द्वारा सुभद्रा हरण

1. **अलंकार** (सन्देह) अथवा से संशय की प्रतीति। — सेनापति कर्ण, पृ०—19.

2. **वचन-वक्रता**। कुटनीति परक। — वही

(2) अर्जुन द्वारा खाण्डव दहन

1. **अलंकार** (उदाहरण) दुर्योधन के क्रोध से जलने के लिए उदाहरण। — सेनापति कर्ण—7.

2. (काव्यलिंग) कहानी गूंथने में हेतु खाण्डव दाहक बाण। — पुरुषोत्तम पृ०—236.

(3) अर्जुन—किरात युद्ध/पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति

अलंकार

(1) (उदात्त) अर्जुन के पराक्रम का चित्रण। — कृष्णायन—6।69.

(2) (काकु-वक्रोक्ति) अर्जुन के कथन से उसका पराक्रम तथा कर्ण पर विजय काकु द्वारा अभिव्यक्त। — सेनापति कर्ण पृ०—165-166.

वचन-वक्रता—औचित्य मूलक — सेनापति कर्ण पृ—56.

औचित्य—अभिप्राय — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ०—168-169.

जीवन-दर्शन— कर्म-दर्शन — सेनापति कर्ण, पृ०—56.

(4) अर्जुन चित्ररथ युद्ध

अलंकार (काकु-वक्रोक्ति) अर्जुन का पराक्रम व्यंजित। — सेनापति कर्ण, पृ०—165.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(5) अर्जुन चित्रसेन युद्ध

अर्जुन का रम्भा पर मोहित होना—पद अनौचित्य। — पुरुषोत्तम, पृ०—253.

(6) अर्जुन का वृहन्नला बनना

(1) वचन-वक्रता-औचित्यमूलक — सेनापति कर्ण, पृ०—6.
(2) औचित्य-निन्दा-औचित्य — कृष्णायन—5।101
(3) जीवन-दर्शन-कर्म-दर्शन — सेनापति कर्ण, पृ०—56

(7) अर्जुन द्वारा विराट की गायों की रक्षा। दुर्योधन द्वारा विराट की गाय चुराना

वचन-वक्रता-घृणामूलक उपहास — जयभारत, पृ—318.

(8) अर्जुन और दुर्योधन का कृष्ण के पास जाना

प्रतीक—अर्जुन-धर्म, दुर्योधन-अधर्म। — कनुप्रिया, पृ०—77.

प्रतीक-हेतु अर्जुन और दुर्योधन का क्रमशः नैतिक व अनैतिक कार्यों का पालन होना।

(9) अर्जुन का युद्ध करने के लिए तैयार न होना

औचित्य (विचार, दयाभाव) — जरासंध, पृ०—30.

अष्टावक्र-आख्यान

प्रतीक (अष्टावक्र-कुटिलता) प्रतीक हेतु अष्टावक्र की पिता से कुटिलता तथा उनका आठ स्थान से टेढ़ा होना। — राधा, पृ०—13.

इन्द्र-आख्यान

(1) इन्द्र की असुरवाहिनी पर विजय

अलंकार—1. (उदाहरण) दैत्यगणों का मेघों द्वारा इन्द्र की विजय सुनना। कौरवों का दूत के मुख से पार्थ-प्रतिज्ञा सुनने के लिए उदाहरण। — जयद्रथ-वध, पृ०—42.

2. (उपमा) पाण्डवों की विजय का उपमान। — सुवर्णा, पृ०—64.

(2) इन्द्र का अहल्या से साथ व्यभिचार/अहल्या-उद्धार

अलंकार—1. अर्थान्तरन्यास (अहल्या का शिला होना) अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन। — विश्राम-सागर पृ०—331.

2. (अर्थान्तरन्यास) नारी को कुदृष्टि से देखने पर दुख मिलने का समर्थन। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ०--131

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. (उदात्त) भगवान का औदात्य-कथन।	1. सूरसागर, पद—94, 119, 123, 182, 308. 2. व्रज-विहार, (रंगीलाल) पृ०—298. 3. प्रेम-प्रलाप, 62 (भारतेन्दु ग्रंथावली)
4. (उदाहरण, उत्प्रेक्षा) 1. चन्द्रमा की स्वच्छता के लिए उदाहरण। 2. चन्द्रमा के शाप से मुक्त होने की संभावना ध्वनित।	सेनापति कर्ण, पृ०—134.
5. (उदाहरण) पतितों के लिए उदारण।	सूरसागर, पद—158, 188.
6. (काव्यलिंग) 1. भक्त हित हेतु	सूरसागर, पद—26.
2. भजने का हेतु भक्तों का ताप निवारण।	सूरसागर—28.
दृष्टान्त	
1. भगवान के भक्तों को सभी अधिकार प्राप्त।	सूरसागर, पर—34.
2. बिना परिश्रम यश प्राप्ति	सूरसागर, पद—132.
3. अवगुण करने वाले को सुख प्राप्त नहीं।	विश्राम-सागर, पृ०—359.
4. पुरुष गुरुतर अपराध करने पर भी दोष मुक्त।	महारास, पृ०—67.
जीवन-दर्शन	
अवगुणों से मनुष्य का अपमान।	विश्राम-सागर, पृ०—359.

(3) इन्द्र का पुलोमजा (इन्द्राणी) के साथ विवाह

अलंकार (मालोपमा) अर्जुन-द्रौपदी युगल के अनेक उपमान।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ०—104.
दृष्टांन्त-सुर और असुरों के आपसी सम्बन्धों की पुष्टि।	जयभारत, पृ०—74.
जीवन-दर्शन-प्रेम-भावना।	जयभारत, पृ०—74.

(4) इन्द्र को कल्पतरु की प्राप्ति

अलंकार (उदात्त) कल्पेश्वर तीर्थ की श्रेष्ठता का वर्णन।	कृष्णापन, 3।184.

(5) इन्द्र का यज्ञ करना

अलंकार (उदात्त) कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	अंगराज, पृ०—111.

(6) इन्द्र का पर्वतों के पर काटना

अलंकार (उदाहरण)—1. घटोत्कच के प्रणाम करने के लिए उदाहरण।	सेनापति कर्ण, पृ०—81.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. युद्ध के मैदान में पड़े हुए वीरों के छिन्न-भिन्न अंगों के लिए उदाहरण। — सेनापति कर्ण, पृ०—111.

(7) इन्द्र के साथ वैश्वानर

अलंकार (उत्प्रेक्षा) भीम और सात्यकि में इन्द्र और वैश्वानर की संभावना। — कृष्णायन—6।179.

(8) इन्द्र-वृत्रासुर युद्ध

अलंकार 1. (उदात्त) (1) बदरीधाम तीर्थ की श्रेष्ठता का वर्णन। — कृष्णायन, 3।185.

(2) कवच की श्रेष्ठता का वर्णन। — जयद्रथ-वध, पृ०—73.

(3) कवच की श्रेष्ठता का वर्णन। — ब्रजचन्द्र विनोद पृ०—370.

2. (उपमा)—(1) विराट सुत तथा भीष्म के लिए वासव-वृत्र उपमान। — कृष्णायन, 6।2.

(2) अर्जुन के लिए उपमान। — जयद्रथ-वध, पृ०—63.

3. (उदाहरण, काव्यलिंग, काकु-वक्रोक्ति) — मधुपर्क 10।92.

(1) कृष्ण के चाणुर से युद्ध के लिए उदाहरण।

(2) नाश होने में हेतु भिड़ना।

(3) 'किन होइ है' से नाश होना ध्वनित।

4. (काव्यलिंग) सुरों का इन्द्र को अस्त्र-शस्त्र देने का हेतु वृत्रासुर-त्रास तथा इन्द्र की अजेयता का हेतु देवों का शस्त्रास्त्र देना। — कृष्णायन, 4।122.

5. (रूपक)—(1) कर्ण पर अन्नकोष और पाण्डवों पर मनोमय कोष का आरोप। — सुवर्णा, पृ० 43.

(2) अहं तथा प्रेम में वृत्र और इन्द्र का — सुवर्णा, पृ० 45.

6. (सन्देह)—(1) सूर्योदय की लाली में सूर्य इन्द्र।

(2) उल्लेख। कवि मुख से काव्य की भूमिका संयोजन में प्रयोग। — जयभारत, पृ०—2.

(3) दृष्टान्त 1. मरण वीरों का धर्म। — सेनापति कर्ण, पृ०—38.

2. हिंसा का त्याज्य होना। — उत्तर-जय, पृ०—29.

(4) औचित्य। तत्व-औचित्य। — उत्तर-जय, पृ०—29.

(5) जीवन-दर्शन 1. कर्म-दर्शन। — सेनापति कर्ण, पृ०—38

2. गाँधीवाद, अहिंसा। — उत्तर-जय, पृ० 29.

(8) इन्द्र के साथ शक्तिधर

अलंकार—सन्देह-अश्वत्थामा में शक्तिधर कर्ण में सुरेन्द्र होने का सन्देह व्यंजित। — सेनापति कर्ण, पृ०—38.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(9) **इन्द्र को ब्रह्महत्या लगना**

अलंकार (काव्यलिंग) ब्रह्महत्या से मुक्ति का हेतु भगवान का भक्तजनों को सुख देना।

(10) **इन्द्र द्वारा शम्ब-वध**

1. अलंकार (उदाहरण, काव्यलिंग)— (1) अश्वत्थामा वध करने के लिए उदाहरण। (2) संताप मिटाने में कारण अश्वत्थामा को दण्ड देना।

2. **औचित्य-इतिहास**

(11) **इन्द्र का वृहस्पति के घर जाना**

अलंकार (उत्प्रेक्षा) श्रीकृष्ण, अर्जुन और व्यास में क्रमशः इन्द्र, स्कन्द और वृहस्पति की संभावना। मधुपर्क, 14।83.

(12) **इन्द्र का कर्ण से कवच कुण्डल माँग कर लाना**

• **जीवन-दर्शन**—मर्यादा का अतिक्रमण दुख का कारण। जयभारत, पृ०—209.

इला-बुध आख्यान्

1. **वचन-वक्रता**-निन्दामूलक उपहास मधु-मुकुल, पद—5-9 (भारतेन्दु ग्रंथावली)
2. **औचित्य**-परिवाद

उत्तंक ऋषि का सर्प यज्ञ

दृष्टान्त—आपद्धर्म की पुष्टि कृष्णायन—6।62.

उर्वशी का अर्जुन पर अनुरक्त होना

1. **अलंकार** (1) (अर्थान्तरन्यास) प्रेम की विफलता के बाद द्वेष होने का समर्थन। जयभारत, पृ० 177.

(2) (उदात्त, काव्यलिंग) अर्जुन के वक्ष की पुष्टता का वर्णन और उर्वशी के मोहित होने में उर्वशी की शारीरिक पुष्टता हेतु। मधुपर्क—13।9.

2. **प्रतीक**—(उर्वशी) प्रेमिका। द्रौपदी, पृ०—52.
3. **वचन-वक्रता**-औचित्यमूलक। सेनापति कर्ण, पृ० 50.
4. **जीवन-दर्शन** (1) कर्म दर्शन सेनापति कर्ण, पृ०—56.

(2) नारी भावना। द्रौपदी, पृ०—52.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊषा-अनिरुद्ध आख्यान

1. **अलंकार** (उदाहरण) गोपियों द्वारा प्रद्युम्न को देखने के लिए उदाहरण। — फेरि-मिलिवो, पृ०—108.

2. **औचित्य**-उपमान अनौचित्य।

एकलव्य-आख्यान

(1) अलंकार

1. (अर्थान्तरन्यास) भाग्यवाद का समर्थन। — सुवर्णा, पृ०—51.

2. (उपमा) एकलव्य उपमान कर्ण उपमेय। — रश्मिरथी, पृ०—17.

3. (काव्यलिंग) अंगूठा काटने का हेतु निष्कंटक राज्य। — रश्मिरथी, पृ०—8.

2. **दृष्टान्त**-उच्च जाति द्वारा निम्न जाति का शोषण। — रश्मिरथी, पृ०—4.

3. **वचन-वक्रता**-अधिक्षेपमूलक (अनुचित-निन्दा)। — रश्मिरथी, पृ०—4.

4. **औचित्य**-व्रत। — पार्थ पत्नी महासती द्रौपदी, पृ०—63.

5. **जीवन-दर्शन**-होनी की प्रबलता — सुवर्णा, पृ०—51.

कंस द्वारा अस्ति और प्राप्ति से विवाह

औचित्य-प्रसिद्धि-विरुद्धि। — विश्राम सागर, पृ० —297·

कच-देवयानी

उल्लेख-यदु और पुरुवंश का वर्णन। — जयभारत, पृ०—15.

कच्छप-अवतार

1. **अलंकार** (1) अपह्नुति/अवतरण का निषेध कर अभ्भुदय की स्थापना। — देवकी, पृ०—6.

(2) **उदात्त**-भगवान के औदात्य का कथन। —
1. गीत गोविन्दानन्द, पद—12. (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
2. प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद—6. (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
3. विश्राम सागर, पृ०—312.
4. कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ०—34.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5. सूरसागर, पद— 839.

(3) काव्यलिंग/कार्य सिद्धि का हेतु मन्दराचल धारण करना। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ.—99.

2. दृष्टान्त-भारत की महिमा की पुष्टि। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ.107.

3. वचन-वक्रता (1) उपालम्भमूलक। — रुक्मिणी-परिणय, पृ०—86.

(2) शक्ति की प्रामाणिकता। — सूरसागर, पद—745.

4. औचित्य (1) विचार — देवकी, पृ०—6.

(2) भक्तिभाव। — विश्राम-सागर, पृ० —287.

कपिल-आख्यान

(1) कपिल अवतार/कपिल का देवहूती को ज्ञान देना

1. अलंकार/उदात्त, रास की श्रेष्ठता का वर्णन। — मधुपर्क, 7।51.

2. दृष्टान्त/भारत की महिमा की पुष्टि। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ०—106.

(2) कपिल का सागर पुत्रों को भस्म करना

1. अलंकार/उदात्त (1) कपिल अवतार की महत्ता का कथन। — विश्राम सागर, 312.

(2) कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का कथन। — अंगराज पृ०—185.

कर्ण-आख्यान

(1) कर्ण-जन्म

1. अलंकार (1) अर्थान्तरन्यास/अवैध के त्याज्य होने का समर्थन। — द्रौपदी, पृ०—312.

(2) काव्यलिंग/महत्ता में हेतु गुण-कर्म। — जयभारत, पृ०—386.

2. उल्लेख/श्रीकृष्ण द्वारा कर्ण से वार्तालाप के समय संकेत। — रश्मिरथी, पृ०—35.

(2) कर्ण का अपमान

अलंकार/अर्थान्तरन्यास। अवैध के त्याज्य होने का समर्थन। — द्रौपदी, पृ०—14.

(3) कर्ण द्वारा गौ-हत्या

1. अलंकार/काव्यलिग कर्ण युद्ध की वाधाओं का हेतु दुर्योधन की मित्रता। — सुवर्णा, पृ०—119.

2. उल्लेख/युद्ध से पूर्व कर्ण की चिन्ता। — सुवर्णा, पृ०—104.

3. औचित्य/अलंकार, चिन्ता। — सुवर्णा, पृ०—119.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) कर्ण का अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डवों को न मारने का वचन देना।

अलंकार (उदात्त) कर्ण के औदात्य का कथन। — जयद्रथ-वध. पृ०—79.

(5) कर्ण द्वारा कवच कुण्डल दान

दृष्टान्त-भगवान के कार्यों की गति की अलक्षता। — सूरसागर, पद – 104.

(6) कर्ण का युद्ध क्षेत्र में मारा जाना

1. अलंकार (काव्यलिंग) कर्ण वध का हेतु, दुर्योधन की मित्रता। — जरासंध, पृ०—7.

कल्कि-अवतार

अलंकार (1) उदात्त-भगवान के औदात्य का कथन। — प्रेम मालिका, पद—216.

2. गीत गोविन्दानन्द, पद—12. (भा०ग्रं०)

3. प्रातः स्मरण स्तोत्र , पद—6.

4. विश्राम-सागर, पद—312.

2. उदात्त-काव्यलिंग कठिन तलवार धारण करने का हेतु मलेच्छ-वध। — गीत-गोविन्दानन्द, पृ० —14.

3. काव्यलिंग-अवतार का हेतु भक्त जनों को सुख देना। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० —101.

कामदेव का प्रद्युम्न के रूप में जन्म

उल्लेख-कृष्णवंश वर्णन — कृष्णायन—3।113.

कार्तिकेय-आख्यान

(1) कार्तिकेय-जन्म

दृष्टान्त-कार्य की निश्चयात्मकता। — सुवर्णा—पृ० 44.

(2) कार्तिकेय का देव सेनापति होना। कार्तिकेय द्वारा तारकासुर वध

1. अलंकार (1) उदात्त—कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — अंगराज—पृ० 186.

(2) उदाहरण—अभिमन्यु के कौरव सेना में जाने के लिए उदाहरण। — जयद्रथ-वध —पृ० 10.

2. जीवन-दर्शन-कर्मवाद। — सेनापति कर्ण—पृ० 38.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालनेमि-इन्द्रजीत

अलंकार (सन्देह) अश्वत्थामा तथा कर्ण के कालनेमि तथा इन्द्रजीत होने का सन्देह। — सेनापति कर्ण —पृ० 38.

कुबेर को धनादि की प्राप्ति

अलंकार (उदात्त) कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — अंगराज—पृ० 185.

कृत्या-आख्यान

1. अलंकार

(1) उपमा—1. हिडिम्बा के लिए उपमान। — सेनापति कर्ण, पृ० 80.

2. द्रौपदी के केशों के लिए कृत्या की जटा उपमान। — सेनापति कर्ण, पृ० 146.

3. द्रौपदी के लिए उपमान। — सेनापति कर्ण, पृ० 110, 156.

(2) काव्यलिंग, उपमा—1. कृतकृत्य करने में कृत्या कारण। — द्रौपदी, पृ० 23.

(2) साभिप्राय विशेषण का कथन।

(3) रूपक--द्रौपदी पर कृत्या का आरोप। — सुवर्णा, 64.

(4) सोत्प्रेक्षा रूपक—गाण्डीव मौर्वी पर कृत्या के आरोप की संभावना। — जयद्रथ-वध, पृ०.

2. प्रतीक (1) विनाशनी शक्ति। — द्रौपदी, पृ० 23.

(2) आसुरी वृत्ति प्रधान नारी। — द्रौपदी, पृ० 52.

3. जीवन-दर्शन—नारी भावना। — द्रौपदी, पृ० 52. सेनापति कर्ण, पृ० 155-156.

कृष्ण-आख्यान

(1) पूतना-वध

1. अलंकार (1) उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।

1. श्रीबृज विहार, पृ० 10.
2. रुक्मिणी-परिणय, पृ० 56.
3. कार्तिक स्नान, पद-5. (भा० ग्रं०) प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5. (भा० ग्रं०).
4. कृष्णायन (बिसाहू राम) पृ० 142.
5. द्वारका-प्रवेश, पृ० 26.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	6. स्फुट कवितायें, पद-8 (भा० ग्रं०), सूरसागर, पद-27, 49 1046, 1105, 1572, 3645, 3646, 3648, 4668.
2. उदात्त : काव्यलिंग—1. श्रीकृष्ण के महत्व का कथन।	स्फुट-कवितायें, पद-8. (भा०ग्रं०)
(2) पूतना आने का हेतु सुत वध।	
3. उदात्त : रूपक—1. कृष्ण के औदात्य का कथन।	कृष्णायन (बिसाहू राम) पृ० 59.
(2) कंस पर मयंक का आरोप।	
4. उत्प्रेक्षा—ज्यों मानो के अर्थ में।	महारास, पृ० 129.
5. काव्यलिंग (1) पूतना को भेजने का हेतु कृष्ण हत्या।	देवकी, पृ०—61.
(2) भरोसे का हेतु पतितपावनता।	सूरसागर, पद—122.
(3) भय का हेतु-पूतना-वध।	वही पद—3542.
(4) सोच में पड़ने हेतु पूतना-वध।	वही पद—3544.
(5) न डरने का हेतु।	वही पद—3595.
6. स्मरण-गोपियों द्वारा कृष्ण के कार्यों का स्मरण।	तन्मय-लीला, पद—3 (भा०ग्रं०)

(2) दृष्टान्त

(1) श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक लीला—5।37.
(2) पुरुषों की निष्ठुरता की पुष्टि।	गति-गोविन्दानन्द, पद—30. (भा० ग्रं०)
(3) कृष्ण के रूप रहस्य पर व्यंग्य।	विश्राम-सागर, पृ०—3[illegible]0
(4) कृष्ण के औदात्य की पुष्टि।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ०—188.
(5) होनी की प्रबलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद—2016.
(6) शक्ति की प्रमाणिकता।	सूरसागर, पद—1116, 4702.
3. उल्लेख (1) केशी आदि असुरों का कृष्ण के पौरुष का स्मरण कर भयभीत होना।	कृष्णायन, 1।147.
(2) मथुरावासियों में कृष्ण के द्वारा किये गये महान कार्यों की चर्चा।	कृष्णायन—2।24.
(3) मथुरा से कृष्ण को धनुष यज्ञ निमंत्रण आने पर ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आये कष्टों का उल्लेख।	प्रिय-प्रवास—2।35.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. वचन-वक्रता (1) उपालम्भमूलक विरह।	महारास, पृ०—165.
(2) शत्रु के ख्याति प्राप्ति कार्यों को तुच्छ बताने के लिए।	1. कृष्णायन—2।149. 2. द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-60.
(3) उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद—138, 145 3826.
(4) वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए।	सूरसागर, पद—4003, 4362, 4485, 4687.

(5) औचित्य

1. क्रिया	द्वापर, पृ० 19.
2. निन्दा	कृष्णायन—4।52, 2।149.
3. विप्रलम्भ शृंगार	भारतेन्द्र ग्रंथावली
4. नाम	देवकी, पृ० 63.

शकट-भंजन

1. **अलंकार** 1. उदात्त : कृष्ण के औदात्य (महत्ता, शौर्य) का कथन।	1. कार्तिक-स्नान पद—5. (भा.-ग्रं.) 2. देवकी, पृ०—160. 3. सूरसागर, पद–1105, 1217. 1572, 3648, 4668.
2. काव्यलिंग—(1) निराश न होने का हेतु शकटासुर का नाश।	महारास, पृ०—128.
(2) सोच में पड़ने का हेतु शकट-वध।	सूरसागर, पद—3544.
3. स्मरण—गोपियों द्वारा कृष्ण के कार्यों का स्मरण।	तन्मय-लीला पद—3. (भा.-ग्रं.)

(2) दृष्टान्त

होनी की प्रवलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद 2016.

(3) उल्लेख

1. केशी आदि असुरों का कृष्ण के पौरुष को स्मरण कर भयभीत होना।	कृष्णायन, 1।147.
2. कृष्ण पर आये कष्टों के सम्बन्ध में देवकी द्वारा चिन्ता।	देवकी, पृ०—79.

(4) वचन-वक्रता

1. शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताने के लिए।	कृष्णायन, 2।149.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. शक्ति की प्रामाणिकता। — सूरसागर, पद—1।16.
3. वियोग प्रस्तुतीकरण। — —वही, 4485.

(5) औचित्य

1. निन्दा — कृष्णायन, 2।149.
2. अलंकार — भारतेन्दु-ग्रंथावली.

तृणावर्त-वध

(1) अलंकार

1. उदात्त--कृष्ण की महत्ता और शौर्य का कथन। — 1. ब्रज-विहार, पृ०—10.
2. प्रात: स्मरण स्तोत्र, पद—5. (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
3. देवकी, पृ०—160.
4. सूरसागर, पद—27, 1046, 1105, 1214, 1572, 3646, 3648, 3649, 4668.

2. उदाहरण-दुष्टों का उदाहरण। — महारास, पृ०—158.
3. काव्यलिंग-(1) सबके दुखहरण का हेतु तृणावर्त संहार। — महारास, पृ०—128.
(2) सोच में पड़ने का हेतु तृणावर्त-वध। — सूरसागर, पद—3544.
(3) न डरने का हेतु तृणावर्त-वध। — —वही, 3595.
4. रूपकातिशयोक्ति : परिकर-केवल सांसारिक आधि-व्याधि के उपमान का उल्लेख। श्यामघन साभिप्राय विशेषण। — निवेदन-पंचक, पद—1. (भारतेन्दु-ग्रंथावली)

(2) दृष्टांत

1. श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि। — अलौकिक लीला, 5।36.
2. होनी की प्रबलता की पुष्टि। — सूरसागर, पद—2016.

(3) उल्लेख

1. मथुरावासियों द्वारा कृष्ण के द्वारा किये महान कार्यों की चर्चा। — कृष्णायन, 2।24.
2. केशी आदि असुरों द्वारा कृष्ण के पौरुष को स्मरण कर भयभीत होना। — कृष्णायन 1।147.
3. ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आये कष्टों का उल्लेख। — कृष्णायन, 2।43.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) प्रतीक

तृणावर्त आसुरी वृत्तियों का पोषक।दुष्ट।	1. गोपिका, पृ०—28. 2. द्वापर, पृ०—162.
तृणावर्त-आधि-व्याधि।	निवेदन-पंचक (भा०-ग्रं०) पृ०—719.

(5) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक विरह।	महारास, पृ०—165.
2. बल की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद—1116.
3. वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद—4363, 4485, 4687.
4. स्मरण, उपालम्भ।	सूरसागर, पद—4648.

(5) औचित्य

1. विचार	द्वापर, पृ०—57.
2. पद	निवेदन-पंचक, पद—1. (भा० ग्रं०)

कृष्ण का मिट्टी खाना

(1) अलंकार

1. काव्यलिंग-शिकायत में हेतु मिट्टी का खाना और कृष्ण को डराने धमकाने का कारण मिट्टी उगलवाना।	देवकी, पृ०—91.
2. सन्देह-दृष्टान्त द्वारा निश्चयान्त सन्देह।	देवकी—91.

(2) औचित्य

उपालम्भ।	—वही-

कृष्ण का ऊखल-बंधन

(1) अलंकार

काव्यलिंग-ऊखल से बँधने का हेतु कुसंग।	कूबरी—6।13.

(2) औचित्य

उपालम्भ।	कूबरी—3।8.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमलार्जुन-उद्धार

(1) अलंकार

1. उदात्त कृष्ण का औदात्य-वर्णन।	1. ललन-सागर, पद--54, 481, 496, 944.
	2. सूरसागर, पद--7, 25, 27' 1117, 3645.
2. काव्यलिंग : (1) हेतु-भक्त हित।	सूरसागर, पद—26.
(2) भरोसे का हेतु पतितपावनता।	सूरसागर, पद—122.

(2) उल्लेख

ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आये कष्टों का उल्लेख।	प्रिय प्रवास, 2।46.

(3) वचन-वक्रता

1. शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताने के लिए।	कृष्णायन, 2।149.
2. वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद—4363.

वत्सासुर-वध

(1) अलंकार

1. अपह्नुति : वत्स का निषेध कर वाघ का आरोप।	द्वापर, पृ०—36.
2. उदात्त : कृष्ण की महानता का कथन।	प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद—5. (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
3. काव्यलिंग : यथाक्रम-गो-घातक होने का कारण वत्स-वध, वत्स-वध से गो-घातक का सम्बन्ध।	द्वापर, पृ०—36.

(2) दृष्टान्त

बलराम और श्रीकृष्ण के पौरुष का कथन।	अलौकिक-लीला,—5।37.

(3) उल्लेख

1. केशी आदि असुरों का कृष्ण के पौरुष को स्मरण कर भयभीत होना।	कृष्णायन, 1।147.
2. ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आये कष्टों का उल्लेख।	प्रिय-प्रवास—2।47.

(4) वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक विरह।	महारास, पृ०—165.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकासुर-वध

(1) अलंकार

(1) उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन। — 1. प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भा० ग्रं०)
2. द्वापर, पृ० 73.
3. महारास, पृ० 130.
4. देवकी, पृ० 160.
5. द्वारका-प्रवेश, पृ० 26.
6. सूरसागर, पद-27, 1105, 1214, 1572, 3645, 3646, 2648, 4698, 4687.

(2) उदाहरण 1. व्रज जनों पर कृपा करने के लिए उदाहरण। — व्रजचन्द्र विनोद (पूर्वार्द्ध) पृ० 132.

2. दुष्टों का उदाहरण। — सूरसागर, पद-158.

(3) काव्यलिंग—1. सोच में न पड़ने का हेतु वक-वध। — सूरसागर, पद-3544.

2. न डरने का हेतु वक्र-वध। — वही-3596.

(4) स्मरण—गोपियों द्वारा कृष्ण के कार्य का स्मरण। — तन्मय-लीला, पद-3 (भा०ग्रं०)

(2) दृष्टान्त

वलराम व श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि। — अलौकिक-लीला, 5।36.

(3) उल्लेख

1. कृष्ण के रजक का अपने सजातियों के वध के सम्बन्ध में कृष्ण का कथन। — कृष्णायन-2।18.

2. मथुरावासियों द्वारा कृष्ण के द्वारा किये गये महान कार्यों की चर्चा। — कृष्णायन-2।24.

3. व्रजवासियों द्वारा व्रज में आये कष्टों का उल्लेख। — कृष्णायन-2।47.

4. कृष्ण पर आये कष्टों की देवकी द्वारा चिन्ता। — देवकी-पृ० 79.

(4) प्रतीक

बकासुर-दुष्ट व्यक्ति। — मधुपर्क, 5।63.

बकासुर-अन्यायी। — गोपिका, पृ० 109, 177.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(5) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक विरह।	महारास, पृ० 165.
2. वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए।	द्वापर, पृ० 185.
3. शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताना।	1. कृष्णायन, 2।149, 3. द्वारका प्रवेश, पृ० 59-60.
4. बल की प्रमाणिकता।	सूरसागर, पद-1115, 3433, 3823, 3826.
5. वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद-4363, 4485, 4482.

(5) औचित्य

1. निन्दा।	कृष्णायन, 2।149.
2. विप्रलम्भ शृंगार।	भारतेन्दु ग्रंथावली

अघासुर-वध

(1) अलंकार

1. उदात्त —कृष्ण के औदात्य का कथन।	1. कार्तिक-स्नान, पद-5 (भा०ग्रं०) 2. प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भ०ग्रं०) 3. महारास, पृ० 129. 4. देवकी, पृ० 160. 5. द्वारका-प्रवेश, पृ० 26. 6. सूरसागर, पद-27, 121, 1105, 1214, 1572, 3646, 3648, 4668.
2. उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158.
3. काव्यलिंग—न डरने का हेतु अघासुर वध।	वही-3595.

(2) दृष्टान्त

श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक लीला, 5।36.

(3) प्रतीक

अघासुर—दुष्ट या आसुरी वृत्तियों का पोषक।	1. गोपिका, पृ० 177. 2. मधुपर्क, 5।63.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) उल्लेख

1. मथुरावासियों द्वारा कृष्ण के द्वारा किये महान कार्यों की चिन्ता।	कृष्णायन, 2।24.
2. कृष्ण पर आये कष्टों की देवकी द्वारा चिन्ता।	देवकी, पृ० 79.
3. एक ग्वाले द्वारा कृष्ण के कार्यों का उद्धव से कथन।	प्रिय प्रवास, 13।37.
4. ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आये कष्टों का उल्लेख।	कृष्णायन, 2।47.
5. ब्रज के ग्वाल-वालों द्वारा कृष्ण के कार्यों का स्मरण।	द्वापर, पृ० 73.

(5) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक विरह।	महारास, पृ० 165.
2. वियोग के प्रस्तुतीकरण।	1. द्वापर, 185. 2. द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-60. 3. सूरसागर, पद-4363, 4607, 4702.
3. शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-1115, 1116, 3832.

(6) औचित्य

विप्रलम्भमूलक शृंगार।	भारतेन्दु-ग्रंथावली

(7) जीवन-दर्शन

ईश्वर की आस्था।	प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 118. (अलौकिक-लीला)

ब्रह्मा-मोह

अलंकार

1. उदात्त—श्रीकृष्ण की महत्ता का कथन।	सुवर्णा पृ० 62.
2. कृष्ण के औदात्य का कथन।	सूरसागर, पद-30, 4668.

कालिय-दहन

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास-दुख देकर सुख प्राप्ति का समर्थन।	राधा, पृ० 51.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. उदात्त—कृष्ण की महत्ता व शौर्य का वर्णन।	1. कार्तिक-स्नान, पद-5, (भा० ग्रं०) 2. गति गोविन्दानन्द, पद-15, (भा० ग्रं०) 1. प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भा० ग्रं०) 4. अलौकिक-लीला, सर्ग-3. (प्रेमघन-सर्वस्व) 5. ललन-सागर, पद-54. 6. द्वापर, पृ० 73, 221. 7. सूरसागर, पद-27, 121, 1572, 3648.
3. उदात्त-रूपक (1) कृष्ण का औदात्य-कथन।	सुवर्णा, पृ० 61.
(2) जीवन पर यमुना का आरोप अन्तः-स्थल पर जल का आरोप।	
4. उदाहरण—राधा के दृग-नर्तन में कृष्ण के कालिय नर्तन का साम्य। क्रियायें दो अतः उदाहरण।	प्रेम-माधुरी, पद—33 (भा० ग्रं०)
5. उपमा—कर्ण के लिए उपमान।	सुवर्णा, पृ०—5.
6. काकु-वक्रोक्ति—कृष्ण का दुबर्लता की व्यंजना।	राधा, पृ०—31.
7. काव्यलिंग—निशंक करने में हेतु काली का आतंक मिटाना।	महारास, पृ० 129.
8. प्रतीप, अनन्वय—1. वेणी-सी काली बताये जाने के कारण प्रतीप।	प्रेममाधुरी, पद—33. (भा०ग्रं०)
2. 'उपमा न चाली है' में अनन्वय।	
9. रूपक—1. घृणा पर कालिय नाग का आरोप।	अंधायुग, पृ०—75.
2. काम पर कालिय का आरोप	सुवर्णा, पृ० 62, 145.

(2) दृष्टान्त

1. पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला—5।37.
2. कंस के कुचक्रों की पुष्टि।	मधुपर्क—10।13.

(3) प्रतीक

1. विषधर काली-भयंकर कष्ट	शृंगार-लहरी, पद—66. (रत्नाकर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. कालिय-विष भयंकर कष्ट — गोपिका, पृ० 67.
3. कालिय-अन्यायी, दुष्ट — गोपिका, पृ०—109.
4. कालिय-दुष्ट व्यक्ति — गोपिका, पृ० —177.
5. कालिय-अशुद्ध हृदय — सुवर्णा, पृ०— 155.

(4) उल्लेख

1. यशोदा द्वारा कृष्ण की बाल-लीलाओं का उल्लेख। — द्वापर, पृ०—24.

2. कृष्ण द्वारा किये गये कार्यों का उद्धव से एक वृह गोप का कथन। — प्रिय-प्रवास, 11।11-39.

3. राधा द्वारा कृष्ण के द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख। — 1. कनुप्रिया, पृ०—38. 2. राधा, पृ० 45.

(5) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक विरह। — महारास, पृ० 165.
2. वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए। — प्रियप्रवास—10।95.
3. शक्ति की प्रामाणिकता। — सूरसागर, पद—1116.
4. विप्रलम्भमूलक। — सूरसागर, पद—3823, 3826, 4482, 4687, 4702.

(6) औचित्य

1. मंगलाचरण। — वीर सतसई, पृ० 1.
2. पश्चाताप। — देवकी, पृ०—111.

(7) जीवन-दर्शन

1. गर्वत्याग। — विश्राम-सागर, पृ०—331.
2. ईश्वर-आस्था। — प्रेमघन सर्वस्व, पृ०—118. (अलौकिक-लीला)

दावानल-पान

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) कृष्ण का औदात्य कथन। — 1. अलौकिक-लीला, सर्ग—3 (प्रेमघन-सर्वस्व) 2. सूरसागर, पद—27, 121.

(2) कृष्ण की प्रतिज्ञावद्ध शूरता का वर्णन। — महारास, पृ०—129.

2. उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण। — सूरसागर, पद—158.

3. काव्यलिंग—(1) संघ सम्पदा का हेतु व्यापक-निन्दा। — द्वापर, पृ०—57.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) भक्त हित हेतु।	सूरसागर, पद – 26.
4. परिकर—दावानल पायी साभिप्राय विशेषण।	सुवर्णा, पृ०—138.
5. रूपक—(1) आलस्य पर दावानल का आरोप।	प्रवोधिनी, पद—17. (भा०ग्रं०)
(2) आवागमन (जन्म-मरण) पर दावानल का आरोप।	भगवान श्रीकृष्णलीलामृत पृ०-1.
6. रूपक, परिकर, श्लेष—(1) दुसह दुख पर दावानल का आरोप तथा श्याम पर घन का आरोप।	निवदेन-पंचक—1. (भा० ग्रं०)
(2) श्यामघन साभिप्राय विशेषण।	
(3) जीवन में श्लेष।	
7. व्यतिरेक—गोपियों के विरहताप को कालिय नाग की मुख ज्वाला से अधिक उष्ण बताया जाना।	उद्धव-शतक, पद—131.

(2) दृष्टान्त

1. पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला—5।36.
2. भक्त वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद—17.

(3) प्रतीक

दाव दाह-भयंकर आपत्ति।	गोपिका, पृ०—67.

(4) उल्लेख

एक गोप का वन में कृष्ण द्वार किये गये कार्यों का उद्धव से कथन।	प्रिय प्रवास—11।96.

(5) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक विरह	1. भंवरगीत (प्रागन) पद—31. 2. महारास, पृ०—165.
2. शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद—1115, 1116.
3. प्रेम की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद—3433.
4. वियोग का प्रस्तुतीकरण।	वही—3826, 4408.

(6) औचित्य

1. विशेषण, आर्शीवचन।	सुवर्णा, पृ० 138.
2. विचार।	द्वापर, पृ० 57.
3. उपालम्भ।	कूबरी, पृ० 318.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. पद। — निवदेन-पंचक, पद—1. (भा० ग्रं०)

श्रीकृष्ण द्वारा गोचारण

(1) अलंकार

उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन। — प्रात: स्मरण स्तोत्र, पद-5. (भा० ग्रं०)

(2) वचन वक्रता

अधिक्षेपमूलक (अनुचित निन्दा) — 1. ऊषाहरण, पृ० 52. 2. अंगराज, पृ० 134.

(3) औचित्य

1. वात्सल्य रसौचित्य। — 1. भंवरगीत, पृ० 77.
2. निन्दा। — 2. ऊषाहरण, पृ० 52.

कृष्ण द्वारा गोपी चीर हरण

अलंकार

1. हीनोदात्त—चीर हरण लोक दृष्टि से हीन कार्य। — 1. प्रेम-मालिका, पद-92 (भा० ग्रं०) 2. ललन सागर, पद-969. 3. महारास, पृ० 129.

2. रूपक—कृष्ण प्रेम पर कालिन्दी का और सर्वात्मनेन पर तन मन अर्पण की कविता का आरोप। — सुवर्णा, 145.

3. वचन-वक्रता — उपालम्भमूलक भक्ति। — हृदय-तरंग, पृ० 15.

गोवर्धन धारण/इन्द्रमान मर्दन

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदायक होने का समर्थन। — विश्राम-सागर, पृ० 331.

2. उदात्त—(1) कृष्ण के औदात्य का कथन। — 1. नटनागर-विनोद, पृ० 331. 2. वृज-विहार, पृ० 10. 3. प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5 (भा० ग्रं०) 4. सतसई-शृंगार, पद-18, 19, 20 (भा० ग्रं०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	5. भंवरगीत, पृ० 57.
	6. ललन-सागर, पद-496.
	7. मधुपुरी, 2।20.
	8. द्वापर, पृ० 73.
	9. सुवर्णा, पृ० 62, 146.
	10. राधा, पृ० 55.
(2) गोपियों द्वारा आयोजित रास (नाटक) की श्रेष्ठता व्यंजित।	महारास, पृ० 129.
3. उदात्त, काकुवक्रोक्ति—(1) कृष्ण का पौरुष व्यंजित।	कनुप्रिया, पृ० 37.
(2) तुम वह कृष्ण नहीं से काकु वक्रोक्ति।	
4. उदाहरण—कृष्ण निवारण का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158.
5. काव्यलिंग—(1) व्रज के लोगों के उबारने का हेतु गोवर्धन धारण।	राग-संग्रह, पद-120 (भा० ग्रं०)
(2) वात रहने का हेतु गिरवर धारण।	उद्धव-शतक, पद-94.
(3) गोवर्धन न उठाने का कारण कूवरी के कूबर से न उबर पाना।	उद्धव-शतक, पद-95.
(4) व्रज का जलने का कारण कृष्ण का अन्यत्र चला जाना।	उद्धव-शतक (रसाल) पद-62.
(5) व्रज को डूबने से बचाने का हेतु कृष्ण का व्रज में आना।	कृष्णायन—2।180.
(6) कहने में उन्माद स्थिति कारण।	तन्मय लीला, पद-3 (भा० ग्रं०)
(7) हेतु भक्त-हित।	सूरसागर, पद-26.
(8) भरोसे का हेतु पतित पावनता।	सूरसागर, पद-122.
(9) न डरने का हेतु गोवर्धन धारण।	सूरसागर, पद-3595.
6. प्रत्यनीक—इन्द्र द्वारा वर्णन कर व्रजवासियों से बदला लेना।	भ्रमर-दूत (हृदय-तरंग) पृ० 58.
7. प्रत्यनीक, यमक—(1) इन्द्र द्वारा अपने विरोधी व्रजवासियों से बदला लेने में प्रत्यनीक।	उद्धल-शतक (रसाल) पद-54
(2) घनश्याम शब्द के अलग-अलग अर्थ (कृष्ण, बादल)।	
8. यमक—व्रजवारिन के दो अर्थ व्यंजित, प्रथम व्रज की बाड़ियाँ, द्वितीय व्रजबालाएँ।	उद्धव-शतक (रसाल) पद-62.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

1. बलराम और श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक-लीला—5।37. (प्रेमघन-सर्वस्व)
2. भगवान द्वारा शरणागत की रक्षा करने पुष्टि।	सूरसागर, पद-14.
3. भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-17, 22, 171, 202.
4. भगवान के भक्तों पर कभी कष्ट न पड़ने की पुष्टि।	सूरसागर, पृ० 37.

(3) प्रतीक

1. गोवर्धन-यश स्थिरता।	द्वापर, पृ० 193.
2. सुरपति-अध्यात्म। पहाड़-गोवर्धन-भौतिकता।	राधा, पृ० 88.

(4) उल्लेख

1. बलराम द्वारा अक्रूर को व्रज अवलोकन कराना।	कृष्णायन, 2।30.
2. गोपदल का ब्रज में कृष्ण द्वारा किये गये कार्यों का उद्धव से कथन।	प्रिय प्रवास, 12।20-70.
3. राधा का कृष्ण के द्वारा किये गये कार्यों का स्मरण।	महारास, पृ० 107.
4. सात्यकी द्वारा यादवों (कृष्ण) के शौर्य का उल्लेख।	सेनापति कर्ण, पृ० 12.

(5) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक विरह।	1. भंवरगीत (प्रागन) पद—31. 2. महारास, पृ०—165. 3. प्रियप्रवास, 10/95. 4. कृष्णायन, 1/183.
2. शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताना।	कृष्णायन, 2/30, 2/149.
3. वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद—4363, 4408, 4482, 4687.
4. उपालम्भमूलक स्मरण।	सूरसागर, पद—4648.

(6) औचित्य

1. रस (विप्रलम्भशृंगार)।	1. कृष्णायन, 2।180.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	2. भा० ग्रंथावली.
2. क्रिया।	उद्धव-शतक (रसाल) पद—62, 213.
3. विचार।	राधा, पृ०—88.
4. नाम।	द्वापर, पृ०—71.
5. निन्दा।	कृष्णायन, 3।127.
6. उपालम्भ।	कूबरी, 3।8.
7. प्रतिकार।	देवकी, पृ०—133.
8. विनोद।	सूरसागर, पद—1691.

(7) **जीवन-दर्शन**

1. भौतिकता और अध्यात्म का समन्वय।	राधा, पृ०—88.
2. ईश्वर-आस्था।	प्रेमघन-सर्वस्व, पृ०—118. (अलौकिक लीला)

वरुण-लोक से नन्द को छुड़ाना

(1) **अलंकार**

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन। सूरसागर, पृ०—27.

(2) **दृष्टान्त**

भक्त वत्सलता की पुष्टि। —वही—17.

(3) **उल्लेख**

नन्द द्वारा कृष्ण के कार्यों का उल्लेख। प्रिय-प्रवास, 13।36.

रास-लीला

(1) **वचन-वक्रता**

शत्रु के ख्याति प्राप्ति कार्यों को तुच्छ बताने के लिए। कृष्णायन, 2।149.

(2) **औचित्य**

1. निन्दा।	कृष्णायन, 2।149.
2. विप्रलम्भ श्रृंगार।	भा०-ग्रंथावली.

सुदर्शन उद्धार

1. **अलंकार**—उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन। सूरसागर, पद-679.

2. **दृष्टान्त**—वलराम और श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि। अलौकिक-लीला, 5।37.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. उल्लेख--नन्द द्वारा कृष्ण के कार्यों का उल्लेख। — प्रिय-प्रवास, 13।37.

शंख-चूड़ वध

1. उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन। — सूरसागर, पद-27.

2. दृष्टान्त—श्रीकृष्ण के पौरुष का कथन। — अलौकिक लीला, 5।37. (प्रेमघन-सर्वस्व)

अरिष्टासुर/वृषभासुर वध

(1) अलंकार

1. उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन। — सूरसागर, 3433, 3826.

2. काव्यलिंग—भरोसे का हेतु पतित पावनता। — सूरसागर, पद-122.

(2) दृष्टान्त

1. होनी की प्रबलता की पुष्टि। — सूरसागर, पद-2016.

2, पौरुष की पुष्टि। — अलौकिक लीला, 5।36. (प्रे.-स०)

(3) उल्लेख

1. भेजे गये असुरों के वध से कंस को दुख होना। — प्रियप्रवास, 1।164.

2. ब्रजवासियों द्वारा ब्रज में आये कष्टों का उल्लेख। — प्रिय प्रवास, 2।46.

3. एक ग्वाले द्वारा कृष्ण के कार्यों का उद्धव से कथन। — प्रियप्रवास, 13।61-62.

(4) वचन-वक्रता

1. शक्ति की प्रामाणिकता। — सूरसागर, पद-1।16.

2. वियोग के प्रस्तुतीकरण के लिए। — सूरसागर, पद-4485, 4702.

3. उपालम्भमूलक विरह। — महारास, पृ० 165.

4. शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताना। — कृष्णायन, 2।149.

(5) औचित्य

निन्दा। — कृष्णायन, 2।149.

(6) जीवन-दर्शन

ईश्वर में आस्था। — (अलौकिक लीला) प्रेमघन-सर्वस्व पृ० 118.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशी-वध

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।	1. सूरसागर, पद-27, 120, 121 123, 1214, 3.46, 3648, 3649, 3668. 2. ब्रज-विहार, पृ० 10. 3. प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद-5. (भारतेन्दु-ग्रंथावली) 4. देवकी, पृ० 160.
2. उदाहरण—खलों का उदाहरण।	सूरसागर, पृ० 158.
3. काव्यलिंग—सोच में न पड़ने का हेतु केशी-वध।	सूरसागर, पद-3544.

(2) दृष्टान्त

1. अहंकार से नाश।	सूरसागर, पद-54.
2. होनी की प्रवलता।	सूरसागर, पद-2016.
3. पौरुष की पुष्टि।	अलौकिक लीला-5156. (प्रे.-स.)

(3) उल्लेख

1. कंस के रजक का अपने सजातियों के वध का कृष्ण से कथन।	कृष्णायन, 2।18.
2. मथुरावासियों का कृष्ण के द्वारा किये गये महान कार्यों की चर्चा करना।	कृष्णायन, 2।24.
3. एक ग्वाले द्वारा कृष्ण के कार्यों का उद्धव से कथन।	प्रियप्रवास, 13।58.
4. कृष्ण पर पड़े कष्टों की देवकी द्वारा चिन्ता।	देवकी, पृ० 79.

(4) वचन-वक्रता

1. ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताने के लिए।	द्वारका प्रवेश. पृ० 59-60.
2. शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर. पद-116.
3. वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद-44, 85.

(5) औचित्य

मंगलाचरण।	वीर-सतसई, पृ० 1.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(6) जीवन-दर्शन

ईश्वर की आस्था। — प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 118. (अलौकिक-लीला)

व्योमासुर-वध

(1) अलंकार

उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन। — द्वारका-प्रवेश, पृ० 26.

(2) दृष्टान्त

श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि। — अलौकिक लीला, 5।37. (प्रे० स०)

(3) उल्लेख

1. भेजे गये असुरों का वध सुनकर कंस को दुख होना। — कृष्णायन, 1।164.
2. कंस के रजक का अपने सजातियों को वध का कृष्ण का कथन। — कृष्णायन, 2।18.
3. मथुरावासियों द्वारा कृष्ण द्वारा किये गये महान कार्यों की चर्चा। — कृष्णायन, 2।24.
4. व्रजवासियों का ब्रज में आये कष्टों का उल्लेख। — प्रिय-प्रवास, 2।48.
5. एक ग्वाले द्वारा कृष्ण के कार्यों का उद्धव से कथन। — प्रिय-प्रवास, 13।63-68.

कुब्जा पर कृपा

(1) अलंकार

1. उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन। — सूरसागर, पद-25, 95, 3716, 3717.
2. काव्यलिंग—दुख का कारण कृष्ण का कूबरी का मित्र होना। — ललन-सागर, पद-278.
3. रूपक, रूपकातिशयोक्ति—(1) कूबरी पर छाछ का आरोप। — ललन-सागर, पद-1276

   (2) गोपियों का उल्लेख कर दधि-माखन (उपमान का) ही उल्लेख।
4. व्यतिरेक—प्रेमाचल (उपमेय) में कूबरी के कूबर (उपमान) से अधिक गुरुता। — उद्धव-शतक, पद—81.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद—21, 35.

(3) प्रतीक

1. कुब्जा-डरावनी।	गोपिका, पृ० 203.
2. कुब्ज-संस्कार-भोंड़े संस्कार।	राधा, पृ० 78.

(4) उल्लेख

किसी गोपी (राधा) का विरह में उपालम्भ।	1. प्रेम-तरंग, पद—80, 87. (भा० ग्रं०) 2. प्रेम-प्रलाप, पद—2. (भा०ग्रं०)

(5) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद—45, 71, 72, 91, 4445, 4473, 4491, 4499, 4527, 4613.
2. वियोग प्रस्तुतीकरण।	1. सूरसागर, पद—4154, 2. उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद—88.
3. उपालम्भमूलक विरह।	1. उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद—52. 69, 78, 79, 82, 84. 2. ललन-सागर, पद—896. 3. प्रकीर्ण पद्यावली, पद—23 (रत्नाकर)
4. विपरीत लक्षणामूलक।	1. कूबरी, 4।13. 2. उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद—85.

(6) औचित्य

1. वाक्य	उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद--52.
2. विशेषण	कूबरी, 4।13.
3. अभिप्राय	ललन-सागर, पद—896.
4. प्रेम	कूबरी, 4।13.
5. उपालम्भ	भंवरगीत, पद—10, 23, 37.
6. परिणाम	कूबरी, 6।13.
7. हास्य	उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद-85.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजक पर कृपा

अलंकार

1. उदात्त— कृष्ण का औदात्य-कथन। सूरसागर, पद—120, 3649, 3698, 3704, 3706, 4103.

2. उदाहरण— दुष्टों के लिए उदाहरण। सूरसागर, पद—158.

कुवलयापीड़-वध

(1) अलंकार

1. उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन। सूरसागर, पद—27, 36, 96, 3698, 3704, 4103.

2. उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण। सूरसागर, पद—158.

3. काव्यलिंग/परिवृत्त— (1) गजेन्द्र को प्राण देने में दया दरसाना का कारण (2) कुवलया से प्राण लेकर गजेन्द्र को देने में परिवृत्त। हृदय-तरंग, पृ० 15 (उपालम्भ)

4. विषम—कुवलया जैसे मदमस्त गजेन्द्र और कृष्ण जैसे सुकुमार का एक स्थान पर वर्णन। प्रिय-प्रवास, पृ० 31.

(2) दृष्टान्त

श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि। अलौकिक लीला, 5।36 (प्रे० सर्वस्व)

(3) उल्लेख

यशोदा का कृष्ण द्वारा मथुरा में किये गये कार्यों का उल्लेख। प्रिय प्रवास, 10।62.

(4) औचित्य

विचार-औचित्य। द्वापर, पृ० 163.

(5) जीवन-दर्शन

ईश्वर में आस्था। प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 118 (अलौकिक लीला)

चाणूर और मुष्टिक वध

(1) अलंकार

1. उदात्त—वलराम व श्रीकृष्ण का औदात्य कथन। सूरसागर, पद—27, 3696, 3698, 3704, 3705, 3706, 3716, 4103.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. उदाहरण—दुष्टों के लिए उदाहरण।	सूरसागर, पद—158.
3. काकु-वक्रोक्ति--काकु-वक्रोक्तिसाथ के कृष्ण के बल-औदात्य का कथन।	द्वारका-प्रवेश, पृ० 41.

(2) उल्लेख

यशोदा का कृष्ण द्वारा मथुरा में किये गये कार्यों का उल्लेख।	प्रिय प्रवास—10।62.

(3) वचन-वक्रता

वियोग प्रस्तुतीकरण।	1. सूरसागर, पद–44, 3966, 4154. 2. उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद—88.

कृष्ण द्वारा कंस वध

(1) अलंकार

1. उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन।	1. सूरसागर, पद—27, 121, 123, 3704, 3705, 3716. 2. ब्रज-विहार, पृ० 10. 3. भ्रमरदूत, पृ० 51 (हृदय-तरंग) 4. प्रातः स्मरण स्तोत्र, पद—5. (भा० ग्रं०) 5. ललन-सागर, पद—481. 6. कृष्णायन—4।1. 7. द्वारका प्रवेश, पृ० 26. 8. ऊषा-हरण, पृ० 42. 9. सुवर्णा, पृ० 62.
2. उदात्त। रूपक—(1) कृष्ण के शौर्य का कथन। (2) कंस पर करि के आरोप के कारण कृष्ण पर केहरि का आरोप, अतः परम्परित।	वीर सतसई, पृ० 1.
3. उदात्त, काव्यलिंग—(1) कृष्ण का औदात्य कथन। (2) कंस के विनास का हेतु धर्म-विनाश।	कृष्णायन—7।47.
4. उदाहरण—दुष्टों के लिए उदाहरण।	सूरसागर, पृ० 158.
5. उपमा—विश्वद्रोहरत पापियों के लिए उपमान।	मधुपुरी—2।19.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6. काकु-वक्रोक्ति—काकु-वक्रोक्ति के साथ कृष्ण के बल-औदात्य का कथन।	द्वारका प्रवेश. पृ० 41.

(2) दृष्टान्त

1. भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-17.
2. अहंकार से नाश।	सूरसागर, पद-54.
3. होनी की प्रबलता की पुष्टि।	विश्राम-सागर, पृ० 29.

(3) उल्लेख

अर्जुन द्वारा कृष्ण के ऐश्वर्य का कथन।	मधुपर्क-13।21.

(4) वचन-वक्रता

1. शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-1115.
2. वियोग प्रस्तुतीकरण।	सूरसागर, पद-4154, 4687.
3. निन्दमूलक उपहास।	मधु-मुकुल, पद-59. (भा०ग्रं०)
4. शत्रु के ख्याति प्राप्त कार्यों को तुच्छ बताने के लिए।	द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-60.

(5) औचित्य

1. मंगलाचरण।	वीर-सतसाई, पृ० 1.
2. कुल।	ऊषा-हरण, पृ० 41.

(6) जीवन-दर्शन

1. नियतिवाद।	विश्राम सागर, पृ० 291.
2. पुरुषार्थ।	द्वापर, पृ० 60.
3. लोक-कल्याण।	कृष्णायन, 7।47.

मृत गुरु पुत्र को जीवित करना

(1) अलंकार

1. उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन।	सूरसागर, पद-7, 27, 121.
2. उदाहरण—परीक्षित को जीवित करने के लिए उदाहरण।	कृष्णायन, 7।99.
3. उपमा—अभिमन्यु के लिए उपमान गुरु पुत्र।	जयद्रथ-वध, पृ० 57.

(2) दृष्टान्त

भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-17, 18.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक। — सूरसागर, पद-134, 135.

2. प्रेम की प्रामाणिकता। — —वही, 3433.

(4) औचित्य

भक्ति रसौचित्य — कृष्णायन, 7।99.

(5) जीवन-दर्शन

ईश्वर आस्था। — कृष्णायन, 7।99.

जरासंध के भय से कृष्ण का मथुरा त्यागना। युद्ध क्षेत्र से पलायन

(1) अलंकार

1. हीनोदात्त—युद्ध क्षेत्र से पलायन वीरोचित धर्म नहीं। — वीर-सतसई, पृ० 1.

(2) वचन-वक्रता

1. अधिक्षेपमूलक (अनुचित-निन्दा) — ऊषा हरण, पृ० 52.

(3) औचित्य

निन्दा। — ऊषा हरण, पृ० 52.

कालयवन-वध

(1) अंलकार

1. उदात्त—कृष्ण के शौर्य का कथन। — ऊषा हरण, पृ० 42.

2. उदात्त, काव्यलिंग—(1) कृष्ण का औदात्य कथन। — कृष्णायन, 7।47.

(2) कालयवन-वध का हेतु धर्म स्थापना।

3. उपमा—विदेशी शत्रुओं के लिए उपमान। — कृष्णायन, 7।145.

(2) उल्लेख

1. कृष्ण का धृतराष्ट्र से असुरों के आचरण का उल्लेख। — कृष्णायन, 5।49.

2. अर्जुन द्वारा कृष्ण के ऐश्वर्य का उल्लेख। — मधुपर्क, 13।21.

(3) औचित्य

कुल — ऊषा हरण, पृ० 42.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) जीवन-दर्शन

लोक कल्याण। कृष्णायन, 7।47.

रुक्मिणी-हरण

(1) अलंकार

1. उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन। ऊषा हरण, पृ० 42.

2. यमक—हरि के दो अर्थ (हरि-कृष्ण हरि-हरण करना। ललन सागर, पद-480-482.

(2) वचन-वक्रता

अधिक्षेपकमूलक (अनुचित निन्दा) ऊषा हरण, पृ 52.

(3) औचित्य

1, निन्दा ऊषा हरण, पृ० 52.

2. कुल ऊषा हरण, पृ० 42.

प्रद्युम्न-विवाह। शम्बरासुर वध

अलंकार

(उदात्त) प्रद्युम्न के शौर्य का कथन। ऊषा हरण, पृ० 43.

स्यमन्तक मणि आख्यान। शतधन्वा-वध

(1) अलंकार

1. उदात्त—(श्रीकृष्ण का जाबवन्त से युद्ध) कृष्ण का औदात्य-कथन। सूरसागर, पृ० 839.

2. काव्यलिंग—स्यमन्तक मणि के धारण करने का हेतु लोभ। कृष्णायन, 7।152.

(2) उल्लेख

कृष्ण का धृतराष्ट्र से असुरों के आचरण का उल्लेख। कृष्णायन, 5।49.

(3) वचन-वक्रता

शक्ति की प्रामाणिकता। सूरसागर, पृ० 745.

(4) औचित्य

1. अभिप्राय। कृष्णायन, 5।9.

2. विचार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौमासुर-वध

(1) अलंकार

1. उदात्त — कृष्ण का औदात्य कथन। — 1. कृष्णायन, 4।1. 2. ऊषा हरण, पृ० 42.

2. उदात्त, काव्यलिंग—(1) कृष्ण के औदात्य का कथन। (2) भौमासुर संहार का हेतु धर्म-स्थापना। — कृष्णायन, 7।47.

3. उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान। — कृष्णायन, 7।145.

(2) प्रतीक

नरकासुर-आसुरी वृत्तियों का पोषक दुष्ट व्यक्ति। — मधुपर्क, 5।63.

(3) औचित्य

कुल — ऊषा हरण, पृ० 42.

कृष्ण द्वारा परिजात-हरण

(1) अलंकार

उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन। — सुवर्णा, पृ० 62.

प्रतीक

पारिजात—जनता की सम्पति। — गोपिका, पृ० 221.

कृष्ण—बाणासुर युद्ध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के शौर्य का कथन। — कृष्णायन, 4।1.

कृष्ण का शिव से युद्ध

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के शौर्य का कथन। — कृष्णायन, 4।1.

कृष्ण के द्वारा पौण्ड्रक वध

(1) अलंकार

उदात्त, काव्यलिंग—(1) कृष्ण के औदात्य का कथन। — कृष्णायन, 7।47.

(2) पौण्ड्रक संहार का हेतु धर्म-स्थापना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) जीवन दर्शन

लोक-कल्याण । कृष्णायन, 7।47.

शाम्ब-विवाह

अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन । ऊषाहरण, पृ० 43.

जरासंध युद्ध/जरासंध-वध

(1) अलंकार

1। उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन । सूरसागर, पृ० 109, 121.

2. उदात्त, काव्यलिंग—(1) कृष्ण के औदात्य का कथन । कृष्णायन, 4।1, 4।48.

(2) जरासंध वध का हेतु धर्म-स्थापना । ऊषाहरण, पृ० 42.

3. उपमा—(1) रक्त पिपासुओं के लिए । कृष्णायन, 7।202,

(2) यदुवंशियों के लिए उपमान । कृष्णायन, 7।145.

(3) काकु-वक्रोक्ति—काकु-वक्रोक्ति से कृष्ण के औदात्य का कथन । द्वारका-प्रवेश, पृ० 41.

(2) दृष्टान्त

1. श्याम भजन से बड़प्पन की प्राप्ति । सूरसागर, पृ० 24.

2. कष्ट में भगवान सहायक । सूरसागर, पृ० 112, 113.

3. भक्त-वत्सलता की पुष्टि । सूरसागर, पृ० 171.

(3) उल्लेख

1. कृष्ण का धृतराष्ट्र से असुरों के आचरण का कथन । कृष्णायन, 5।49.

2. अर्जन द्वारा कृष्ण के ऐश्वर्य का कथन । मधुपर्क, 13।21.

3. सात्यकि का यदुवंशियों से कथन । सेनापति कर्ण, पृ० 12.

(4) औचित्य

कुल ऊषाहरण, पृ० 42.

(5) जीवन-दर्शन

लोक कल्याण । कृष्णायन, 7।47.

श्रीकृष्ण द्वारा राजसूय यज्ञ में पैर धोना

दृष्टान्त

1. भगवान की भक्ति-वत्सलता की पुष्टि । सूरसागर, पद—11.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. भगवान द्वारा जाति-पाँति कुल मर्यादा न मानने की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद—75.

श्रीकृष्ण की अग्र पूजा/शिशुपाल वध

(1) अलंकार

1. उदात्त--कृष्ण के औदात्य का कथन।	1. सुवर्णा, पृ० 62. 2. ललन-सागर, पद-481. 3. गोपिका, पृ० 161. 4. वीर सतसई, पृ० 1.
2. व्याजनिन्दा—दुर्योधन द्वारा कृष्ण की बड़ाई करते हुए व्याज से निन्दा।	सेनापति कर्ण, पृ० 22.

(2) दृष्टान्त

अहंकार से नाश अवश्य।	सूरसागर, पद-54.

(3) उल्लेख

1. अर्जुन द्वारा कृष्ण का ऐश्वर्य कथन।	मधुपर्क, 13।21.
2- (कृष्ण का यमघोषा को वचन देना) राजसूय यज्ञ के अवसर पर कृष्ण का शिशुपाल से कथन।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 59 (उ०)

शाल्व-वध

(1) अलंकार

1. उदात्त—काव्यलिंग (1) कृष्ण का औदात्य कथन।	कृष्णायन, 7।47.
2. शाल्व-–विनाश का हेतु धर्म स्थापना।	
3. उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान।	कृष्णायन, 7।145.

(2) जीवन-दर्शन

लोक कल्याण।	कृष्णायन, 7।47.

दन्तवक्र वध

उल्लेख

नारद का राजाओं से दंतवक्र का पूर्व-वृतांत कथन।	ब्रजचन्द-विनोद, पृ० 60 (उ०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदामा पर कृपा/सुदामा से मित्रता

(1) अलंकार

1. उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन।	1. सूरसागर, पद-7, 95, 121. 2. प्रेम-प्रलाप, पद-41 (भा.-ग्रं.) 3. ललन सागर, पद-481, 496. 4. सुवर्णा, पृ० 62, 147.
2. उदाद्ध—सोपालम्भ कृष्ण का औदात्य	हृदय तरंग, पृ० 203 (समस्या-पूर्ति)
3. काव्यलिंग—भक्त-हित हेतु।	सूरसागर, पद-26.

(2) दृष्टान्त

1. भक्त वत्सलता की पुष्टि।	1. सूरसागर, पद-18, 19, 20, 35. 2. प्रेम प्रलाप, पद-33 (भा.-ग्रं-)
2. कठिनाई में भगवान के सहायक होने की पुष्टि।	सूरसागर, पद-31.
3. भगवान के भक्तों को अभय प्राप्ति।	सूरसागर, पद-36
4. प्रेम से मोक्ष-पद की प्राप्ति।	सूरसागर, पद-176.
5. दीनों का दुख निवराण।	सूरसागर, पद—202.
6. भगवान की परम उदारता की पुष्टि।	विनय प्रेम-पचास, पद-36.

(3) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद-39,135.
2. प्रेम की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-3433.

(4) औचित्य

1. मित्र—औचित्य (2) आर्शीवचन।	देवकी, पृ० 128.

श्रीकृष्ण की श्रीदामा पर कृपा

(1)अलंकार

(उदात्त—श्री कृष्ण के औदात्य का कथन)।	हृदय-तरंग, पृ० 148 (मंगला-चरण)

(2) औचित्य

उपालम्भ।	कूबरी, 318.

कृष्ण का विदुर के घर साग खाना

(1) अलंकार

उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन।	1. सूरसागर, पद-11, 19, 20,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. विनय प्रेम पचासा, पद-38. (भारतेन्दु-ग्रंथावली)
3. सुवर्णा, पृ० 146.

(2) दृष्टान्त

भगवान की प्रेम की पुष्टि । — सूरसागर, पद-13.

(3) जीवन-दर्शन

समदर्शिता । — महारास, पृ० 162.

कृष्ण की आयुध न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा।

(1) अलंकार

उदात्त—कृष्ण का औदात्य-कथन । — सुवर्णा, पृ० 62.

(2) प्रतीक

निशस्त्रीकरण — वेणु लो गूंजे धरा, पृ० 100.

(3) जीवन-दर्शन

1. प्रण तोड़ना (मित्रभाव की रक्षा) — सुवर्णा, पृ० 146.
2. अहिंसा । — वेणु लो गूंजे धरा, पृ० 100.

कृष्ण का सारथी बनना

(1) अलंकार

1. उदात्त—श्रीकृष्ण का औदात्य कथन । — 1. सूरसागर, पृ० 282. 2. सुवर्णा, पृ० 62, 146.

परिकर—सारथी का प्रयोग साभिप्राय । — जयभारत, पृ० 55.

(2) दृष्टान्त

1. भक्त-वत्सलता की पुष्टि । — सूरसागर, पद-19, 23.
2. कष्ट में भगवान सहायक । — सूरसागर, पद-112-113.
3. होनी की प्रवलता की पुष्टि । — सूरसागर, पद-264.
4. भक्त के आगे भगवान की विवशता की पुष्टि । — प्रेम-प्रलाप, पद-30 (भा० ग्रं०)

(3) वचन-वक्रता

विचार प्रस्तुतीकरण के लिए । — जयद्रथ-वध, पृ० 35.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) औचित्य

भविष्यत् कथन। — जयभारत, पृ० 55.

(5) जीवन-दर्शन

मैत्री सम्बन्ध। — सुवर्णा, पृ० 156.

श्रीकृष्ण का अर्जुन को गीतोपदेश। विराट रूप दिखाना

(1) अलंकार

1. उदात्त—कृष्ण का औदात्य-कथन। — 1. जयद्रथ-वध, पृ० 95. 2. सुवर्णा, पृ० 62. 3. हृदय-तरंग, पृ० 122.

2. रूपक—गीता पर कन्या का आरोप। — सुवर्णा, पृ० 145.

(2) दृष्टांत

भगवान के कथित वचनों को स्मरण दिलाकर उनके तारने की क्षमता की पुष्टि। — दैन्य-प्रलाप, पृ० 65. (भा०-ग्रं०)

(3) प्रतीक

विराट-महान। — अंगराज, पृ० 83, 259.

(4) जीवन-दर्शन

1. कर्मवाद। — 1. अंगराज, पृ० 296. 2. जयद्रथ-वध, पृ० 35.

2. युद्ध-दर्शन। — अंगराज, पृ० 296.

कृष्ण का ब्राह्मण पुत्र को जीवित करना

(1) अलंकार

1. उदात्त, काव्यलिंग—(1) कृष्ण का औदात्य-वर्णन। — भंवर गीत, पृ० 56.

(2) विप्र का बालक लाने में हेतु पार्थ हित।

2. काव्यलिंग—भरोसे का हेतु द्विज पुत्र को जीवित करना। — सूरसागर, पद—121.

(2) दृष्टान्त

स्मरण से निर्भय पद प्राप्ति। — सूरसागर, पद—66.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यादवों का विनाश

(1) अलंकार

उदाहरण—कृष्ण के व्रजवासियों के पास जाने के लिए उदाहरण। — फेरि-मिलिवो, पृ० 172.

(2) दृष्टान्त

भगवान द्वारा जाति—पाँति कुल मर्यादा न मानने की प्रामाणिकता। — सूरसागर, पद—15.

कृष्ण की व्याध के वाण से मृत्यु/व्याध पर कृपा

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—बिना भगवान की इच्छा के कार्यों की असंभाव्यता का समर्थन। — व्रजचन्द्र विनोद, पृ० 463 (प्र०)
2. उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन। — सूरसार, पद—27, 67; 94, 119 123, 306.
   2. प्रेम प्रलाप, पद—41 (भा. ग्रं.)
3. उदात्त, सन्देह—भगवान के औदात्य का कथन, (2) तुम्हें याद हो कि न हो में सन्देह व्यंजित। — विनय प्रेम पचासा, पद—38. (भा०ग्रं०)
4. उदाहरण—(1) पतितों का उदाहरण। — सूरसागर, पद —158.
   (2) खलों का उदाहरण। — सूरसार, पद —204.
5. काव्यलिंग—उद्धार का हेतु काम लेना। — सूरसागर, पद—178.

(2) दृष्टान्त

1. प्रेम में किसी के कुल के विचार न करने की पुष्टि। — सूरसागर, पद—12.
2. हरि नाम स्मरण से मोक्ष। — सूरसागर पद—89.
3. बिना परिश्रम यश प्राप्ति। — वही, पद—132.
4. भगवत स्मरण से अभय पद प्राप्ति। — वही, पद—193.
5. भगवान की भक्त वत्सलता की पुष्टि। — 1. प्रेम प्रलाप, पद—22 (भा० ग्रं०)
   2. हृदय-तरंग, पृ० 147.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक। — सूरसागर, पद–138, 145, 178.

2. दीनता प्रदर्शन। — सूरसागर, पद—192.

(4) जीवन-दर्शन

आस्थावाद। — प्रेम प्रलाप, पद—41 (भा० ग्रं०)

कौरव-पाण्डव संघर्ष

कौरवों द्वारा भीम को विष देना

(1) अलंकार

1. काव्यलिंग—जहर देने में हेतु दुर्योधन का पाप-आत्मा होना। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 22.

(2) उल्लेख

1. दुर्योधन के दूत उलूक का युद्ध के लिए प्रेरित करने के लिए युधिष्ठिर से कथन। — कृष्णायन, 5।100.

2. श्रीकृष्ण का वलराम से दुर्योधन द्वारा किये गये अवांछनीय कार्यों का उल्लेख। — ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 416 (पू०)

(2) वचन-वक्रता

1. युद्ध की प्रेरणा के लिए। — कृष्णायन, 5।56.

2. सद् और असद् वृत्तियों के द्योतन के लिए। — द्वारका-प्रवेश, पृ० 59-60.

3. संवादों के लिए। — रश्मिरथी, पृ० 174.

(4) औचित्य

1. अभिप्राय। — पार्थपत्नी महासती, द्रौपदी, पृ० 168.169.

2. संवाद। — रश्मिरथी, पृ० 174.

(5) जीवन-दर्शन

मिथ्या-चरण त्याग। — 1. ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 399. (उ०)
2. कृष्णायन, 5।59,

कौरव-पान्डव द्यूत क्रीड़ा

(1) अलंकार

1. उपमा, काव्यलिंग—(1) अपकृता का — कृष्णायन, 6।271.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपमान कृष्ण ।

(2) अपकृति में पतियों द्वारा-हारा जाना तथा अरिकृत में वसन-कच-कर्षण ।

2. सार, काव्यलिंग—(1) द्यूत से युद्ध की उत्कृष्टता और युद्ध से शान्ति की उत्कृष्टता का वर्णन । — सुवर्णा, पृ० 52.

(2) विद्याएँ पुष्पित होने में हेतु शान्ति-स्थिति ।

(2) उल्लेख

1. दुर्योधन के दूत उलूक का युद्ध के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से युधिष्ठिर से कथन । — कृष्णायन, 5।100.

2. शकुनि का दुर्योधन से उसकी अदूर-दर्शिता के लिए कथन । — कृष्णायन, 6।231.

3. श्रीकृष्ण का बलराम से दुर्योधन द्वारा किये गये अवांछनीय कार्यों का उल्लेख । — ब्रजचन्द्र-विनोद, (उ०) पृ० 416.

(3) प्रतीक

शकुनि-कपटी, छली । — रश्मिरथी, पृ० 174.

(4) वचन-वक्रता

1. अनौचित्यमूलक । — कृष्णायन, 6।223.
2. अधिक्षेपमूलक (वास्तविक निन्दा) । — कृष्णायन, 6।167, 6।244.
3. युद्ध की प्रेरणा के लिए । — कृष्णायन, 5।56.
4. सद् और असद् वृत्तियों के लिए । — ब्रजचन्द्र, विनोद, पृ० 398-399.
5. संवादों के लिए । — रश्मिरथी, पृ० 174.

(5) औचित्य

1. निन्दा । — कृष्णायन, 6।233.
2. विचार । — रश्मिरथी, पृ० 174.

(6) जीवन-दर्शन

1. युद्ध-दर्शन । — सुवर्णा-52.
2. मिथ्याचरण-त्याग । — कृष्णायन, 5।56.

कौरवों द्वारा द्रौपदी का चीर हरण/द्रौपदी पर कृष्ण की कृपा

(1) अलंकार

1. अपह्नुति—द्रौपदी का निषेध कर कर्ण — अंगराज, पृ० 150.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पत्नी में सिन्दूरतिलका (सौभाग्यवती) चित्रा (चन्द्रिका) की स्थापना।	
2. उदात्त—(1) श्रीकृष्ण द्वारा द्रौपदी का चीर बढ़ाना। कृष्ण का औदात्य-कथन।	1. सूरसागर, पद—27, 30, 109, 119, 121, 190, 282, 306 2. ललन-सागर, पद-496.
(2) द्रौपदी का औदात्य-वर्णन।	कृष्णायन, 7।271.
3. उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158.
4. उदाहरण, उत्प्रेक्षा—वाणासुर की सभा में खड़ी ऊषा के लिए उदाहरण।	ऊषा-हरण, पृ 32.
5. काव्यलिंग—(1) भक्त हित हेतु।	सूरसागर, पद-26.
(2) भजने का हेतु भक्तों का ताप निवारण।	सूरसागर, पद-28.
(3) भरोसे का हेतु पतित पावनता।	—वही—122.
(4) वसन बढ़ने का कारण गोपी-वल्लभ ध्यान।	कृष्णायन, 5।94.
6. यमक (सभंग)—पदभंग से केशव व केश के अलग-अलग अर्थ व्यंजित केशव (कृष्ण) केश (बाल)।	वीर सतसई, पृ० 81.
7. संकर (उपमा, रूपक, उदाहरण)—	विनय प्रेम पचासा, पद-16.
(1) द्रौपदी चीर आशा का उपमान (उपमा)।	(भा०-ग्रं०)
(2) जीव में दुशासन का आरोप (रूपक)।	
(3) लाज रखने के लिए उदाहरण।	
8. सन्देह—(1) सावन की रात में द्रौपदी की सारी का सन्देह।	प्रेम-माधुरी, पद-67. (भा०-ग्रं०)
(2) दुशासन का अन्तर्द्वन्द्व-संदेह ध्वनित।	जयभारत, पृ० 205.
9. स्मरण—भगवान की भक्त-वत्सलता को याद कराया जाना।	विनय प्रेम पचासा, पद—38. (भा०-ग्रं०)

(2) दृष्टान्त

1. भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-16, 17, 18, 20, 21, 71. 2. हृदय-तरंग, पृ० 147-
2. कष्ट में भगवान सहायक।	सूरसागर, पद-112, 113.
3. भगवान के भक्तों को अभय प्राप्ति।	—वही, 36.
4. भगवान के भक्तों के कष्ट में न पड़ने की ख्याति।	—वही, 37.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5. प्रेम से मोक्ष पद प्राप्ति।	—वही-176.
6. होनी की प्रबलता की पुष्टि।	—वही-264.

(3) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक।	सूरसागर, पद-39.
2. उपालम्भमूलक भक्ति।	श्री विष्णु लहरी, पद-15. (रत्नाकर) 2. हृदय-तरंग पृ० 15.
3. अनौचित्य मूलक।	1. कृष्णायन, 6।223. 2. कृष्णायन (विसाहूराम) पृ० 414.
4. दूत कार्य के लिए।	1. उत्तर जय, पृ० 19. 2. कृष्णायन, 5।101.
5. विचार प्रस्तुतीकरण के लिए।	सेनापति कर्ण, पृ० 162.
6. औचित्यमूलक।	1. कृष्णायन, 4।155. 2. द्रौपदी, पृ० 46. 3. वीर सतसई पृ० 81.

(4) उल्लेख

1. दुर्योधन के दूत उलूक का युद्ध के लिए प्रेरित करने के लिए युधिष्ठिर से कथन।	कृष्णायन, 5।100.
2. कृष्ण का बलराम से दुर्योधन द्वारा किये गये अवांछनीय कार्यों का कथन।	1. कृष्णायन, 6।252. 2. ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 416. (उ०).
3. प्रवेश-सूत्र।	उभर-जय, पृ० 10.
4. कृष्ण का अर्जुन से कथन भीम को सूचना देने के लिए।	मधुपर्क, 13।24.
5. युद्ध की प्रेरणा के लिए श्री कृष्ण का अर्जुन से कथन।	सुवर्णा, 99.

(5) औचित्य

1. धर्म।	सुवर्णा, पृ० 99.
2. निन्दा।	1. कृष्णायन, 6।223. 2. रश्मिरथी, पृ० 174.
3. प्रतिज्ञा।	कृष्णायन, 6।213.
4. स्तुति।	ब्रज-विहार (रंगीलाल) पृ० 291.
5. धिक्कार	कृष्णायन, (विसाहूराम) पृ० 414.
6. आर्शीवचन।	जयभारत, पृ० 171.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7. पश्चाताप। — देवकी, पृ० 118-119.

(6) जीवन-दर्शन

1. गर्व-त्याग। — कृष्णायन, 6।244.
2. मिथ्याचरण-त्याग। — व्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 399 (उ०)
3. दैत्य-त्याग। — 1. कृष्णायन, 5।101. 2. सेनापति कर्ण, पृ० 162.

लाक्षागृह-दहन

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन। — सूरसागर, पद-10, 264.

2. उदाहरण—(भीम द्वारा पाण्डवों को दहन से बचाना) अश्वत्थामा वध के लिए उदाहरण। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 291.

(2) दृष्टान्त

1. भक्त-वत्सलता की पुष्टि। — सूरसागर, पद-17.

2. कठिनाई में भगवान के सहायक होने की पुष्टि। — वही 37.

(3) प्रतीक

लाक्षागृह में जलना-आपत्ति का सामना — रश्मिरथी, पृ०. 28

(4) उल्लेख

1. दुर्योधन के दूत उलूक का युद्ध के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से युधिष्ठिर से कथन। — कृष्णायन, 5।100

2. शकुनि कर्ण की मृत्यु के पश्चात दुर्योधन की अदूरदर्शिता के लिए कथन। — कृष्णायन, 6।231

3. श्रीकृष्ण का वलराम से दुर्योधन द्वारा किये गये अवांछनीय कार्यों का उल्लेख। — व्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 416.

(5) वचन-वक्रता

1. औचित्यमूलक। — कृष्णायन, 6।233.
2. घृणामूलक उपहास। — कृष्णायन, 3।27.
3. युद्ध की प्रेरणा के लिए। — कृष्णायन, 5।56.
4. सद् और असद् वृत्तियों के द्योतन के लिए। — व्रजचन्द्र विनोद, पृ० 398-399.
5. संवादों के लिए। — रश्मिरथी, पृ० 174.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(6) औचित्य

1. अभिप्राय। पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 168-169.

2, निन्दा। कृष्णायन, 3।127, 6।233.

कौरवों द्वारा पाण्डवों को सताया जाना/वन को भेजना

(1) दृष्टान्त

होनी की प्रबलता की पुष्टि। विश्राम-सागर, पृ० 292.

(2) वचन-वक्रता

1. अनौचित्यमूलक। कृष्णायन, 6।223.
2. दूत कार्य के लिए। उत्तर-जय, पृ० 19.
3. संवादों के लिए। रश्मिरथी, पृ० 174.

(3) औचित्य

निन्दा
1. कृष्णायन, 6।233.
2. रश्मिरथी, पृ० 174.

कौरव-पाण्डव युद्ध (महाभारत युद्ध)

(1) अलंकार

1. उदात्त—श्रीकृष्ण का औदात्य-कथन। सूरसागर, पद-95,

2. उपमा, रूपक—(1) मन के लिए अर्जुन और भीम का उपमान। दैत्य प्रलाप, पद-2 (भा.-ग्रं.)

(2) विषय में रन का आरोप।

3. काव्यलिंग—जग में प्रसिद्धि का कारण महाभारत में भाइयों को लड़ाना। हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 16.

(2) प्रतीक

1. कुरुक्षेत्र—भयंकर युद्ध। गोपिका, पृ० 136.
2. महाभारत—भयंकर युद्ध। वेणु लो गूंजे धरा, पृ० 100.

खट्वांग की मुक्ति

(1) दृष्टांत

शीघ्र मुक्ति होने की पुष्टि। विश्राम-सागर, पृ० 292.

(2) औचित्य

विचार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) जीवन-दर्शन

आशावाद।

गजेन्द्र-मोक्ष

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन।	ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 463.
2. उदात्त—(1) कृष्ण के औदात्य का कथन।	1. सूरसागर, पद-6, 7, 10, 25, 109, 119, 308, 27, 182, 190. 2. ब्रज-बिहार, पृ० 293, 296. 3. प्रेम प्रलाप, पद-41, 72. (भारतेन्दु-ग्रन्थावली) 4. कृष्णायन, 7।184. 5. हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 141.
(2) कृष्ण का औदात्य एवं शौर्य वर्णित। एक और भक्त वत्सलता दूसरी ओर दुष्ट दमनता व्यंजित।	पुरुषोत्तम, पृ० 25.
3. उदाहरण—(1) दुष्टों का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158.
(2) पतित पावनता की पुष्टि।	—वही, 188, 219.
(3) कष्ट निवारण के लिए उदाहरण।	ब्रजचन्द विनोद (पूर्वार्द्ध) पृ० 6.
4. उदाहरण काव्यलिंग—(1) गोपियों के प्रेम के लिए गज की प्रीति उदाहरण।	नटनागर-विनोद, पृ० 21.
(2) न डरने का हेतु प्रीति के प्रमाण की प्रसिद्धि।	
5. काव्यलिंग—(1) भक्त हित हेतु।	सूरसागर, पद—26.
(2) हेतु-भक्तों का ताप निवारण।	वही, 28.
(3) तारने में हेतु स्मरण।	वही, 82.
(4) भरोसे हेतु पतित पावनता।	वही, 122.
(5) हेतु-उद्धार करना।	वही, 178.
6. परिवृत्ति—कुवलया के प्राण लेकर गजेन्द्र को देना।	हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 15.
7. यमक, अनुप्रास—वारन, वार न में यमक. (वारन-हाथी) वारन-देर न करना। (3) वारन, टारन, तारन में अनुप्रास।	हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 21.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7. रूपक—(1) गर्व पर नक्र का आरोप।	कृष्णायन (विसाहू राम) पृ० 140.
(2) विश्व पर जग का, विपत्ति पर ग्राह का आरोप।	हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 19.
(3) कुरु कुल पर गज, विग्रह पर ग्राह का आरोप।	उत्तर-जय, पृ० 40.
8. व्यतिरेक - ब्रजवासियों की गति को गजेन्द्र के पास जाने की गति से तीव्र बताना।	फेरि मिलिवो, पृ० 172.
9. सन्देह—कर्ण और अर्जुन के युद्ध का संदिग्ध वर्णन।	सुवर्णा, पृ० 125.
10. स्मरण, सन्देह—(1) भक्त-वत्सलता का स्मरण।	विनय-प्रेम-पचासा, पद—38 (भा० ग्रा०)
(2) याद हो कि न याद हो में सन्देह।	
11. स्मरण—भक्त-वत्सलता का स्मरण कराया जाना।	प्रेम-प्रलाप, पद—19 (भा०ग्रं०)

(2) दृष्टान्त

1. भगवान द्वारा शरणागत की रक्षा।	सूरसागर, पद—14.
2. भक्त वत्सलता की पुष्टि।	1. सूरसागर, पद—16, 17, 21, 171. 2. ब्रजचन्द्र-विनोद (उत्तरार्द्ध) पृ० 121, 270, 466.
3. कठिनाई में भगवान सहायक।	सूरसागर, पद—31.
4. स्मरण से निर्भय पद प्राप्ति।	वही, 66.
5. भगवान प्रेम से मोक्ष प्राप्ति।	वही, 176.
6. कष्ट में भगवान सहायक।	सूरसागर, पद—110, 112.
7. विना परिश्रम यश प्राप्ति।	सूरसागर, पद—132.
8. भगवान की परम उदारता।	विनय प्रेम पचासा, पद—36 (भा० ग्रं०)
9. कृष्ण के विपत्ति-उद्धार के स्वरूप की पुष्टि।	1. महारास, पृ० 101. 2. भगवान श्रीकृष्ण लीला मृत, पृ० 54.

(3) प्रतीक

गजेन्द्र-मोक्ष-आपत्ति से मुक्ति।	गोपिका, पृ० 163.

(4) वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक भक्ति।	1. श्री विष्णु लहरी (रत्नाकर) 2. हृदय-तरंग, पृ० 15.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(5) औचित्य

1. अलंकार। — नटनागर विनोद, पृ० 31.
2. कथन। — फेरि मिलिबो, पृ० 172.

(6) जीवन-दर्शन

आस्थावाद। — 1. ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 466 (उ०)
2. प्रेम भावना। — 2. नटनागर विनोद, पृ० 31.

गणिका (पिंगला) उद्धार

1. अलंकार

1. उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन। — 1. सूरसागर, पद—25, 27, 67, 119, 120, 123, 182, 306.
2. प्रेम प्रलाप, पद—41. (भा० ग्रं०)
3. स्फुट-कविताऐं, पद – 8. (भा० ग्रं०)

2. उदात्त, सन्देह—(1) भगवान की भक्त वत्सलता का वर्णन। — विनय-प्रेम-पचासा, पद-38. (भा० ग्रं०)

2. याद हो कि न याद हो में सन्देह।

3. उदाहरण—(1) पतितों का उदाहरण। — सूरसागर पद-158, 182, 219.

(2) खल का उदाहरण। — सूरसागर, पद—204.

4. उदाहरण, काव्यलिंग—गोपियों के प्रेम के लिए गणिका की प्रीति का उदाहरण। — नट नागर विनोद, पृ० 31.

5. काव्यलिंग—(1) भजने का हेतु भक्तों का ताप निवारण। — सूरसागर, पद-28.

(2) उद्धार का हेतु नाम लेना। — वहीं 122.

(3) भरोसे का हेतु गणिका-उद्धार। — सूरसागर, पद, 178.

(2) दृष्टान्त

1. हरि स्मरण से मोक्ष। — 1. सूरसागर, पद— 28.
2. सूरसागर, पद-89.

2. भगवान की गति की अलक्षता। — वही—132.

3. विना परिश्रम यश प्राप्ति। — वही—193.

4. भगवान के स्मरण से पद प्राप्ति। — 1. प्रेम-प्रलाप, पद-33. (भा०ग्रं०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	2. व्रजचन्द्र विनोद, पृ० 466. (उ०)
5. भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	हृदय-तरंग, पृ० 147.
6. भगवान की पतित पावनता की प्राप्ति।	विनय प्रेम पचास, पद-36. (भारतेन्दु-ग्रन्थावली)

(3) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक।	1. सूरसागर, पद-138, 145, 179.
	2. श्रीविष्णु लहरी, पद-14. (रत्नाकर)
2. दीनता प्रदर्शन।	वही—192.

(4) औचित्य

1. निवेदन।	सूरसागर, पद-175.
2. अलंकार।	नट नागर विनोद, पृ० 31.

(6) जीवन-दर्शन

प्रेम भावना।	वही.

गरुड़-आख्यान

गरुड़ और अरुण

अलंकार

(सन्देह) जल में दोनों हाथ उठाये कर्ण में अरुण को मस्तक पर लिए पंख फैलाये खड़े हुये गरुण का सन्देह।	रश्मिरथी, पृ० 77.

गरुड़ का स्वर्ग से अमृत लाना

अलंकार

(उदाहरण) कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण के लिए उदाहरण।	पुरुषोत्तम, पृ० 176.

गरुड़-सर्प वैर

(1) अलंकार

1. उदाहरण—(1) कंस पर श्रीकृष्ण के लिए उदाहरण।	कृष्णायन, 1165.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) श्रीकृष्ण को देख कुण्डिनपुर के रक्षकों के स्तब्ध रह जाने लिए उदाहरण। — फेरि-मिलिबो, पृ० 69.

(3) कंस के अनेक मृत योद्धाओं में खड़े हुए कृष्ण के लिए उदाहरण।

2. रूपक—मन पर फन (सर्प-फन) अहंकार पर गरुड़ का आरोप। — राधा, पृ० 13.

(2) उल्लेख

कृष्ण का कालिय नाग से कथन। — 1. कृष्णायन, 1।100. 2. ब्रजचन्द्र विनोद (पूर्वा०) 101.

गंगावतरण/भगीरथ आख्यान

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) श्रीकृष्ण के चरणों का औदात्य कथन। — 1. कृष्णायन, 1।1. 2. मधुपुरी--8।43. 3. ब्रजचन्द्र बिनोद, (पूर्वार्द्ध) पृ० 27;, 306, 417.

(2) भारत की महत्ता का वर्णन। — कृष्णायन, 4।17.

(3) शिव की श्रेष्ठता का वर्णन। — ब्रजचन्द्र विनोद (उत्तरार्द्ध) पृ० 2.

(4) भारत के चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — मधुपर्क, 2।20.

(5) कृष्ण के औदात्य का कथन। — मधुपर्क, 7।59.

2. उदाहरण—(1) कर्ण द्वारा सूर्य को दिये गये अर्घ्यदान के लिए उदाहरण। — सेनापति कर्ण, पृ० 179.

(2) कर्ण के सिर पर हेम कलशों से गिराये गये जल के लिए उदाहरण। — सेनापति कर्ण, पृ० 194.

3. उत्प्रेक्षा—शिप्रा नदी में गंगा की सम्भावना। — सेनापति कर्ण, पृ० 194.

4. उपमा—गोपियों के प्रेम प्रवाह के लिए उपमान। — फेरि-मिलिबो, पृ० 171.

5. उपमा-उत्प्रेक्षा—(1) (संकर) सेना के लिए उपमान। — जरासंघ-वध, पृ० 52.

(2) मनहुँ से उत्प्रेक्षा।

6. उदाहरण, यमक—(1) उद्धव के पीछे सुभगति के आने के लिए उदाहरण। — उद्धव-शतक (रसाल) पद-231.

(2) भगीरथ व शुभगति के कई अर्थ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1. भागीरथ नाम विशेष ।

2. भगीरथ रथ के पीछे भागना ।

3. भागीरथी-गंगा ।

7. काव्यलिंग—भव भय भंग में कारण तव पद गंग में स्नान । — कृष्णायन (विसाहूराम) पृ० 136.

8. सन्देह—रुक्मिणी की माँग में नील-गिरि शैल पर गंगा प्रवाहित होने का सन्देह। — रुक्मिणी-परिणय, पृ० 76.

(2) प्रतीक

भगीरथ-धर्म, पुरुषार्थ, परिश्रम । — मधुपर्क, 5।60.

(3) औचित्य

1. वाक्य ।	उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद-134.
2. विशेषण (पाषाणमना)	देवकी, पृ० 29.
3. देश।	कृष्णायन, 1।1.
4. पद ।	उद्धव-शतक (रसाल) पद-231.
5. नाम (विष्णुपदी)	अंगराज, पृ० 156.

(4) जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ । — 1. मधुपर्क, पृ० 74.
2. मधुपर्क, पृ० 123.

गांधारी को सौ पुत्रों की प्राप्ति

उल्लेख

कवि कथन- गुरु वंश वर्णन । — जयभारत, पृ० 32.

गांधारी का कृष्ण को शाप

अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—विना भगवान की इच्छा के कार्यों की असंभाव्यता का समर्थन । — वृजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 463.

2. काव्यलिंग—यदुजनों के पाप-पथ पर जाने का कारण गांधारी शाप । — कृष्णायन, 7।144.

3. संकर (उपमा और उत्प्रेक्षा की सम्मिश्रण । — कृष्णायन, 7।159.

(2) दृष्टान्त

सहनशील नारी की अवज्ञा असंभव । — द्रौपदी, पृ० 52.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) उल्लेख

यदुवंश विनाश वर्णन। — कृष्णायन, 7।154.

(4) औचित्य

कुल, व्रत। — कृष्णायन, 7।154.

(5) जीवन-दर्शन

1. गुणवान नारी की अवज्ञा असंभव। — द्रौपदी, 52.
2. सम्पूर्ण कार्यों का कर्ता ईश्वर। — व्रजचन्द्र विनोद, प्र० 463 (उ०)
3. बुराईयों का हेतु स्वयं को स्वीकारना। — द्रौपदी, पृ० 52.

चन्द्र-आख्यान

(1) चन्द्रमा का जन्म

वाक्य औचित्य। — ब्रज-विहार, पद—312-313.

(2) चन्द्रदेव का राजसूय यज्ञ

अलंकार

(उदात्त) कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — अंगराज, पृ० 185.

(3) चन्द्रमा का गुरु पत्नी से व्यभिचार/बुध का जन्म

(1) अंलकार

1. उत्प्रेक्षा—मुख पर चन्द्रमा दूध में अमृत की संभावना। — सूरसागर, पद—1351.

2. काव्यलिंग—सबसे बड़े अधर्म में हेतु गुरु पत्नी गमन। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 432.

3. कलंक लगने में हेतु कलंकित चन्द्रमा के दर्शन।

दृष्टान्त

अवगुण करने वाले को सुख प्राप्ति नहीं। — विश्राम-सागर, पृ० 359.

(3) वचन-वक्रता

निन्दामूलक उपहास। — मधुमुकुल, पद-59. (भा० ग्रं०)

(4) औचित्य

1. धर्म — कृष्णायन, (बिसाहूराम) पृ० 432.
2. परिवाद। — मधुमुकुल, पद-59 (भा० ग्रं०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(5) जीवन-दर्शन

अवगुणों से मनुष्य का अपमान।	विश्राम-सागर, पृ० 359.

चन्द्रमा में खरगोश का रहना

अलंकार

(रूपक) आनन पर विधु का श्याम अलक पर शशलांछन का आरोप।	कृष्णायन, 1।154.

चन्द्रमा का मृग लांछित होना

(1) अलंकार

1. उत्प्रेक्षा प्रतीयमाना—जंगल की गहनता के लिए उपमान की संभावना।	फेरि मिलिबो, पृ० 136.
2. काव्यलिंग—(1) मृग को अंक में धारण करने का हेतु चन्द्रमा की मृदुता।	कृष्णायन, 2।187.
(2) चन्द्र के मृगलांछन का हेतु विधि रचना सकलंक होना।	अँगराज, पृ० 81.
3. (स्मरण, व्यतिरेक) (1) लावण्य को देख मृगलांछन का स्मरण होना। (2) चन्द्रमा से अधिक राधा के लावण्य की प्रशंसा।	राधा, पृ० 9.

(2) प्रतीक

(मृग का राकेश को तजना) समय प्रतिकूलता, अनिष्ठ का संकेत।	द्रौपदी, पृ० 37.

(3) औचित्य

शास्त्र-औचित्य	द्रौपदी, पृ० 37.

चन्द्र-रोहिणी

(1) अलंकार

1. उत्प्रेक्षा—रूक्मिणी के भाल के मध्य में लगी बेंदी में चन्द्रमा के अंक में रोहिणी की रहने की संभावना।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 214.
2. सन्देह—कर्ण की गोद में बैठी उसकी पत्नी के लिए चन्द्रमा की गोद में बैठी रोहिणी का सन्देह।	सेनापति कर्ण, पृ० 145-146.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रहास-आख्यान

दृष्टान्त

होनी की प्रबलता की पुष्टि। विश्राम-सागर, पृ० 212.

जगदम्बा का चामुंडा बनना

अलंकार

काव्यलिंग, परिकुरांकुर—(1) चामुण्डा बनने का हेतु नर-बलि। सुवर्णा, पृ० 56.

(2) जगदम्बा में वात्सल्य एवं पालन कारिणी शक्ति और चामुण्डा में वध कारिणी शक्ति का साभिप्राय प्रयोग।

जनक द्वारा सिद्धियों की प्राप्ति/विदेह आख्यान

(1) अलंकार

1. काव्यलिंग—सिद्धि प्राप्ति का हेतु कर्म पथ पर चलना। कृष्णायन, 5।135.

2. काव्यलिंग,रूपक—(1) निज पाश काटने का हेतु विदेह जैसा राज्य। सुवर्णा, पृ० 78.

(2) संयम पर विदेह राजा का आरोप।

2. उपमा—(1) उपनन्द के लिए उपमान। मधुपर्क, 11।123.

(2) युधिष्ठिर के लिए उपमान। कृष्णायन, 5।135.

(2) दृष्टान्त

कर्मपथ सिद्धि का मार्ग। कृष्णायन, 5।135.

(3) औचित्य

विचार। कृष्णायन, 5।135.

(4) जीवन-दर्शन

कर्म-दर्शन। कृष्णायन, 5।135.

जयद्रथ का शिव से वरदान प्राप्त करना

अलंकार (काव्यलिंग) चार से लड़ने का हेतु शिव वरदान। व्रजचन्द्र विनोद, (उत्तार्द्ध) पृ० 355.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयन्त द्वारा सीता का अपमान

दृष्टान्त

अवला के अपमान का प्रतिकार। पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ॰ 39.

जीवन-दर्शन

नारी का अपमान करने वाले व्यक्ति का अंत अवश्य भावी। —वही—

जय-विजय आख्यान

दृष्टान्त

1. भगवान की गति की अलक्षता। सूरसागर, पद-104.
2. जीवन आदर्शों का प्रतिपादन। पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ॰ 111.

जह्नु का गंगा पान

(1) अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन। विश्राम सागर, पृ॰ 331.

(2) जीवन-दर्शन

गर्व त्याग। —वही-

दधीचि-आख्यान/दधीचि द्वारा हड्डियों का त्याग

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) कुरुक्षेत्र की महत्ता का वर्णन। अंगराज, पृ॰ 185.

(2) भारत के ऐश्वर्य का वर्णन। मधुपुरी, पृ॰ 5.

(3) भारत के चित्र की श्रेष्ठता। मधुपर्क, पृ॰ 2।16.

(4) कृष्ण के औदात्य का वर्णन। मधुपर्क, 7।59.

(5) भारतवर्ष की समृद्धि का वर्णन। मधुपर्क, 9।26.

2. उदात्त, उपमा—(1) कृष्ण के औदात्य का कथन। रश्मिरथी, पृ॰ 58

(2) कर्ण के लिए उपमान व्यंजित।

3. उपमा—कर्ण से लिए उपमान। अंगराज, पृ॰ 273.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

1. दान के महत्व का प्रतिपादन।	जरासंध, पृ० 92.
2. दान, औदात्य तथा व्रताचरण की पुष्टि।	रश्मिरथी, पृ० 54.
3. जीवन आदर्शों का प्रस्तुतीकरण।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी पृ० 112.
4. परोपकार के लिए पर विपत्ति भी सिर पर धारण करना।	व्रजचन्द विनोद(पूर्वा०) पृ० 193.

(3) औचित्य

1. अलंकार।	मधुपुरी, पृ० 5.
2. व्रताचरण।	रश्मिरथी, पृ० 54.
3. दानवीर।	जरासंध, पृ० 30.

(4) जीवन-दर्शन

1. वचन-पालन।	रश्मिरथी, पृ० 54.
2. त्याग।	मधुपर्क, 9।26.
3. पुरुषार्थ।	मधुपर्क, पृ० 123.
4. लोक-कल्याण।	जरासंध, पृ० 192.
5. राष्ट्रीय-भावना।	1. मधुपर्क, 9।25-26. 2. अंगराज; पृ० 185.

तारक-वध

दृष्टान्त

मरण वीरों का धर्म।	सेनापति कर्ण, पृ० 38.

दिलीप द्वारा नन्दिनी की सेवा/दिलीप का राज्य

(1) अलंकार

उदात्त—भारत की महिमा का वर्णन।	मधुपर्क, 2।20.

(2) प्रतीक

दिलीप—लोक नायक/प्रजासेवक	मधुपर्क, 5।107.

(3) जीवन-दर्शन

लोक-कल्याण।	वही—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीर्घतमस-आख्यान

(1) अलंकार

उदाहरण-ऋषि दीर्घतमस के स्वप्न का कर्ण के स्वप्न के लिए उदाहरण। — सुवर्णा, पृ० 34.

द्रुपद-द्रोण वैर

(1) अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन। — विश्राम-सागर, पृ० 331.

(2) औचित्य

प्रतिकार। — सेनापति कर्ण, पृ० 35.

(3) उल्लेख

अश्वत्थामा का कर्ण को शाप। — सेनापति कर्ण, पृ० 35.

दुर्गा की उत्पत्ति

(1) अलंकार

(उदात्त, उल्लेख)—(1) नारी के शौर्य का वर्णन। — महारास, पृ० 56.

(2) नारी के शौर्य का अनेक रूपों में उल्लेख।

(2) जीवन-दर्शन

नारी-शौर्य का प्रतिपादन। — वही —

दुर्योधन का वज्रांग होना

(1) अलंकार

उदात्त —पाण्डवों की श्रेष्ठता। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी पृ० 19.

(2) वचन-वक्रता

प्रतिशोध मूलक। — उत्तर-जय, पृ० 9.

(3) जीवन-दर्शन

गर्व त्याग। — —वही—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्वासा का कृष्ण को वर

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बिना भगवान की इच्छा के कार्यों की असंभाव्यता का समर्थन। — ब्रजचन्द्र विनोद (उत्तार्द्ध) पृ० 463.

दुष्यन्त-शकुन्तला

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) पाण्डवों की श्रेष्ठता का वर्णन। — पार्थ पत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 9.

(2) राधा की श्रेष्ठता का कथन। — मधुपर्क, 9।29.

(3) भारत के ऐश्वर्य का वर्णन। — मधुपर्क, 2।22.

2. अलंकार—उदाहरण—कृष्ण के ध्यान में बैठी रुक्मिणी के लिए उदाहरण। — पुरुषोत्तम, पृ० 168.

देवशर्मा की तपस्या

अलंकार

उदात्त—देवप्रयाग की समृद्धि का वर्णन। — कृष्णायन, 3।183.

देवासुर-संग्राम

(1) अलंकार

1. उदात्त—राधा द्वारा निर्मित चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — मधुपर्क, 2।17.

2. उपमा—कर्ण के विदर्भराज से हुए युद्ध का उपमान। — अंगराज, पृ० 90.

3. उदाहरण—(1) अर्जुन का भीम आदि को साथ लेकर कर्ण तथा उसके साथियों से युद्ध करने का उदाहरण। — जयद्रथ-वध, पृ० 83.

(2) इन्द्र का दैत्यों से लड़ना। अर्जुन का कौरवों से युद्ध के लिए उदाहरण। — ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 347.(उ०)

4. स्मरण—विष्णु का असुरों से युद्ध। अर्जुन के युद्ध को देखकर विष्णु के असुरों के साथ हुए युद्ध का स्मरण। — जयद्रथ-वध, पृ० 41.

(2) प्रतीक

देवासुर संग्राम—भौतिकता के लिए संघर्ष। — गोपिका, पृ० 86.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोण-आख्यान

(1) द्रोणाचार्य का जन्म

दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन और कर्मणा जाति का प्रतिपादन। — कृष्णायन (विसाहू राम) पृ० 378-379.

(2) द्रोणाचार्य का द्रुपद के पास जाना

उल्लेख

अश्वत्थामा का कर्ण से कथन। — सेनापति कर्ण, पृ० 35:

(3) द्रोण-वध

जीवन-दर्शन

मिथ्याचरण-त्याग। — सेनापति कर्ण, पृ० 42.

द्रौपदी-आख्यान

(1) यज्ञ की वेदी से द्रौपदी का जन्म

अलंकार

उदात्त—द्रौपदी के औदात्य का वर्णन। — जयभारत, पृ० 116.

(2) द्रौपदी को पाँच पतियों की प्राप्ति का वरदान

उल्लेख

कृष्ण का पाण्डवों से कथन-द्रौपदी जन्म वृतान्त। — ब्रजचन्द्र विनोद, पृ. 502 (पू०)

(3) द्रौपदी द्वारा कर्ण को अस्वीकारना

(1) अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अवैध के त्यात्य होने का समर्थन। — द्रौपदी, पृ. 14.

(2) औचित्य

1. शापजन्य-औचित्य। 2. निषेध। — पार्थ पत्नी महासती द्रौपदी, पृ. 63.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) द्रौपदी का पांडवों के साथ वन में रहना

(1) अलंकार

उदात्त—द्रौपदी के औदात्य का कथन। — कृष्णायन, 6।271.

(2) औचित्य

कुल। — कृष्णायन, 6।271

(5) द्रौपदी का विराट की दासी बनना

औचित्य

कुल। — कृष्णायन, 6।271.

धन्वन्तरि-अवतार

औचित्य

विप्रलम्भ श्रृंगार। — 1. नटनागर विनोद, पृ. 92-93.
2. नटनागर विनोद, पृ. 101.

ध्रुव-आख्यान (ध्रुव पर कृपा)

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) भारत के ऐश्वर्य का वर्णन। — मधुपुरी, पृ० 5.

(2) भगवान के औदात्य का कथन। — 1. विश्राम-सागर, पृ० 312.
2. मधुपर्क, 7।59.
3. सुवर्णा, पृ० 62.

(3) भीष्म की अचल निष्ठा सम्पत्ति का वर्णन। — सुवर्णा, पृ० 40.

2. उदाहरण, काव्यलिंग—(1) गोपियों के प्रेम के लिए ध्रुव के प्रेम का उदाहरण। (2) प्रेम में पड़ने का कारण भगवान की भक्त-वत्सलता। — नटनागर विनोद, पृ० 31.

3. उदाहरण—भक्तों का दुख मिटाने के लिए उदाहरण। — ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 6. (पू०)

4. उपमा—(1) अर्जुन के लिए उपमान। — सुवर्णा, पृ० 28.

(2) आस के लिए उपमान। — फेरि मिलिबो, पृ० 23.

5. काव्यलिंग—(1) माता-पिता त्यागने का हेतु हरिप्रेम। — ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 214. (पू०)

(2) प्रभु भरोसे का हेतु है ध्रुव आदि की सुधि। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 257.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) भजने में हेतु भक्तों का ताप-निवारण।	सूरसागर, पद-28.

(2) दृष्टान्त

1. भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	1. सूरसागर, पद-11. 2. व्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 466. 3. हृदय-तरंग, पृ० 147.
2. भगवान के भक्तों के सब अधिकार प्राप्त।	— वही 34.
3. भगवान के भक्तों के अभय प्राप्ति।	— वही 36.
4. प्रेम से मोक्ष पद प्राप्ति।	सूरसागर , पद-176.
5. जीवन-आदर्शों का प्रस्तुतीकरण।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 111.
6. होनी की प्रवलता की पुष्टि।	विश्राम-सागर, पृ० 292.
7. सच्चे प्रेम से ही भगवान की प्राप्ति।	व्रजचन्द्र विनोद (पू०) पृ० 214-217.

(3) प्रतीक

1. ध्रुव ध्यानी—स्थिर/अटल।	द्वापर, पृ० 175.
2. ध्रुव धारण—निश्चित धारण।	मधुपर्क, 3।41.
3. ध्रुव—सत्य पर अटल रहने वाला।	मधुपर्क, 8।772.
4. ध्रुव—ध्येय।	राधा, पृ० 11.
5. ध्रुव तारा—निश्चित लक्ष्य।	राधा, पृ० 35.

(4) औचित्य

अलंकार औचित्य।	नटनागर विनोद, पृ० 31.

(5) जीवन दर्शन

पुरुषार्थ।	मधुपर्क, पृ० 123,

नग्नजित आख्यान

उल्लेख

श्रीकृष्ण के विवाहों का उल्लेख—कवि कथन।	श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 36.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर-नारायण अवतार

अलंकार

(काव्यलिंग) अवतार का हेतु आत्मज्ञान की शिक्षा। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ॰ 98.

नल-दमयन्ती आख्यान

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—प्रेम-पंथ के कंटकाकीर्ण होने का समर्थन। — ब्रजचन्द्र-विनोद, (पूर्वार्द्ध) पृ॰ 213.

2. उपमा —(1) पांचाली व सुभद्रा के लिए उपमान। — जयभारत, पृ॰ 147.

(2) युधिष्ठिर के लिए कल उपमान। — जयभारत, पृ॰ 157.

(2) दृष्टान्त

1. पुरुष की निष्ठुरता की पुष्टि। — पुरुषोत्तम, पृ॰ 61.

2. प्रत्येक व्यक्ति पर विपत्ति पड़ने की पुष्टि। — कृष्णायन (विसाहूराम) पृ॰ 350.

(3) जीवन-दर्शन

नारी सहनशीलता के कारण पूज्या। — जयभारत, पृ॰ 147.

नहुष को सर्प-योनि की प्राप्ति

(1)अलंकार

स्मरण—युधिष्ठिर का अपने आचरणों को देख नहुष का स्मरण आना। — उत्तर-जय पृ॰ 20.

(2) दृष्टान्त

अभिमान पतन का कारण। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी पृ॰ 113

(3) जीवन-दर्शन

1. सदाचरण विरुद्धता की आलोचना। — उत्तर-जय, पृ॰ 20.

2. गर्व-त्याग। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ॰ 113.

3. प्रेम भावना। — ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ॰ 213. (पू॰)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारद का नलकूबर और मणिग्रीव को शाप

(1) अलंकार

अपह्नुति—शाप का निषेध का वरदान की स्थापता। — ब्रज-विहार, पृ० 12.

(2) उल्लेख

1. प्रस्तावना में कवि कथन। — श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 7.
2. यमालार्जुन का कथन। — ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 101. (पू०)

नारद-मोह

(1) अलंकार

(अर्थान्तरन्यास) अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन। — विश्राम-सागर, पृ० 331.

(2) दृष्टान्त

1. परीक्षा लेने पर सभी असफल। — प्रेम-प्रलाप, पद-65. (भा०ग्रं०)
2. नारद की अभद्रता। — देवकी, पृ० 23.

(3) औचित्य

वृत्त — देवकी, पृ० 23.

निमि राजा को शाप

(1) दृष्टान्त

कामतत्व का प्रतिपादन। — सेनापाति कर्ण, पृ० 99.

(2) जीवन-दर्शन

प्रवृत्ति मार्ग।

विषाद-जन्म

प्रतीक (निषाद) केवट। — ललन-सागर, पद-123.

नृग-आख्यान

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) भगवान के औदात्य का कथन। — सूरसागर, पृ० 27, 94.

(2) प्रभास क्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — कृष्णायन, (बिसाहूराम) पृ० 95.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. उदाहरण--दुष्टों का उदाहरण।	सूरसागर, पद-158, 204.
3. उदाहरण, काव्यलिंग—(1) गोपियों के प्रेम के लिए कीट (नृग) का उदाहरण (2) जिय में न डरने का हेतु कीट की गति की प्रसिद्धि।	नटनागर विनोद, पृ० 331.

(2) दृष्टान्त

अवगुण करने वाले को सुख प्राप्ति नहीं।	विश्राम-सागर, पृ० 359.

(3) वचन-वक्रता

दीनता-प्रदर्शन।	सूरसागर, पृ० 192.

(4) औचित्य

अलंकार।	नटनागर विनोद, पृ० 31.

(5) जीवन-दर्शन

अवगुणों से मनुष्य का अपमान।	विश्राम-सागर, पृ० 359.

नृसिंह-अवतार

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—होनी की प्रबलता का समर्थन।	ब्रजचन्द्र विनोद पृ० 355. (पू०)
2. उत्प्रेक्षा प्रतीयमाना—श्रीकृष्ण के लिए उपमान की संभावना व्यंजित।	
3, उदात्त—(1) भगवान के औदात्य-कथन।	1. सूरसागर, पद-109, 119, 190, 308, 839, 2. विश्राम-सागर, पृ० 287. 3. प्रेम-मालिका, पद-26. (भारतेन्दु-ग्रन्थावली) 4. गीत गोविन्दानन्द, पद-12. (भा० ग्रं०) 5. प्रातः स्मरण स्तोत, पद 6. (भा० ग्रं०) 6. हृदय-तरंग (समस्या पूर्ति), पृ० 204. 7. ब्रज-विहार (रंगी लाल) पृ० 296.
(2) भारत के चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 2।17.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) रास की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 7।51.
4. उदात्त, उपमा—(1) कर्ण का औदात्य कथन।	रश्मिरथी, पृ० 58.
(2) कर्ण के लिए उपमान व्यंजित।	
5. उदाहरण, काव्यलिंग—(1) गोपियों के लिए प्रह्लाद के प्रेम का उदाहरण।	नटनागर विनोद, पृ० 31.
(2) प्रेम में पड़ने का कारण भगवान की भक्त-वत्सलता।	
6. उपमा—(1) कर्ण के लिए नरसिंह (देवसिंह) उपमान।	अंगराज, पृ० 240.
(2) वाणासुर के लिए प्रह्लाद का उपमान।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत पृ०44.
7. काव्यलिंग—(1) वपु धारण में हेतु भक्त-वत्सलता।	सूरसागर, पद-6.
(2) अवतार का हेतु भक्त हित।	—वही-पद-26.
(3) स्मरण का हेतु भक्तों का ताप-निवारण।	—वही, पद-28.
(4) तारने में हेतु हरि-स्मरण।	—वही, पद-82.
(5) प्रभु भरोसे में हेतु प्रह्लाद की सुधि।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 257.
(6) दैत्य पितृत्व के सहने का कारण पुत्र का प्रह्लाद होना।	द्वापर, पृ० 102.
(7) हिरण्यकश्यप के वध का हेतु हिरण्यकशिपु के प्राण हरण।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 100.
(8) नरसिंह अवतार का हेतु भक्ति भाव की शक्ति बताना।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 107.
(9) अवतरण का हेतु सिंह में जन्म।	देवकी, पृ० 6.
(10) नरसिंह का हेतु पृथ्वी पर उपाधि।	सुवर्णा, पृ० 134.
8. पुनरुक्त वदाभास—यहाँ पर हरि केहरी भिन्न-भिन्न अर्थ के लिए प्रयुक्त हुए हैं परन्तु आभास पुनरुक्त का सा होता है।	ललन-सागर, पद-1049.
9. निदर्शना—हिरण्यकशिपु, दशशीश और शिशुपाल का असंभव सम्बन्ध कहाँ-कहाँ कह कर दिखाया गया है।	कृष्णायन, 4।9.
10. रूपकातिशयोक्ति—केवल उपमान (नरसिंह) का उल्लेख उपमेय (भीम) का उल्लेख नहीं।	जयभारत. पृ० 384.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

1. भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	1. सूरसागर, पद-11, 17, 20, 22, 38. 2. हृदय-तरंग, पृ० 147.
2. शरणागत की रक्षा करने की पुष्टि।	सूरसागर, पद-14.
3. भगवान द्वारा जाति-पाँति कुल मर्यादा को न मानने।	—वही, 15.
4. स्याम भजन से बड़प्पन।	सूरसागर, पद-24.
5. कठिनाई में भगवान के सहायक होने की पुष्टि।	—वही, 31.
6. भगवान के भक्त को सब अधिकार प्राप्त अभिमान से नाश।	—वही, 34.
7. अहंकार से नाश अवश्यंभावी।	—वही, 54.
8. भगवान की गति की अलक्षता।	—वही, 104.
9. कष्ट में भगवान सहायक।	सूरसागर, पद-112.
10. भगवान के भक्तों को अभय प्राप्ति।	—वही, 37.
11. होनी की प्रबलता की पुष्टि।	विश्राम-सागर, पृ० 292.
12. भक्त को आर्त देखकर भगवान के प्राप्ति होने की पुष्टि।	प्रेम-प्रलाप, पद-26. (भा०-ग्रं०)
13. अहिंसा की पुष्टि।	मधुपर्क, 9।43.
14. भगवान के उद्धारक स्वरूप की पुष्टि।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 54.

(3) प्रतीक

1. नृसिंह—पुरुषार्थी-शक्ति शाली।	1. अंगराज, पृ० 126, 134. 2. सेनापति कर्ण, पृ० 26.
2. नृसिंह—तेजस्वी।	सेनापति कर्ण, पृ० 21, 86.
3. नरसिंह—तेजस्वी, भयंकर।	उत्तर-जय, पृ० 44.
4. नरसिंह—भयंकर।	कृष्णायन, 4।32.
5. नृसिंह—हिंसक व्यक्ति।	अंगराज, पृ० 46.
6. प्रह्लाद—परम भक्त।	गोपिका, पृ० 177.

(4) उल्लेख

1. कृष्ण का अर्जुन को गीतोपदेश।	कृष्णायन, 5।191.
2. नारद का युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में राजाओं से कथन।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ० 60. (उ०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(5) वचन-वक्रता

1. शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद- 745.
2. उपालम्भमूलक भक्ति।	1. श्री विष्णु लहरी, पद, 14, 15. (रत्नाकर) 2. रुक्मिणी-परिणय, पृ० 86, 107.

(6) औचित्य

1. विशेषण।	अंगराज, पृ० 46.
2. विचार।	देवकी, पृ० 6.
3. उपमान।	जयभारत, पृ० 384.
4. गर्व।	ऊषा हरण, पृ० 29.
5. वाक्य-अनौचित्य।	ब्रज विहार, पृ० 313.
6. अलंकार।	नटनागर-विनोद, पृ० 31.
7. नीति।	ब्रजचन्द्र-विनोद, पृ. 44 (उ०)
8. भक्तिभाव।	विश्राम-सागर, पृ० 287.

(7) जीवन-दर्शन

1. ईश्वर में आस्था।	सुवर्णा, पृ० 134.
2. नियतिवाद।	विश्राम सागर, पृ० 291.
3. बुरे काम का बुरा परिणाम।	विश्राम सागर, पृ० 292.
4. होनी को प्रवलता।	ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 355 (पू०)
5. अति सर्वत्र वर्जयेत्।	ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 458 (उ०)
6. युद्ध-दर्शन।	जरासंध, पृ० 7.

परशुराम-आख्यान

(1) परशुराम-अवतार

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) भगवान का औदात्य कथन।	1. गीत गोविन्दानन्द, पद-12-14. भा० ग्रं०) 1. विश्राम-सागर, पृ० 287.
(2) परशुराम का औदात्य-कथन।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 34.
2. उपमा—योधाओं के लिए परशुराम (भृगुपति का उपमान)	जरासंध-वध, पृ० 58.
3. काव्यलिंग—परशुराम अवतार का हेतु भक्त जनों का हित।	भगवान श्रीकृष्ण लीलाभृत पृ० 100.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

भारत की महिमा की पुष्टि। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 108.

औचित्य

भक्तिभाव। — विश्राम-सागर, पृ० 287.

(2) परशुराम द्वारा अपनी माता का वध करना

उल्लेख

कर्ण का युद्ध से पूर्व चिन्तन। —
1. विश्राम-सागर, पृ० 287.
2. सुवर्णा, पृ० 46.
3. जयभारत, पृ० 335.

(3) परशुराम द्वारा कार्तवीर्य का वध/सहस्रबाहु से बैर

(1) अलंकार

1. उदात्त—परशुराम के पौरुष का कथन। — अंगराज, पृ० 40.

2. उदाहरण—अनिरुद्ध के वाणासुर से युद्ध करने के लिए तैयार होने का उदाहरण। — ऊषाहरण, पृ० 16.

(2) दृष्टान्त

अवगुणी को सुख नहीं। — विश्राम-सागर, पृ० 359.

(3) औचित्य

1. गुण। — ऊषा हरण, पृ० 16.
2. वीर (रस)।

(4) परशुराम का कर्ण को शाप

(1) अलंकार

1. अर्थान्यरन्यास—अवैध के त्याज्य होने का समर्थन। — द्रौपदी, पृ० 14.

2. काव्यलिंग—युद्ध में बाधाओं का कारण परशुराम का शाप। — सुवर्णा, पृ० 119.

(2) वचन-वक्रता

अधिक्षेपमूलक वास्तविक निन्दा। — कृष्णायन, 5।70.

(3) औचित्य

1. अलंकार-औचित्य। — सुवर्णा, 119.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. निन्दा । कृष्णायन, 5।70.
3. शापजन्य त्याग । द्रौपदी, पृ० 14.

(3) उल्लेख

1. कर्ण का युद्ध पूर्व चिन्तन । सुवर्णा, पृ० 45.
2. कर्ण का युद्ध क्षेत्र में शल्य से कथन । अंगराज, पृ० 221.

(5) परशुराम द्वारा क्षत्रियों का वध

(1) अलंकार

उदात्त—1. परशुराम के पौरुष का कथन । कृष्णायन, 4।121.
2. कुरुक्षेत्र की महत्ता का कथन । अंगराज, पृ० 185.
3. राधा द्वारा बनाये गये चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन । मधुपर्क, 2।18.

(2) उल्लेख

कर्ण का युद्ध से पूर्व चिन्तन । सुवर्णा, पृ० 46.

(3) जीवन-दर्शन

1. पुरुषार्थ । सेनापति कर्ण, पृ० 207.
2. अवगुणों के कारण मनुष्य का अपमान । विश्राम-सागर, पृ० 359.

परशुराम का कश्यप को पृथ्वी दान

अलंकार

(उदाहरण) कर्ण के पृथ्वी जीतकर दुर्योधन को देने का उदाहरण । अंगराज, पृ० 95.

पराशर-सत्यवती आख्यान

(1) दृष्टान्त

1. परीक्षा लेने पर सभी असफल । प्रेम प्रलाप, पद-65 (भा०ग्रं०)
2. पुरुष गुरुतर अपराध करने पर भी दोष मुक्त । महारास, पृ० 67.

(2) जीवन-दर्शन

गुणवती नारी की ग्राह्यता । जयभारत, पृ० 22.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराशर द्वारा राक्षस यज्ञ

(1) दृष्टान्त

आपद्धर्म की पुष्टि। — कृष्णायन, 7।72.

(2) औचित्य

विचार।

(3) जीवन-दर्शन

श्रुति विरोधी वचन को न मानना।

परीक्षित पर अश्वत्थामा का शस्त्र प्रयोग/कृष्ण द्वारा परीक्षित की रक्षा

(1) अलंकार

1. उदात्त—कृष्ण के औदात्य का कथन। — देवकी, पृ० 167.
2. काव्यलिंग—रक्षा का हेतु भक्त हित। — सूरसागर, पद-26.

(2) दृष्टान्त

1. भक्त-वत्सलता की पुष्टि। — सूरसागर, पद-16.
2. कष्ट में भगवान सहायक। — सूरसागर, पद-112, 113.
3. होनी की प्रबलता की पुष्टि। — विश्राम-सागर, पृ० 292.

((3) प्रतीक

शिशु भविष्य का मारा जाना—नये सृजन का विनाश। — अंधायुग, पृ० 124.

(4) जीवन-दर्शन

अच्छे कार्य का अच्छा परिणाम। — विश्राम-सागर, पृ० 292.

परीक्षित को तक्षक द्वारा डसा जाना

प्रतीक

तक्षक का परीक्षित को डसना निर्दोष की प्रतिहिंसा। — अंधायुग, पृ० 124.

पाण्डवों को दुर्वासा द्वारा सताया जाना

(1) अलंकार

1. उदात्त—श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन। — सूरसागर, पद-109. 282.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. काव्यलिंग—भरोसे का हेतु पतित पावनता।	सूरसागर, पद-122.

(2) दृष्टान्त

1. भगवान् के प्रेम की पुष्टि।	सूरसागर, पद-13,
2. भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-16.

पृथु-आख्यान

(1) अलंकार

1, उदात्त—(1) कृष्ण के औदात्य का वर्णन।	मधुपर्क, 7।59.
2. भारतवर्ष की महत्ता का वर्णन।	मधुपर्क, 9।26.

(2) दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 281.

(3) वचन-वक्रता

दीनता प्रदर्शन।	प्रेम-फुलवारी, पद-12 (भा०ग्रं०)

(4) औचित्य

1. विचार, 2. दैन्य।	प्रेम-फुलवारी, पृ० 580 (भा०ग्रं०)

(5) जीवन-दर्शन

1. त्याग।	मधुपर्क, 9।26.
2. पुरुषार्थ।	मधुपर्क, 4।23.
3. राष्ट्रीयता।	अंगराज, पृ० 185.

पुलिंद-आख्यान

अलंकार

(उदात्त) भगवान के औदात्य का कथन।	प्रेम प्रलाप, पद-41. (भा० ग्रं०)

पुण्डरीक-आख्यान

(1) अलंकार

परिवृत्ति—पुण्डरीक से माल लेकर सुदामा को देना।	हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 15.

(2) वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक भक्ति।	हृदय-तरंग (उपालम्भ) पृ० 15.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलराम-आख्यान

(1) बलराम-अवतार

अलंकार

(उदात्त) बलराम के औदात्य का वर्णन। — 1. प्रेम-मालिका, पद-26. (भा० ग्रं०)
2. गीत गोविन्दानन्द, पद-12-14. (भा० ग्रं०)

(2) बलराम का रेवती से विवाह

(1) अलंकार

अर्थान्तरन्यास—संस्कारों से ही मिलन संभव। — विश्राम सागर, पृ० 362.

(2) जीवन-दर्शन

संस्कारवश संयोग।

(3) बलराम द्वारा धेनुक-वध

(1) अलंकार

1. उदात्त—बलराम के औदात्य का कथन। — 1. सूरसागर, पद-27, 120.
2. रुक्मिणी-परिणाय, पृ० 56.
3. द्वारका प्रवेश, पृ० 26.

2. उदाहरण—दुष्टों का उदाहरण। — सूरसागर, पृ० 158.

3. काव्यलिंग—न डरने का हेतु धेनुक वध। — सूरसागर, पद-3595, 4668.

4. काव्यलिंग, यथाक्रम—(1) हत्यारे होने का कारण धेनुक वध। (2) धेनुक वध से हत्यारे का क्रमिक सम्बन्ध। — द्वापर, पृ० 37.

(2) दृष्टान्त

बलराम और श्रीकृष्ण के पौरुष की पुष्टि। — अलौकिक लीला, 5।37.

(3) वचन-वक्रता

1. वियोग का प्रस्तुतीकरण। — सूरसागर, पद-4687.

2. शत्रु के ख्याति प्राप्ति दोषों को तुच्छ बताना। — कृष्णायन, 2।149.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) उल्लेख

श्रीकृष्ण के कार्यों का वर्णन।	विश्राम सागर, पृ० 318.

(5) औचित्य

निन्दा।	कृष्णायन, 2।149.

(4) बलराम द्वारा प्रलम्बासुर वध

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) यशोदा की महत्ता का प्रतिपादन।	ब्रज-विहार, पृ० 10.
2. कृष्ण के शौर्य का कथन।	1. सूरसागर, पद-120, 3648, 4668. 2. देवकी, पृ० 160.
2. काव्यलिंग, यथाक्रम—गो-घातक होने का हेतु वत्स-वध। (2) गो-घातक से वत्स वध का क्रमिक सम्बन्ध।	द्वापर, पृ० 36.

(2) उल्लेख

बलराम द्वारा अक्रूर को ब्रज का अवलोकन कराना।	कृष्णायन, 2।4.

बालि का सुग्रीव से बैर

दृष्टान्त

1. होनी की प्रवलता की पुष्टि।	विश्राम सागर, पृ० 392
2. भाई से बैर का परिणाम।	ब्रजचन्द-विनोद, (उ०) पृ० 161.

बाणासुर का रावण और इन्द्र से युद्ध

औचित्य

गर्व।	ऊषाहरण, पृ० 28.

ब्रह्मा-आख्यान

(1) ब्रह्मा की उत्पत्ति

1. अलंकार

उपमा—(विष्णु की नाभि से कमल	सेनापति कर्ण, पृ० 140.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलना कर्ण की पत्नी के चन्द्रहार के लिए उपमान।

(2) औचित्य

अद्भुत रसौचित्य, अभिप्राय-औचित्य। — कृष्णायन, 1।85.

(2) ब्रह्मा का अपनी पुत्री से व्यभिचार

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान का परिणाम दुख/अपयश। — विश्राम-सागर, पृ० 331.

(3) ब्रह्मा और सावित्री

अलंकार

उत्प्रेक्षा—कृष्ण के राधा को देखने में ब्रह्मा द्वारा सावित्री को देखने की संभावना। — कृष्णायन, 5।86.

बुद्ध-अवतार

(1) अलंकार

1. उदात्त—भारत की समृद्धि का वर्णन। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 15
2. हीनोदात्त—वेदों की निन्दा महान कार्य नहीं। — 1. प्रेम-मालिका, पद-26. (भा० ग्रं०) 2. गीत-गोविन्दानन्द, पद-14. (भा० ग्रं०)
3. काव्यलिंग—बुद्ध के अवतार का हेतु दया, तप, अहिंसा, संयम का उपदेश। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 101.

बृद्धक्षत्र-वध

(1) अलंकार

असंगति—जयद्रथ का सिर काटना पर वध उसके पिता का होना। — रश्मिरथी, पृ० 125.

(2) उल्लेख

जयद्रथ-वध की मृत्यु का कवि द्वारा उल्लेख। — जयद्रथ-वध, पृ० 12.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरत-आख्यान

(1) अलंकार

उदात्त—(1) भारत की महत्ता का वर्णन। — कृष्णायन, 4।17.

(2) भारत के चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — मधुपर्क, 2।16.

(3) कुरुक्षेत्र कीं श्रेष्ठता का वर्णन। — अंगराज, पृ० 185.

(2) दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि। — रुक्मिणी परिणय, पृ० 281.

(3) औचित्य

वृत्त, इतिहास। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ०63.

भरत-आख्यान (दशरथ पुत्र)

(1) दृष्टान्त

1. आर्य नीति प्रेम का आधार। — कृष्णायन, 1।169.
2. श्रुति विरोधी वचनों की अमान्यता। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 75.

(2) औचित्य

इतिहास।

(3) जीवन-दर्शन

1. श्रुति विरोधी वचनों को न मानना। — कृष्णायन, 1।169.
2. त्याग। — मधुपर्क, 13।119-120.
3. प्रेम-भावना। — ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 161 (उ०)

भस्मासुर द्वारा पार्वती का अपमान

(1) दृष्टान्त

अबला के अपमान का प्रतिकार। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 39.

(2) जीवन-दर्शन

नारी के अपमान करने वाले व्यक्ति का अन्त अवश्यंभावी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीम-आख्यान

(1) भीम द्वारा हिडिम्ब-वध

अलंकार

1. उदाहरण—अश्वत्थामा वध के लिए उदाहरण। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 291.

2. काव्यलिंग—पृथ्वी हिलने का कारण हिडिम्ब का मारना। — सेनापति कर्ण, पृ० 56.

(2) भीम द्वारा कीचक-वध

(1) अलंकार

उदाहरण—अश्वत्थामा वध के लिए उदाहरण। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 291.

(2) वचन-वक्रता

औचित्यमूलक। — सेनापति कर्ण, पृ० 56.

भीष्म-आख्यान

(1) भीष्म जन्म

औचित्य

नाम। — देवकी, पृ० 32-33.

(2) भीष्म का ब्रह्मचारी रहना

उल्लेख

कर्ण का युद्ध पूर्व चिन्तन। — सुवर्णा, पृ० 46.

(3) भीष्म द्वारा अम्बा हरण/भीष्म परशुराम युद्ध

(1) अलंकार

1. अपह्नुति—गांधार-सुता का विरोध कर पीतम्बर वधू की स्थापना। — द्रौपदी, पृ० 21.

2. उदात्त—भीष्म के पौरुष का वर्णन। — 1. कृष्णायन, 4।121. 2. सेनापति कर्ण, 207-208.

3. उदात्त, काव्यलिंग—(1) भीष्म का पौरुष कथन। — सेनापति कर्ण, पृ० 8.

(2) गौरव समुद्र सूखने का कारण भीष्म की शरज्वाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. उदाहरण—युधिष्ठिर-द्रोण युद्ध के लिए उदाहरण।	जयद्रथ-वध, पृ० 66.
5. काव्यलिंग—संघर्ष में सहायता देने का कारण ममता तथा वात्सल्य।	देवकी, पृ० 33.

(2) दृष्टान्त

1. कुटिल नारी को वरण करने की पुष्टि।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 283.
2. नारी के शत्रु होने पर विपत्तियां।	द्रौपदी, पृ० 5,

(3) औचित्य

कुल।	सुवर्णा, पृ० 57.

(4) उल्लेख

कर्ण का युद्ध पूर्व चिन्तन।	सुवर्णा, पृ० 45.

(5) जीवन-दर्शन

1. नारी का अपमान कष्ट कारक।	द्रौपदी, पृ० 51.
2. स्वयं पति को वरण करने वाली नारी समाज में सम्मान की अधिकारिणी।	द्रौपदी, पृ० 21.

(3) भीष्म द्वारा कृष्ण की प्रतिज्ञा भंग

(1) अलंकार

1. उदात्त—भीष्म का औदात्य का वर्णन।	उत्तर-जय, पृ० 42.
2. हीमोदात्त—कृष्ण का अपकर्ष व्यंजित।	वीर-सतसई, पृ० 1.
3. काव्यलिंग—हेतु-भक्त हित।	सूरसागर, पद-28.

(2) दृष्टान्त

1. भगवान भक्तों के सहायक।	सूरसागर, पद-31.
2. भगवान की भक्त वत्सलता की पुष्टि।	प्रेम-प्रलाप, पद- 30 (भा० ग्रं०)

(3) उल्लेख

भीष्म का अर्जुन से कथन।	सुवर्णा, पृ० 30

(4) जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ।	उत्तर-जय, पृ० 40.

भीष्म-पराजय (भीष्म-वध)

(1) अलंकार

सन्देह—भीष्म की पराजय में पार्थ पराक्रम	सेनापति कर्ण, पृ० 41-42.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और छलछद्‌म का सन्देह।

(2) औचित्य

विचार, दयाभाव। — जरासंध, पृ० 30.

(3) जीवन-दर्शन

मिथ्याचरण-त्याग। — सेनापति कर्ण, पृ० 42.

भृगु द्वारा/विष्णु पर पद प्रहार करना

(1) अलंकार

उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन। — कृष्णायन, 3।136.

(2) दृष्टान्त

1. अवगुणों का परिणाम सुखदायक नहीं। — विश्राम सागर पृ० 359.
2. जीवन आदर्शों की पुष्टि। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 113

(3) जीवन-आदर्श

1. क्षमा आधृता। — —वही—
5. अवगुणों के कारण मनुष्य का अपमान। — विश्राम-सागर, पृ० 359.

मत्स्यावतार

(1) अलंकार

1. अपह्‌नुति—अवतरण का निषेध कर अभ्युदय की स्थापना। — देवकी, पृ० 6.

2. उदात्त—(1) श्रीकृष्ण के औदात्य का कथन। — 1. सूरसागर, पद-४39. 2. प्रेम-मालिका, पद-26. (भा०-ग्रं०) 3. गीत-गोविन्दानन्द, पद 14. (भा०-ग्रं०) 4. विश्राम-सागर, पृ० 312. 5. कृष्णायन, (विसाहूराम) पृ० 34.

3. काव्यलिंग—औषधियों की रक्षा का हेतु मत्स्यावतार। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत 99.

4. रूपक—अंधतमस पर प्रलय, सिंधु तथा वासुदेव पर महामीन आदि का आरोप। — उत्तर-जय, पृ० 39.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

भारत की महिमा की पुष्टि। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी पृ० 107

(3) वचन-वक्रता

1. शक्ति की प्रामाणिकता। — सूरसागर, पद-745.
2. प्रेम की प्रामाणिकता। — —वही—3933.

(4) औचित्य

1. विचार। — देवकी, पृ० 6.
2. भक्तिभाव। — विश्राम-सागर, पृ० 287.

मधु-कैटभ वध

अलंकार (उदात्त) दुर्गा का औदात्य कथन। — व्रजचन्द्र विनोद (पू०) पृ० 475.

मनु-आख्यान

(1) अंलकार

1. उदात्त—(1) राधा द्वारा बनाये गये चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — मधुपर्क, 216.

(2) पूर्वजों के कार्यों की श्रेष्ठता का वर्णन। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 21.

(2) दृष्टान्त

गृहस्थ-धर्म पालन का प्रतिपादन। — पार्थपत्नी, महासती द्रौपदी पृ० 302.

(3) उल्लेख

(मनु-शतरूपा) वियोगिनी राधा का चिन्तन। — राधा, पृ० 89.

(4) जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ। — मधुपर्क, पृ० 123

मरुत-आख्यान

(1) मरुत का राज वैभव

अलंकार

उदात्त—भारत की महत्ता का कथन। — कृष्णायन, 4117.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) भरत का अपने गुरु को त्यागना

(1) दृष्टान्त

प्रजाधर्म का अनुपालन। — ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 449. (उ०)

(2) औचित्य

नीति।

(3) जीवन-दर्शन

नीति-दर्शन।

महिषासुर मुकुन्द-युद्ध

अलंकार

उदाहरण—भीम की गदा से शिविर के डोलने के लिए उदाहरण। — सेनापति कर्ण, पृ० 58.

महिषासुर-वध

प्रतीक

महिषासुर-दुष्ट व्यक्ति, आसुरी वृत्तियों का पोषक। — मधुपर्क, 5।63.

मान्धाता-आख्यान

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) भारत की महत्ता का वर्णन। — कृष्णायन, 4।17.

(2) राधा द्वारा बनाये गये चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — मधुपर्क, 2।16.

2. उदाहरण—युधिष्ठिर के लिए उदाहरण। — पार्थपत्नी, महासती द्रौपदी पृ० 308.

(2) औचित्य

1. कुल। — कृष्णायन, 7।10.
2. विचार।

(3) जीवन-दर्शन

1. प्रवृत्ति-मार्ग। — पार्थपत्नी, महासती, द्रौपदी पृ० 308.
2. त्याग। — मधुपर्क, 9।26, 13।119-120.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. राष्ट्रीयता। —वही—9।25-26.

माण्डव्य का जन्म

दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन और कर्मणा जाति का प्रति पादन। कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 378-379.

मार्कण्डेय-आख्यान/प्रलय-कथा

(1) दृष्टान्त

प्रेम की महत्ता का प्रतिपादन। ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 215. (पू०)

(2) वचन-वक्रता

1. विचार प्रस्तुतीकरण के लिए। फेरि-मिलिबो, पृ० 70.
2. वियोग प्रस्तुतीकरण। उद्धव-शतक, पद-134.

(3) औचित्य

वाक्य-औचित्य। सूरसागर पद-1472.

मुद्गल की अतिथि सेवा

(1) दृष्टान्त

दान की महिमा की पुष्टि। जरासंध, पृ० 92.

(2) औचित्य

दानवीर।

मोहिनी-अवतार

(1) अलंकार

1. अन्योन्य—मोहिनी की छवि से मोहन का मोहित होना और मोहन की मोहिनी का मोहिनी में समाना। मधुपर्क, 7।8.

2. उत्प्रेक्षा—(1) बांसुरी में मोहिनी की संभावना। सूरसागर, पद-1266.

(2) राधा में मोहिनी की संभावना। ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 246.

3. उत्प्रेक्षा, सन्देह—राधा में मोहिनी की संभावना एवं मोहिनी होने का सन्देह व्यंजित। फेरि-मिलिबो पृ० 21.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. काव्यलिंग—(1) मोहिनी रूप धारण करने का हेतु सुरों को अमृत कलश देना। — भगवान श्रीकृष्णलीलामृत पृ० 99.

(2) दैत्यों को बुद्धिहीन करने का कारण भगवान का सुन्दर बाला बनना। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी पृ० 107.

2. प्रतीप—मोहिनी रूप से राधा के रूप का उत्कृष्ट वर्णन। — सूरसागर, पद-1673.

6. यमक—मोहिनी के दो अर्थ। 1. मोहनी-शक्ति 2. मोहित करने वाली। — उद्धव-शतक, (रसाल) पद-225.

7. सन्देह—मोंहिनी रूपधारी कालिन्दी में सुर-सुन्दरी या निशिचरी होने का सन्देह। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 261.

(2) वचन-वक्रता

प्रेम की प्रामाणिकता। — सूरसागर, पद-3433.

(3) औचित्य

1. अलंकार — सुवर्णा, पृ० 117.
2. रस-औचित्य (शृंगार संयोग)। — ब्रज-बिहार, पृ० 63.
3. पराजय। — सुवर्णा, पृ० 117.

ययाति-आख्यान

(1) ययाति का यज्ञ करना

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — अंगराज, पृ० 185.

जीवन-दर्शन

राष्ट्रीयता।

(2) ययाति से शर्मिष्ठा का सम्बन्ध

अलंकार

उदाहरण—मानवों का असुरों से सम्बन्ध स्थापित होने का उदाहरण। — जयभारत, पृ० 74.

(3) ययाति को जवानी की पुनः प्राप्ति

अलंकार

उपमा—सुख की स्थिरता चाहने वाले व्यक्तियों के लिए उपमान। — कृष्णायन, 7।178.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) ययाति का यदु को शाप

अलंकार

काव्यलिंग—उग्रसेन को कृष्ण द्वारा आसन देने का हेतु ययाति का यदु को शाप ।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 3.

(5) ययाति का स्वर्ग से गिरना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन ।	विश्राम सागर पृ० 331.

(6) ययाति का राज्य त्याग

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि ।	रुक्मि-परिणय पृ० 281.

याज्ञवल्क्य-गार्गी आख्यान

अलंकार

उदान्त—चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन ।	मधुपर्क,2।19.

युधिष्ठिर का कंक बनना

प्रतीक

कंक—क्षुद्र व्यक्ति	अंगराज, पृ० 130.

रघु आख्यान

(1) रघु द्वारा सर्वत्याग

(1) अलंकार

उदात्त (1) कृष्ण के औदात्य का वर्णन ।	मधुपर्क, 7।59.
(2) कमण्डल (त्याग की महत्ता का कथन)	मधुपर्क, 13।119.

(2) प्रतीक

रघु-प्रजा सेवक	मधुपर्क, 5।107

(3) औचित्य

1. कुल, विचार,	कृष्णायन, 7।104.

(4) जीवन-दर्शन

1. त्याग ।	मधुपर्क, 13।119.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) लोक-कल्याण — मधुपर्क, 5।108

(2) रघु द्वारा शेर से गाय की रक्षा

अलंकार

(उदाहरण) रुक्मिणी की शिशुपाल की रक्षा करने के लिए उदाहरण। — विश्राम सागर, पृ० 365.

रक्तबीज-आख्यान

अलंकार

उदात्त—दुर्गा का औदात्य-वर्णन। — ब्रजचन्द्र विनोद. (पू०) पृ० 475.

रंतिदेव-आख्यान

(1) दृष्टान्त

दान के महत्व का प्रतिपादन। — जरासंध, पृ० 91-93.

(2) औचित्य

दानवीर।

(3) जीवन दर्शन

प्रेम-भावना।

राम-आख्यान

(1) राम-अवतार

(1) अलंकार

1. उत्प्रेक्षा—पापी पुत्रों में राम की संभावना। — सेनापति कर्ण, पृ० 26.

2. उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन। —
   1. प्रेम-मालिका, पद-26 (भा० ग्रं०)
   2. गीत-गोविन्दानन्द, पद-14.
   3. विश्राम-सागर, पृ० 312.
   4. कृष्णायन, (बिसाहूराम) पृ० 34.
   5. हृदय-तरंग, पृ० 204, (समस्यापूर्ति)

3. उदाहरण—देवकी द्वारा अलौकिक पुत्र जन्म का स्वप्न देखने का उदाहरण। — कृष्णायन, 1।34.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. उल्लेख—श्रीकृष्ण बलराम का अनेक प्रकार से उल्लेख।	कृष्णायन, 2।26.
5. काव्यलिंग—रामवतार का कारण मानवता का कल्याण।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 100.

(2) दृष्टान्त

भारत की महिमा की पुष्टि।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 108.

(3) उल्लेख

यशोदा का कृष्ण को कहानी सुनाना।	व्रजचन्द्र विनोद, पृ० 76 (पू०)

(4) औचित्य

अलंकार।	मधुपुरी, पृ० 5.

(5) जीवन-दर्शन

1. होनी की प्रवलता।	व्रजचन्द्र विनोद, पृ० 355 (पू०)
2. लोक-कल्याण।	मधुपर्क, 9।27.

(2) राम द्वारा यज्ञ रक्षा/जनकपुरी जाना/धनुष भंग

(1) अलंकार

1. अपह्नुति (सन्देहगर्भा) हो न हो कहकर श्याम का निषेध करते हुये राम की स्थापना।	द्वापर, पृ० 144.
2. उत्प्रेक्षा—श्रीकृष्ण के जनकपुरी जाते समय श्रीकृष्ण में राम की संभावना।	कृष्णायन, 4।145.
3. उदात्त—राम व कृष्ण के औदात्य का कथन।	1. सूरसागर, पद-3649, 3698, 4103. 2. ललन-सागर, 482.
4. उदाहरण—(1) श्रीकृष्ण के मंच पर जाने के लिए उदाहरण।	मधुपुरी, 16।40.
(2) पाण्डवों द्वारा मत्स्य भेद अवसर के लिए उदाहरण।	पार्थपत्नी महासती, द्रौपदी, पृ० 330.
3. श्रीकृष्ण के वरुण लोक में प्रवेश के लिए उदाहरण।	व्रजचन्द्र-विनोद, (पू०) पृ० 201
(4) अभिमन्यु द्वारा चक्रव्यूह भेदन के लिए उदाहरण।	जयद्रथ वध, पृ० 6.
(5) कंस को यज्ञशाला में कृष्ण द्वारा धनुष तोड़ने के लिए उदाहरण।	देवकी, पृ० 151.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6. निदर्शना, उदाहरण—दो कहुं के प्रयोग से असंभव सम्बन्ध-उपमा का परिकल्पक तथा त्यों के प्रयोग से उदाहरण की स्पष्टता। अलौकिक लीला, 5।25.(प्रे०स०)

(2) प्रतीक

स्वयंवृता सीता—वरण की गई पत्नी। राधा, पृ० 16.

(3) वचन-वक्रता

वियोग प्रस्तुतीकरण के लिए। सूरसागर, पद-4।54.

(3) रामवनगमन

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास--(1) पीड़ा की पहिचान का समर्थन। सूरसागर, पद-3849.

(2) कहुँ-कहुँ गुण हूँ होत सुखदाता का विशेष वाक्य (राम-आख्यान) से समर्थन। विश्राम-सागर, पृ० 346.

2. उत्प्रेक्षा—राम के बिना कौशल्या का रहना। कुन्ती में कौशल्या की संभावना। जयभारत, पृ० 142.

3. उदाहरण—(1) कुब्जा द्वारा कृष्ण को अपने पास रखने के लिए उदाहरण। उद्धव-शतक (रसाल) पद-47.

(2) कृष्ण बलराम के मथुरागमन पर ब्रजवासियों के दुखी होने का उदाहरण। ब्रजचन्द्र विनोद (पू०)पृ० 355.

4. उपमा---(1)पाण्डवों के लिए उपमान। अंगराज, पृ० 81.

(2) श्रकृष्ण के लिए उपमान। मधुपर्क, 11।95

(3) श्रीकृष्ण बलराम के मथुरागमन पर ब्रजवासियों के दुखी होने की उपमा। देवकी, पृ० 148.

(2) दृष्टान्त

1. आर्य नीति प्रेम का आधार। कृष्णायन, 1।169.

2. दुख शाश्वत सत्य। जयभारत पृ० 157.

3. दोनों ओर सद्भाव से त्याग संभव। जयभारत, पृ० 280-281.

4. जीवन आदर्शों की पुष्टि। पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 328.

5. पुत्र द्वारा स्वधर्म पालन। मधुपुरी, पृ० 179.

6. प्रत्येक व्यक्ति पर विपत्ति पड़ने की पुष्टि। कृष्णायन, (बिसाहूराम) पृ० 143.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) औचित्य

विचार। — कृष्णायन, 1।169, 2।77.

(4) जीवन-दर्शन

1. त्याग। — कृष्णायन, 1।169.
2. पुरुषार्थ। — 1, मधुपर्क, 13।119-120.
2. सेनापति कर्ण, पृ० 157.

(4) राम की निषाद पर कृपा

दृष्टान्त

भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि। — हृदय-तरंग, पृ० 147.

(5) राम की केवट पर कृपा

अलंकार

उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन। — प्रेम-प्रलाप, पद-72 (भा०-ग्रं०)

(6) राम पर शिवरी कृपा

अलंकार

1. उदात्त—भगवान के औदात्य-कथन। — 1. सूरसागर, पद-25. 2. प्रेम-प्रलाप, पद-72. (भा० ग्रं०) 3. ललन-सागर, पद-481. 4. ललन-सागर, पद-496.

2. उदात्त, सन्देह—(1) कृष्ण का औदात्य-कथन। — विनय प्रेम पचास, पद-38 (भा०-ग्रं०)

(2) याद हो न कि याद हो में सन्देह।

3. काव्यलिंग, उदाहरण—(1) प्रेम के फंद में पड़ने का हेतु प्रीति के प्रभाण की प्रसिद्धि। — नटनागर विनोद, पृ० 31.

(2) गोपियों के प्रेम के लिए शिवरी प्रेम का उदाहरण।

(2) दृष्टान्त

भगवान के प्रेम की पुष्टि। — सूरसागर, पद-13.

(3) औचित्य

अलंकार। — नटनागर विनोद, पृ० 31.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) जीवन-दर्शन

1. प्रेम भावना । — महारास, पृ० 100.
2. समदर्शिता ।

(7) राम द्वारा जटायु-उद्धार

(1) अलंकार

1. उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन। — 1. सूरसागर, पद-27, 119, 123, 306. 2. प्रेम प्रलाप, पद-72.(भा०ग्रं०) 3. स्फुट कविताएँ, पद-8.

2. उदाहरण—(1) पतितों के लिए उदाहरण। — सूरसागर, पृ० 158.

(2) पतितों के उद्धार का उदाहरण। — —वही—219.

3. काव्यलिंग—उद्धार का हेतु नाम लेना। — सूरसागर, पद

4. उदात्त, सन्देह—(1) भगवान का औदात्य कथन। — विनय प्रेम पचासा, पद-38. (भा० ग्रं०)

(2) तुम्हें याद हो कि न हो में सन्देह व्यंजित।

(2) दृष्टान्त

1. बिना परिश्रम यश प्राप्ति। — सूरसागर, पद-132.
2. भगवत स्मरण से अभय पद प्राप्ति। — —वही—193.
3. भगवान की भक्त वत्सलता की पुष्टि। — प्रेम प्रलाप, पद-33 (भा० ग्रं०)

(3) वचन-वक्रता

1. उपालम्भमूलक। — सूरसागर, पद-179.
2. उपालम्भमूलक भक्ति। — श्री विष्णुलहरी पद-15.(रत्नाकर)

(4) औचित्य

अलंकार। — नटनागर विनोद, पृ० 31.

(5) जीवन-दर्शन

प्रेम भावना

(8) राम द्वारा विराध पर कृपा

अलंकार

(उदात्त) भगवान का औदात्य-कथन। — प्रेम-प्रलाप, पद-41 (भा० ग्रं०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(9) राम की सुग्रीव से मित्रता। बानरों पर कृपा

अलंकार

1. उदात्त—भगवान के औदात्य का कथन।	प्रेम-प्रलाप, पद 41, 72 (अ० ग्रं०)
2. उदात्त, सन्देह (1)भगवान के औदात्य का कथन।	विनय-प्रेम-पचासा, पद 38 (भा० ग्रं०)
(2) याद हो न कि याद हो में संदेह व्यंजित।	
3. उदाहरण—कर्ण की दुर्योधन से मित्रता विभिन्न उदाहरण।	अंगराज, पृ० 17.
4. काव्यालिंग,-उदाहरण—(1) न डरने के हेतु प्रीति के प्रमाण की प्रसिद्ध।	नटनागर विनोद, पृ०31
(2) गोपियों के प्रेम के लिए बानरों के प्रेम का उदाहरण।	
5. परिवृत्ति, यथाक्रम—(1) बाली और रावण की सम्पदा सुग्रीव। विभीषण को देना।	हृदय-तरंग, पृ० 15 (उपालम्भ)
(2) बाली का सुग्रीव, रावण का विभीषण सेसम्बन्ध स्थापित करना।	

(2) दृष्टान्त

(1) मित्रता का निर्वाह।	ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 460.
(2)भगवान की भक्त वत्सलता की पुष्टि।	प्रेम-प्रलाप, पद 33 (भा० ग्र०)

3.वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक भक्ति।	हृदय-तरंग, पृ० 15

4. औचित्य

अलंकार।	नटनागर विनोद, पृ० 31

(10) राम लक्ष्मण पर शूपर्णखां का मोहित होना

(1) अलंकार

(1) उदाहरण—कुब्जा का श्रीकृष्ण के मोहित होने के लिए उदाहरण	विश्राम-सागर, पृ० 347
(2) उपमा—हिडिम्बा के लिए शूपर्णखां और भीम के लिए लक्ष्मण उपमान।	जयभारत, पृ०61.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

(1) कृष्ण के रूप रहस्य पर व्यंग्य — विश्राम-सागर, पृ० 350

(2) स्वार्थपरता की पुष्टि। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 79

(3) वचन-वक्रोक्ति

वियोग प्रस्तुतीकरण। — सूरसागर, पद 3979.

(11) राम द्वारा खर दूषण आदि का वध

अलंकार

1. उदात्त—राम के औदात्य का कथन। — गीत गोविन्दानन्द, पद-15. (भा० ग्रं०)

2. उदाहरण सन्देह--अर्जन के कौरवों से युद्ध का संदिग्ध वर्णन। — ब्रजचन्द्र विनोद (पू०) पृ० 348.

(12) सीता हरण

(1) अलंकार

1. अपह्नुति-(1)तारों का निषेध कर रावण के चंगुल में फंसी सीता के आसुओं की स्थापना। — अंगराज, पृ० 145-146.

2. अपह्नुति, सन्देह—(1) आँसुओं का निषेध का सीता द्वारा गिराये गये आभूषणों की स्थापना और सन्देह व्यंजित। — अंगराज, पृ० 145-146.

(2) चन्द्र की कलंक लेखा का निषेध का सीता के मन में रमे हुए राम की स्थापना तथा उसका भी निषेध का सीता के मन में भय की कालिमा की स्थापना और सन्देह व्यंजित। — अंगराज, पृ० 145-146.

3. अर्थान्तरन्यास—(1) पीड़ा की पहिचान का समर्थन। — सूरसागर, पद-3847.

(2) अतिशयता से कष्ट उत्पन्न होने का समर्थन। — ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 457.

(3) होनी की प्रबलता का समर्थन। — ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 459.

4. उल्लेख--संदेह के साथ कल्पना के विविधगामी होने का उल्लेख। — सेनापति कर्ण, पृ० 50

5. उत्प्रेक्षा—अशोक-वाटिका में सीता जाम्ववती में सीता की संभावना। — कृष्णायन, 3।89.

6. उदाहरण—कृष्ण अर्जुन का युधिष्ठिर की रक्षा के लिए सम्पर्क को छोड़कर जाने के लिए — जयभारत, पृ० 372.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम द्वारा सीता की रक्षा के लिए लक्ष्मण को छोड़कर जाने का उदाहरण।	
7. उपमा (1) मृग के लिए माया मृग (हेम मृग) का उपमान।	जयभारत, पृ० 372.
(2) भौमासुर के चंगुल में फंसी राजकुमारियों के लिए उपमान।	पुरुषोत्तम, पृ० 181.
8. मालोपमा—कृष्ण के ध्यान में बैठी हुई रुक्मिणी के लिए अनेक उपमान।	पुरुषोत्तम, पृ० 168.
9. श्लेष—सीता श्लेष शब्द (सीता-लक्ष्मी-पृथ्वी)।	अंगराज, पृ० 179.

(2) दृष्टान्त

अबला के अपमान का प्रतिकार।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 39.

(3) प्रतीक

1. स्वर्ण मृग—अलभ्यवस्तु।	गोपिका, पृ० 104.
2. हेममृग—संकट।	जयभारत, पृ० 169.
3. मैथिलियां—परगृहोषिता।	पुरुषोत्तम, पृ० 184.

(4) जीवन-दर्शन

अति सर्वत्र वर्जयेत।	ब्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ०-457.

राम द्वारा विभीषण पर कृपा

(1) अलंकार

1. उत्प्रेक्षा—पर्वत में क्षत्र की इन्द्र में विभीषण की संभावना।	
2. काव्यलिंग, उदाहरण—(1) प्रेम में पड़ने का हेतु प्राप्ति के प्रमाण की प्रसिद्धि।	नटनागर विनोद, पृ० 31.
(2) गोपियों के प्रेम के लिए विभीषण के प्रेम का उदाहरण।	
3. परिवृत्ति—रावण से सम्पत्ति लेकर विभीषण को देना।	हृदय-तरंग, पृ० 15. (उपालम्भ)

(2) दृष्टान्त

1. भगवान की भक्त-वत्सलता की पुष्टि।	सूरसागर, पद-35.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. भगवान के भक्तों को अभय प्राप्ति। —वही-36.

3. प्रेम से मोक्ष प्राप्ति। —वही-176.

4. भगवान के उद्धार करने की क्षमता की पुष्टि। दैत्य-प्रलाप, पृ० 651. (भा०ग्रं०)

(3) औचित्य

अलंकार। नटनागर विनोद, पृ० 31.

(4) वचन-वक्रता

उपालम्भमूलक भक्ति। 1. सूरसागर, पद-135.
2. हृदय-तरंग, पृ० 15.

(14) राम द्वारा समुद्र-वंधन्

वचन-वक्रता—प्रेम की प्रामाणिकता। सूरसागर, पद-3433.

राम द्वारा कुम्भकरण-वध

(1) अलंकार

1. उदाहरण—खलों का उदाहरण। सूरसागर, पद-158.

2. उपमा—दन्तवक्र के लिए कुम्भकर्ण उपमान। रुक्मिणी-परिणय, पृ० 158.

(2) प्रतीक

कुम्भकरण-भयंकराकार। जयभारत, पृ० 35.

(3) उल्लेख

नारद का युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में राजाओं से कथन। व्रजचन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 60.

(4) औचित्य

निन्दा। जयभामत, पृ० 35.

(5) जीवन-दर्शन

होनी की प्रबलता। व्रजचन्द्र विनोद, पृ० 355 (पू०)

राम द्वारा रावण-वध,

(1) अलंकार

1. अपह्नुति— लाल पीले श्वेत और काले नटनागर-विनोद, पृ० 142.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बादलों का निषेध कर राम की सेना के रीछ बानरों की स्थापना ।	
2. अर्थान्तरन्यास---(1) होनी की प्रबलता का समर्थन ।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 355.
2. अति सर्वत्र वर्जयेत् ।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पू०) पृ० 355.
3. अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन।	विश्राम-सागर, पृ० 331.
4. रावण की निर्दोष पिता का सामान्य वाक्य द्वारा समर्थन ।	जरासंध, पृ० 2,
3. उत्प्रेक्षा—दुर्योधन के वक्ष पर लगे अगणित घावों में राम के युद्ध के चित्रण की संभावना ।	कृष्णायन, 6।44.
4. उदात्त —(1) दक्षिणान्त की श्रेष्ठता का वर्णन ।	अंगराज, पृ० 12.
(2) राम के औदात्य का वर्णन ।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 33.
(3) भगवान का शौर्य कथन ।	सूरसागर, पद-839.
5. उदाहरण—राम रावण युद्ध श्रीकृष्ण वाणासुर युद्ध के लिए उपमान ।	ऊषाहरण, पृ० 53.
6. उपमा—(1) कृष्ण और जरासंध-युद्ध के लिए राम-रावण युद्ध की उपमा ।	जरासंध-वध, पृ० 75.
(2) बलराम की राम से उपमा ।	जरासंध, पृ० 61.
7. काव्यलिंग—कहानी गूँथने का हेतु खाण्डव-दाहक वाणों का प्रयोग ।	पुरुषोत्तम, पृ० 236.
8. निदर्शना —हिरण्यकशिपु, दशशीश का मगधेश और चेदिराज का असंभव सम्बन्ध ।	कृष्णायन, 4।9.
9. परिवृत्ति—परिवृत्ति की प्रतीति में रावण वध सहायक ।	हृदय-तरंग, पृ० 15. (उपालम्भ)
10. अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, रूपक, सन्देह-	जरासंध, पृ० 4.
(1) जरासंध की सेना का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन ।	
(2) जरासंध की सेना में रावण की सेना की संभावना ।	
(3) रूपक भी ध्वनित ।	
(4) जरासंध की गज सेना में लंकापुरी की सेना का सन्देह ।	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11. उपमा, यमक — (1) कौशल्या सुत के लिए राम उपमान। — जरासंध-वध, पृ० 58.

(2) कौशल्या सुत-कृष्ण की सेना का एक वीर व राम दो अर्थों में प्रयोग।

(2) दृष्टान्त

1. भगवान की भक्त वत्सलता की पुष्टि। — सूरसागर, पद-18.
2. शत्रु को छोटा न समझने की पुष्टि। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 143.
3. परगृहोसिताओं की रक्षा। — पुरुषोत्तम, पृ० 184.
4. होनी की प्रबलता की पुष्टि। — विश्राम-सागर, पृ० 291.
5. मरण वीरों का धर्म। — सेनापति कर्ण, पृ० 38.
6. अबला के अपमान का प्रतिकार। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी पृ० 39.

(3) प्रतीक

1. रावण-अन्याय, राम-न्याय, सीताहरण-दुष्कर्म। — गोपिका, पृ० 95.
2. राम-देववृत्ति, रावण-असुरवृत्ति। — जयभारत, पृ० 404.
3. रावण-दुष्ट, असद्वृत्तियों का पोषक व्यक्ति। — गोपिका, पृ० 169.
4. राम-इष्ट, रावण-अवांछनीय व्यक्ति। — जयभारत, पृ० 213.
5. रावण-नारीत्राशक। — नटनागर विनोद, पृ० 142.
6. राम का लंका विजय कर अयोध्या वापिस आना-कष्टों का दूर होना। — उत्तर-जय पृ० 42.

(4) वचन-वक्रता

1. प्रेम की प्रामाणिकता। — सूरसागर, पद 3433, 3434.
2. शक्ति की प्रामाणिकता। — —वही—745.
3. सद् और असद् वृत्तियों के द्योतन के लिए। — पुरुषोत्तम, पृ० 38.
4. उपालम्भमूलक भक्ति। —
   1. सूरसागर, पद-135.
   2. रुक्मिणी-परिणय, पृ० 86, 107.
   3. हृदय-तरंग, पृ० 15.

(5) औचित्य

1. प्रेम। — सूरसागर, पद-3434.
2. संवाद। — पुरुषोत्तम, पृ० 38.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. नीति।	ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 499.

(6) **जीवन-दर्शन**

1. कर्म दर्शन।	सेनापति कर्ण, पृ० 38.
2. नारी का अपमान करने वाले का अन्त अवश्यंभावी।	पार्थपत्नी महासती, द्रौपदी, पृ० 39.
3. होनी प्रबलता।	1. विश्राम-सागर, पृ० 336. 2. कूबरी, 7।1. 3. ब्रजचन्द्र विनोद (पू०) पृ० 355.
4. अविनयी दण्डनीय।	पुरुषोत्तम, पृ० 184.
5. गर्वत्याग, त्याग।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 162.
6. लोक-कल्याण।	कृष्णायन, 7।47.

(16) सीता परीक्षा

(1) **अलंकार**

उत्प्रेक्षा—वियोगिनी राधा में सीता की संभावना।	फेरि-मिलिबो, पृ० 20.

(2) **दृष्टान्त**

पुरुष गुरुतर अपराध के बाद भी दोषमुक्त।	महारास, पृ० 68.

(3) **प्रतीक**

पावक-परीक्षा-दोषी ठहराना।

(17) सीता-परित्याग

(1) **अलंकार**

1. अर्थान्तरन्यास—बिना त्याग के जन-काज संभव न होने का समर्थन।	कृष्णायन, 7।158.
2. उदात्त—चित्त की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 2।21.
3. काव्यलिंग, प्रतिवस्तूपमा—(1) सीता परित्याग का कारण पर गृहवास। (2) राम द्वारा सीता का न रखना और ढाम का न होना जैसी एक क्रिया ही पुनरुक्त दोष के बचने के लिए कथित।	कृष्णायन, 3।10.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. निदर्शना काव्यलिंग, काकु-वक्रोक्ति— (1) राम और कंस में असंभव सम्बद्ध। (2) प्रजाव्रत के कारण सीता परित्याग। (3) का तजे कंस रावरो में स्वर विकार द्वारा न तजना व्यंजित।	मधुपर्क, 9।31.
5. प्रतिवस्तूपमा—तजी और परित्यक्ता एक ही क्रिया दो रूपों में कथित।	पुरुषोत्तम, पृ० 119.

(2) दृष्टान्त

1. अभिजात्य कुल में जन्म लेकर भी कष्ट संभव।	देवकी, पृ० 99.
2. व्रताचरण का प्रतिपादन।	रश्मिरथी, पृ० 54.
3. नियति की अवश्यंभाविता।	1. जयभारत, पृ० 157. 2. पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 337.
4. पुरुष की निष्ठुरता का प्रतिपावन।	पुरुषोत्तम, पृ० 61.
5. परित्यक्ता-स्त्रियों का करुण अन्त।	राधा, पृ० 17.

(3) वचन-वक्रता

विचार प्रस्तुतीकरण के लिए।	1. पुरुषोत्तम, पृ० 221. 2. गोपिका, पृ० 183. 3. द्वापर, पृ० 40.

(4) औचित्य

1. विचार।	द्वापर, पृ० 40.
2. व्रताचरण।	रश्मिरथी, पृ० 54.

(5) जीवन-दर्शन

1. नियतिवाद।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 336.
2. त्याग।	कृष्णायन, 7।157-158.
3. वचन-पालन।	रश्मिरथी, पृ० 54.

(18) राम का लव कुश से युद्ध

(1) अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन।	विश्राम-सागर, पृ० 331.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

आर्यवीरों के पराक्रम की पुष्टि। — जयद्रथ-वध, पृ० 6.

(3) जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ।

रावण-आख्यान

(1) रावण-जन्म

दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन और कर्मणा जाति का प्रतिपादन। — कृष्णायन, (विसाहूराम) पृ० 379.

(2) रावण को नलकूबर का शाप/रम्भा-अपमान

दृष्टान्त

अबला अपमान का प्रतिकार। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी पृ० 39.

(3) रावण का काल को पकड़कर पाटी से बांधना

दृष्टान्त

भाई से वैर का परिणाम। — ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 162.

(4) रावण का विभीषण से बैर

दृष्टान्त

समय की प्रवलता की पुष्टि। — कूबरी, 7।1.

राहु-केतु आख्यान

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—होनी की प्रबलता का समर्थन। — ब्रजचन्द्र विनोद, (पू०) पृ० 9, 355.

2. उत्प्रेक्षा—(1) गोपी मुख में चन्द्रमा अलकों में राहु की संभावना। — सूरसागर, पद-2065.

(2) मुख में चन्द्रमा नील पट में राहु की संभावना। — —वही, 3388.

(3) काजल में राहु केतु गोपी मुख में चन्द्र की संभावना। — —वही, 4761.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) गोपियों में चन्द्र कामदेव में राहु की संभावना। —वही, 4436.

(5) (राहु ग्रसित चन्द्रमा में से अमृत टपकना) वियोगिनी राधा के टपकते आंसुओं में राहु ग्रसित चन्द्रमा से अमृत टपकने की संभावना। गीत-गोबिन्दानन्द, पद-21 (भा० ग्रं०)

(6) रोहिणी में राहु ग्रस्त इन्द्र ज्योत्सना की संभावना। कृष्णायन, 1।31.

(7) (राहु का अमृत चुराकर पीना) मुख में विधु तथा मुख पर लटकी काली अलकों में राहु की संभावना। कृष्णायन, 1।57.

(8) ऊषा के मुख पर फैले केशपाश में राहु ग्रसित चन्द्र की संभावना। ऊषाहरण, पृ० 12.

(9) ब्रजबालाओं के मुख में चन्द्रमा और मुख पर फैले केशपाश में राहु की संभावना। महारास पृ० 31.

(10) मुख में विधु वक्र भ्रकुटियों में राहु की संभावना। ललन-सागर, पद-901.

3. उदाहरण—(1) श्रीकृष्ण बिना गोपियों की दशा के लिए उदाहरण। सूरसागर, पृ० 3840.

(2) मर्त्यों के लिए मृत्यु की अवश्यंभाविता के लिए उदाहरण। कृष्णायन, 6।262.

(3) राजाओं द्वारा युधिष्ठिर को उपहार देने के लिए राहु द्वारा विष्णु को अमृत देने का उदाहरण। द्रौपदी, पृ० 29.

(4) भीष्म कीर्ति लुप्त होने के लिए राहु ग्रसित सूर्य की लुप्त कीर्ति का उदाहरण। सेनापति कर्ण, पृ० 112.

4. उपमा—(1) गोपियों के शरीर की चन्द्रमा से तुलना। सूरसागर, पद-3977.

(2) दुशासन के लिए राहु द्रौपदी के लिए चन्द्र उपमान।

(3) कृष्ण के शिशुपाल से हुए युद्ध में कटे हुए शीशों के लिए उपमान। रुक्मिणी-परिणय, पृ० 131-132.

(4) कर्ण के लिए राहु उपमान। अंगराज. पृ० 264.

(5) (विष्णु द्वारा राहु का शीश काटना) महाभारत के युद्ध में कटे पड़े सिर और भुजाओं के लिए उपमान। जयभारत, पृ० 364.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5. उल्लेख —संतान सुख देने वाले अदृष्ट के कार्यों का वहु विधि उल्लेख।	फेरि मिलिवो, पृ० 99.
6. उत्प्रेक्षा, रूपक—(1) ऊषा की मांग के सिन्दूर में राहु रसना की संभावना।	ऊषा हरण, पृ० 21.
(2) ललाट पर इन्दु, केशपाशों पर राहु तथा लाल सिन्दूर पर राहु की रसना का आरोप।	
7. उपमा, रूपक —(1) केशों के लिए राहु उपमान। (2) मुख पर चन्द्र का आरोप।	प्रेमघन-सर्वस्व, पृ० 57.
8. उपमा, काव्यलिंग—(1) श्याम (कृष्ण) के लिए चन्द्रविम्व तथा कालयवन के लिए राहु उपमान। (2) श्यामवर्ण को शिशु रूप दिखाने में हेतु है कृष्ण के पीतवस्त्र की पीत आभा।	द्वापर-प्रवेश, पृ० 57.
9. काव्यलिंग—चन्द्र ग्रहण का रूप चन्द्र मृदुताई।	कृष्णायन, 2।187.
10. दृष्टान्त--रुक्मिणी को शिशुपाल द्वारा पड़िते करने की समता का राहु दृष्टान्त।	पुरुषोत्तम, पृ० 157.
11. रूपक—(1) नाद पर ज्योति का आरोप, राहु-उपमान।	सुवर्णा, पृ० 35.
(2) द्रौपदी पर शशि-सुधा और शिशुपाल के कल्याण पर राहु का आरोप।	जयभारत, पृ० 256.
(3) कुरुजन पर चन्द्रकुल शकुनि पर राहु का आरोप।	द्रौपदी, पृ० 25.
(4) स्वार्थ पर राहु का आरोप।	जरासंध, पृ० 39.
(5) यादवकुल पर पूर्णचन्द्र का और अहंकार पर राहु का आरोप।	उत्तर जय, पृ० 51.
(6) महारुज पर राहु का, महाजन पर सोम का आरोप।	मधुपर्क, 8।78
(7) 1. कुरुकुल में रवि का और शिखण्डी पर राहु का आरोप। 2. नारी है कि नर है राहु वह बोलो सखे में सन्देह व्यंजित।	सेनापति कर्ण, पृ० 20.
12. रूपकातिशयोक्ति—(1) उपमान चन्द्र और राहु का उल्लेख उपमेय कृष्ण और कंस का उल्लेख नहीं।	देवकी, पृ० 37.
(2) केवल कृष्ण के लिए चन्द्र और कंस के लिए राहु का कथन।	द्वापर, पृ० 190.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

13. विभावना—बिना कारण के राहु द्वारा सूर्य को ग्रसित किया जाना। — रुक्मिणी-परिणय, पृ० 121.

(2) दृष्टान्त

1. कष्ट में भगवान सहायक। — सूरसागर, पद-112.
2. होनी की प्रबलता। — —वही—264.
3. जन्म लेने वाले का मरण अवश्य। — व्रजचन्द्र विनोद, (उ०) पृ० 431.
4. मृत्यु से पूर्व क्षणिक उदीप्ति। — सुवर्णा, पृ० 70.

(3) प्रतीक

1. राहु—आपत्ति। — रश्मिरथी, पृ० 8.
2. केतु का इन्दु को ग्रसित करना—अनिष्ठ का संकेतक। — द्रौपदी, पृ० 37.
3. सिंहिका सुत का अदिति सुत को निगलना समय प्रतिकूलता।
4. राहु-दुष्ट व्यक्ति। — देवकी, पृ० 37.

(4) उल्लेख

ग्रहण की व्यंजना के लिए कवि कथन। — कृष्णायन, 7।149.

(5) औचित्य

1. क्रिया — ऊषाहरण, पृ० 12.
2. कुल — कृष्णायन, 1।57.
3. तत्व — द्रौपदी, पृ० 25.
4. प्रतिभा — पुरुषोत्तम, पृ० 157.
5. शास्त्र — ऊषाहरण, पृ० 21-22.
6. भक्तिभाव — विश्राम-सागर, पृ० 287.
7. शृंगार अनौचित्य — ऊषाहरण, पृ० 21-22.

(6) जीवन दर्शन

1. नारी में रक्षा करने की सामर्थ। — जयभारत, पृ० 256.
2. होनी की प्रबलता। — व्रजचन्द विनोद, पृ० 9, 355 (पू०)
3. मृदुता कष्ट का कारण। — कृष्णायन, 2।187.
4. गर्व-त्याग। — जरासंध, पृ० 39.
5. धैर्य धारणा। — कृष्णायन, 6।262.
6. संसार की नश्वरता। — द्रौपदी, पृ० 25.
7. प्राचीन विश्वासों के प्रति आस्था। — जरासंध पृ० 30.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध

उदाहरण---अर्जुन कौरव युद्ध का लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध से उदाहरण। — ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 348.

लोमश-आख्यान

प्रतीक—लोमस-त्यागी — सेनापति कर्ण, पृ० 55.

वराह-अवतार/हिरण्याक्ष-वध

(1) अलंकार

1. अपह्नुति—अवतरण का निषेध कर अभ्युदय की स्थापना। — देवकी, पृ० 6

2. अर्थान्तरन्यास—(हिरण्याक्ष-वध) होनी की प्रबलता का समर्थन। — ब्रजचन्द्र विनोद, (पू०) पृ० 355

3. अर्थान्तरन्यास, उपमा—(वराह का पृथ्वी को लेकर जल से बाहर निकलना। — जयभारत, पृ० 393.

(1) वीर द्वारा किसी की प्रतारणा सहन न करने का समर्थन।

(2) दुर्योधन के लिए वराह उपमान।

4. उदात्त—भगवान का औदात्य-कथन। —
1. सूरसागर, पद 839.
2. विश्राम-सागर, पृ० 312.
3. प्रेम-मालिका, पद-26 (भा० ग्रं०)
4. गीत गोविन्दानन्द, पद-14 (भा० ग्रं०)
5. हृदय-तरंग, पृ० 204 (समस्या पूर्ति)
6. कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 34.

5. उत्प्रेक्षा—(1) पर्वत के खड्डों में वराह द्वारा खोदी गई पृथ्वी की संभावना। — कृष्णायन, 2।94.

(2) (विष्णु-हिरण्याक्ष युद्ध) भीम में विष्णु तथा दुर्योधन में हिरण्याक्ष की संभावना। — कृष्णायन, 3।55.

(3) भीम में आदि वराह की संभावना। — कृष्णायन, 5।103.

6. उदाहरण—(1) प्रस्तुत भीम द्वारा युद्ध में सैन्य-व्यूह को विदालित करना। — जयद्रथ-वध, पृ० 18.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) प्रस्तुत वीर द्वारा रमणी का भार वहन करना।	सेनापति कर्ण, पृ० 162।63.
(3) प्रस्तुत अभिमन्यु का चक्रव्यूह में प्रवेश।	सुवर्णा, पृ० 70.
7. काव्यलिंग—(1) हिरण्याक्ष वध का हेतु भावी शान्ति की स्थापना।	जरासंध-वध, पृ० 7
(2) वराह बनने का हेतु पृथ्वी की रक्षा।	पार्थपत्नी महासती द्रोपदी, पृ० 106.
8. काव्यलिंग, उदात्त—अवतरण का हेतु भक्त जनों को सुख देना और भगवान की बल समृद्धि का प्रतिपादन।	भगवान श्रीकृष्णालीलामृत, पृ० 99.
9. निदर्शना—हिरण्यकशिपु और दशशीश का मगधेश और चेदि अवनीश से असंभव सम्बन्ध।	कृष्णायन, 4।9.

(2) दृष्टान्त

अहंकार से नाश अवश्य।	सूरसागर, पद-54

(3) वचन-वक्रता

1. शक्ति की प्रामाणिकता।	1. सूरसागर, पद-745
2. प्रेम की प्रामाणिकता।	2. सूरसागर, पद-3433.
3. सद् और असद् वृत्तियों के द्योतन के लिए।	पुरुषोत्तम, पृ० 38.

(4) उल्लेख

नारद का युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में राजाओं से कथन।	व्रजचन्द्र विनोद, पृ० 60 (उ०).

(5) औचित्य

1. वीर रस	कृष्णायन, 3।55
2. विचार	
3. संवाद	पुरुषोत्तम, पृ० 38.
4. प्रतिनायक	जयभारत, पृ० 393.
5. भक्तिभाव	विश्राम सागर, पृ० 287.

(6) जीवन-दर्शन

1. होनी की प्रबलता	ब्रजचन्द्र विनोद, पृ 355 (पू०)
2. युद्ध-दर्शन	जरासंध, पृ० 7

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसु-आख्यान

(1) वसुओं को मुनि वशिष्ठ का शाप

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुख-दायक होने का समर्थन। — विश्राम-सागर, पृ० 331.

2. देवकी का चिन्तन। — सुवर्णा, पृ० 31.

(2) उल्लेख

कर्ण का युद्ध-पूर्व चिन्तन-गंगा द्वारा वसुओं को जल में प्रवाहित करना। — —वही, पृ० 46.

(2) वसुओं का आठ वनिताओं से विवाह

अलंकार

उपमा—कृष्ण की आठ पत्नियों के लिए वसु-दिगंगनाएं उपमान। — फेरि-मिलिबो, पृ० 26.

वामन-अवतार

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—(1) मर्यादाहीनता के दुष्परिणाम का समर्थन। — जयभारत, पृ० 209.

(2) याचक के मान घटने का समर्थन। — ब्रजचन्द्र विनोद (पूर्वा०) पृ० 80.

(3) साधक के याचक न होने का समर्थन। — देवकी, पृ० 5.

2. उदात्त—(1) भगवान के औदात्य का कथन।
   1. सूरसागर, पद-94, 119, 123, 839, 1105.
   2. प्रेम-मालिका, पद-26. (भा०-ग्रं०)
   3. गीत गोविन्दानन्द पद-1214. (भा०-ग्रं०)
   4. ब्रज-बिहार, पृ० 293-294.
   5. हृदय-तरंग, पृ० 204.
   6. कृष्णायन, पृ० 34.

(2) रास की श्रेष्ठता का वर्णन। — मधुपर्क, 7।51.

(3) कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन। — अंगराज, पृ० 185

(4) कृष्ण के औदात्य का कथन।
   1. विश्राम सागर, पृ० 312.
   2. सुवर्णा, पृ० 64.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. उदात्त, काव्यालिंग—(1) कमण्डल (त्याग) की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 13।120.
(2) विष्णु के वामन होने का हेतु कमण्डल।	
3. उदात्त, कर्ण उपमा—(1) कर्ण के औदात्य का कथन।	सेनापति कर्ण, पृ० 35
(2) कर्ण के लिए उपमान (वाचक-लुप्तोपमा)	
4. उदाहरण—प्रस्तुत-कृष्ण का दुर्योधन से पाण्डवों के लिए पांच क्षेत्र मांगना।	सेनापति कर्ण, पृ० 123.
5. उपमा—(1) नर के लिए वामन उपमान।	जरासंध, पृ० 40.
(2) कृष्ण के लिए उपमान।	
6. उपमा, यमक—(1) वामन सहस्र रथियों की तुलना वामन वंधु से।	कृष्णायन, 5।106.
(2) वामन के दो अर्थ (1. वामन संख्या, 2. वामन अवतार)	जरासंध-वध, पृ० 24.
7. काव्यालिंग—(1) त्रिलोक में फिरने का हेतु आदिति सुत बलि।	सूरसागर, पद-6
(2) इच्छा पूर्ण करने का हेतु मन में वामन-रूपधारी विष्णु को दूध पिलाने की अभिलाषा।	विश्राम सागर, पृ० 302.
(3) हेतु-भक्ति हित।	सूरसागर, पद-26.
(4) वामन अवतार का हेतु भक्त जनों को सुख देना।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत पृ० 100
काव्यलिंग, उदात्त—(1) वामन का बलि सहित नाचने का हेतु राधिका का नृत्य।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 100.
(2) राधा के नृत्य की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 7।118.
9. यमक (सभंग) पद-सभंग से वामन के अलग-अलग अर्थ व्यंजित।	उद्धव-शतक (रसाल) पृ० 4.
10. हीनोदात्त, काव्यलिंग—(1) कृष्ण के अपकर्ष का वर्णन।	अंगराज, पृ० 259.
(2) वामन-अवतार का हेतु।	

(2) दृष्टान्त

1. स्याम भजन से बड़प्पन की प्राप्ति।	सूरसागर, पद-24.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. कृष्ण के रूप रहस्य पर दृष्टान्तमूलक व्यंग्य।	विश्राम-सागर, पृ० 350.
3. भगवान की भक्तों के आगे विवशता।	प्रेम-प्रलाप- पद-3. (भा०-ग्रं०)
4. कृष्ण की स्वार्थपरता की पुष्टि।	कृष्णायन (विसाहूराम) पृ० 79.
5. दान के महत्व का प्रति पादन।	जरासंध, पृ० 92.
6. भारत की महिमा की पुष्टि।	पार्थपत्नी, महासती द्रौपदी, पृ० 108.
7. जीवन-आदर्शों का प्रस्तुतीकरण।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 110.
8. अति सर्वत्र वर्जित।	ब्रजचन्द्र विनोद, (उ०) 458.
9. नारद की अभद्रता की पुष्टि।	देवकी पृ० 23.

(3) वचन-वक्रता

1. शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-745, 1115.
2. प्रेम की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-3433.
3. विरहपरक व्यंग्य।	—वही-3826.
4. विपरीत लक्ष्मणामूलक व्यंग्य।	उद्धव-शतक (रत्नाकर) पद-87.
5. उपालम्भमूलक भक्ति।	रुक्मिणी-परिणय, पृ० 86.

(4) प्रतीक

वामन—लघु, छोटा।	अंगराज, पृ० 83.
वामन—छुद्र।	1. अंगराज, पृ० 259. 2. राधा, पृ० 78.
वामनवेस—शिशु रूप।	मधुपर्क, 11।77.
वामन—लघु।	सेनापति कर्ण, पृ० 117.
वामन—लघु रूप।	कृष्णायन, 1।34.

(5) औचित्य

1. वाक्य।	अंगराज, पृ० 259.
2. अलंकार।	देवकी, पृ० 5.
3. दानवीर।	जरासंध, पृ० 91-93.
4. वृत्त।	देवकी, पृ० 23.
5. नीति।	ब्रजचन्द्र, विनोद (उ०) पृ० 449.
6. भक्तिभाव।	विश्राम-सागर, पृ० 287.

(6) जीवन-दर्शन

1. आशावाद।	विश्राम-सागर, पृ० 292.
2. अति सर्वत्र वर्जयेत्।	ब्रजनन्द्र-विनोद (उ०) पृ० 458.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. याचना में सम्मान नहीं।	ब्रजचन्द्र-विनोद, (उ०) पृ० 80.
4. गर्व-त्याग।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 108.
5. स्वार्थ-त्याग।	अंगराज, पृ० 259.
6. त्याग।	मधुपर्क, 12।119-120.
7. दान।	1. जरासंध- पृ० 92. 2. सेनापति कर्ण, पृ० 35.
8. पुरुषार्थ।	देवकी, पृ० 5.
9. युद्ध-दर्शन।	जरासंध, पृ० 40.
10. वचन-पालन।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 100.
11. मर्यादा का अतिक्रमण करने वाला व्यक्ति का शीघ्र नाश।	जयभारत, पृ० 209.
12. राष्ट्रीयता।	अंगराज, पृ० 185.

विदुर-जन्म

दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन कर कर्मणा जाति का प्रतिपादन।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 378-79.

विरोचन आख्यान

अलंकार

(उदात्त) रास की महत्ता का कथन।	मधुपर्क.

विष्णु द्वारा देवांगनाओं की रक्षा

अलंकार

उदात्त, काव्यलिंग—(1) भगवान के औदात्य का कथन। (2) ब्रह्महत्या से मुक्ति दिलाने का कारण है भगवान की करुणा-सागरता।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत।

विष्णु का वृंदा के साथ व्यभिचार

दृष्टान्त

1. भगवान की गति की अलक्षता।	सूरसागर, पद-104.
2. पुरुष गुरुतर अपराध करने पर भी दोष मुक्त।	महारास, पृ० 68.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वामित्र-आख्यान

(1) विश्वामित्र-मेनका सम्बन्ध

(1) दृष्टान्त

1. परीक्षा लेने पर सभी असफल। — प्रेम-प्रलाप, पद-65. (भा०-ग्रं०)
2. कामतत्व का प्रतिपादन। — सेनापति कर्ण, पृ० 99.

(2) प्रतीक

मेनका—पुत्री की उपेक्षा करने वाली स्त्री। — गोपिका, पृ० 130.

(3) जीवन-दर्शन

प्रवृत्ति-मार्ग। — सेनापति कर्ण, पृ० 99.

(2) विश्वामित्र को द्विजत्व की प्राप्ति

(1) अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की महत्ता वर्णन। — अंगराज, पृ० 153.

(2) दृष्टान्त

जन्मना जाति का खण्डन कर कर्मणा जाति का प्रतिपादन। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 378-79.

(3) जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ। — सेनापति कर्ण, पृ० 192.

(3) विश्वामित्र-रम्भा आख्यान

दृष्टान्त

कामतत्व का प्रतिपादन। — सेनापति कर्ण, पृ० 99.

(4) विश्वामित्र द्वारा कुत्ते का मांस खाना

(1) औचित्य

विचार। — कृष्णायन, 7।72.

(2) जीवन-दर्शन

आपत्ति काले मर्यादा नास्ति।

वेन आख्यान

(1) अलंकार

उपमा—वेन पुत्र निषाद के लिए उपमान। — कृष्णायन, 7।72.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) दृष्टान्त

राजधर्म का प्रतिपादन। — कृष्णायन, 7।55.

(3) प्रतीक

वेन--अत्याचारी, कष्टदायक। — मधुपर्क, 8।81.

(4) वचन-वक्रता

सद् और असद् वृत्तियों के द्योतन के लिए। — पुरुषोत्तम, पृ० 38.

(5) औचित्य

संवाद। — —वही—

शर्मिष्ठा-देवयानी आख्यान

(1) अलंकार

अर्थान्तरन्यास, काव्यलिंग—(1) अभिमान के दुखदाई होने का परिणाम। — विश्राम-सागर, पृ० 331.

(2) शर्मिष्ठा के दासी होने का हेतु मद।

(2) दृष्टान्त

ब्रह्मकन्या देवयानी से क्षत्रीय पुत्र ययाति से विवाह सामाजिक नियमों की दृढ़ता। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ. 15.

(3) उल्लेख

कवि कथन—यदु और पुरुवंश का परिचय। — जयभारत, पृ० 15.

शर्याति-आख्यान

अलंकार

काव्यलिंग—पालक होने का हेतु है मही का बाहुलब्धा होना। — द्वारका-प्रवेश, पृ० 49.

शान्तनु-गंगा आख्यान

(1) दृष्टान्त

वचन पर दृढ़ रहना। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 110.

(2) जीवन-दर्शन

व्रताचरण। — —वही—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव-आख्यान

(1) शिव द्वारा विषपान

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास — समरथ को नाहि दोष 'कछु' इस सामान्य वाक्य का दोनों विशिष्ट वाक्यों द्वारा समर्थन। — विश्राम-सागर पृ० 333.

2. उत्प्रेक्षा, रूपक—(1) कर्ण के लिए उपमान की संभावना (प्रतीयमाना)। — सेनापति कर्ण, पृ० 162.

(2) अपमान पर विष का आरोप।

3. उपमा—(1) कविजनों के लिए उपमान।

(2) पाण्डवों के लिए उपमान। — जयभारत, पृ० 180.

4. उपमा, रूपक — (1) सामान्य व्यक्ति के लिए उपमान। — अंगराज, पृ० 81.

(2) विपदा पर विष का आरोप।

(2) जीवन-दर्शन

1. समर्थ को दोष नहीं।	विश्राम-सागर, पृ० 333.
2. धैर्य-धारण।	अंगराज, पृ० 81·
3. पुरुषार्थ।	सेनापति कर्ण, पृ० 123.
4. व्यक्ति और समष्टि का समन्वय।	अंगराज, पृ० 81.

(2) शिव को दक्ष द्वारा शाप दिया जाना

अलंकार

काव्यलिंग — शिव के प्रेतभाव का हेतु दक्ष शाप। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत पृ० 86

(3) शिव द्वारा सती का त्याग

दृष्टान्त

एक नारी के बहु पतियों की विवाद-मूलकता। — पार्थपत्नी महामती द्रौपदी, पृ०-34, 36.

जीवन-दर्शन

मिथ्याचरण-त्याग।

(4) शिव-पार्वती विवाह

अलंकार

उदाहरण, सहोक्ति—(1) श्रीकृष्ण के — ब्रजचन्द्र विनोद (पू०) पृ० 291.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगमन पर पाताल वासियों के हृदय में उत्पन्न प्रेम के लिए उदाहृरण ।

2. सहार्थक साथ का प्रयोग ।

शिव द्वारा काम-दहन

(1) अलंकार

1. अतिशयोक्ति—कलिंग राजकुमारी का काम पत्नी से बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन । — अंगराज, पृ० 55.

2. अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन । — विश्राम-सागर, पृ० 331.

3. अर्थान्तरन्यास, सन्देह, काकु-वक्रोक्ति-- (1) संकट में किसी के सहायक न होने का समर्थन । (2) 'कि' के प्रयोग से सन्देह की प्रतीति । (3) स्वर विकार द्वारा न बचाये जाने की 'क्या' के प्रयोग से प्रतीति । — सेनापति कर्ण, पृ० 31.

4. उदात्त—(1) काम के शौर्य का वर्णन । — सेनापति कर्ण, पृ० 105.

(2) शिव के औदात्य का वर्णन । — सुवर्णा, पृ० 214.

5. उदाहरण—(1) नकुल के कर्ण से द्वैरथ युद्ध करने के लिए जाने का उदाहृरण । — अंगराज, पृ० 214.

(2) वियोगिनी राधा के श्रीकृष्ण के ध्यान में वैठने के लिए उदाहरण । — फेरि मिलिवो, पृ० 10

(3) अर्जुन द्वारा जयद्रथ पर बाण संधान करने के लिए उदाहरण । — जयद्रथ वध, पृ० 91.

(4) भगदत्त द्वारा अर्जुन पर वैष्णव अस्त्र चलाने के लिए उदाहरण । — अंगराज, पृ० 201.

6. उल्लेख, काव्यलिंग—(1) यौवन का अनेक प्रकार से उल्लेख । — मधुपर्क, 2।70.

(2) काम जलाने का हेतु शिव की विशाल शक्ति ।

7. संदेह-भीषण गर्मी का संदिग्ध वर्णन । — जरासंध, पृ० 87.

शिव द्वारा तांडव नृत्य/सृष्टि की समाप्ति

(1) अलंकार

1. उपमा—(1)श्रीकृष्ण के रास विलासों का शिव का ताण्डव नृत्य उपमान । — मधुपर्क, 2।70.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) भीम के युद्ध के लिए उपमान। सुवर्णा, पृ० 120.

(3) कर्ण के युद्ध के लिए उपमान। अंगराज, पृ० 88.

(4) अम्बा के भीष्म पर क्रोधित होने के लिए उदाहरण। जयभारत, पृ० 28.

(5) त्रिनेत्र का संहार कार्य से थक जाना। कुरुक्षेत्र के मैदान में छाये अन्धकार के लिए उपमान। सुवर्णा, पृ० 59.

2. उदात्त—राधा द्वारा बनाये गये चित्र की श्रेष्ठता वर्णन। मधुपर्क, 2।19.

3. उदाहरण-द्रोणाचार्य वध का प्रतिशोध लेने के लिए उद्यत अश्वत्थामा के लिए उदाहरण। सेनापति कर्ण, पृ० 36,

(2) प्रतीक

1. ताण्डव-नृत्य-भयंकर आपत्ति। जरासंध, पृ० 87.
2. ताण्डव-विनाश कार्य। अंगराज, पृ० 86.
3. ताण्डवी-तेज-परिवर्तन। रश्मिरथी, पृ० 49.
4. ताण्डवी-नृत्य-भयंकरता। प्रिय प्रवास, 3।14.
5. ताण्डव-नृत्य-कष्ट देना। भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 9.

शिव द्वारा त्रिपुर-दहन

(1) अलंकार

कंस की सभा में कृष्ण के क्रोधित होने की संभावना। कृष्णायन, 2।59.

1. उत्प्रेक्षा—भीम और दुशासन के युद्ध के लिए उपमान। कृष्णायन, 6।212.

2. उपमा—(1) कर्ण द्वारा बंगदेश की सेना ध्वस्त करने का उपमान। अंगराज, पृ० 88.

(2) बलराम के जरासंध युद्ध के लिए उपमान। ब्रजचन्द्र विनोद, (पू०) पृ० 453.

3. उपमा, सन्देह—(1) श्रीकृष्ण बलराम का मुष्टिक चाणूर के युद्ध के लिए उपमान। मधुपर्क, पृ० 10।91.

(2) अथवा के प्रयोग से सन्देह।

(2) प्रतीक

1. त्रिपुर पथ-कण्टकाकीर्ण मार्ग, दानवीदंभ लीला-अत्याचार। मधुपुरी, पृ० 81.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. त्रिपुरारी-अन्यायमर्दक। मधुपर्क, 11।86.

(3) **जीवन-दर्शन**

आशावाद। मधुपुरी, पृ० 81.

शिव का मोहिनी पर मोहित होना

अलंकार

अर्थान्तरन्यास—अभिमान के दुखदायक होने का समर्थन। विश्राम-सागर, पृ० 331.

शिव द्वारा इन्द्र को कवच प्रदान करना

अलंकार

उदात्त—कवच की श्रेष्ठता व्यंजित। ब्रजचन्द्र विनोद, (उ०)पृ० 370.

शिव शक्ति-आख्यान

औचित्य

विचार। द्वापर, पृ० 104.

शिवि-आख्यान

अलंकार

1. उदात्त (1) भारत की श्रेष्ठता का वर्णन। मधुपर्क, 2।16.

(2) कृष्ण के औदात्य का चित्रण। मधुपर्क, 7।59.

(3) भारत की समृद्धि का वर्णन। मधुपर्क, 9।29.

(4) वीर और पुरुषार्थ व्यक्ति का चित्रण। जरासंध, पृ० 2.

3. उदात्त, उपमा—(1) कर्ण की दानशीलता का कथन। रश्मिरथी, पृ० 58.

(2) कर्ण के लिए उपमान व्यंजित।

1. कर्ण का औदात्य कथन। सेनापति कर्ण, पृ० 35.

2. कर्ण के लिए उपमान (वाचक-लुप्तोमा)

(2) **दृष्टान्त**

1. दान के महत्व का प्रतिपादन। जरासंध, पृ० 12.

2. व्रताचरण के अनुपालन की पुष्टि। रश्मिरथी, पृ० 54.

3. परोपकार के लिए भी पर विपत्ति सिर पर धारण करना। ब्रजचन्द्र विनोद, (पू०)पृ० 193.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) **औचित्य**

1. व्रताचरण।	रश्मिरथी, पृ० 54.
2. दानवीर।	जरासंध, पृ० 91-92.

(4) **जीवन-दर्शन**

1. त्याग।	मधुपर्क, 9।26.
2. दान।	सेनापति कर्ण, पृ० 35.
3. पुरुषार्थ।	1. मधुपर्क, पृ० 123. 2. जरासंध, पृ० 2.
4. लोक-कल्याण।	जरासंध, पृ० 92.
5. वचन-पालन।	रश्मिरथी, पृ० 54.
9. राष्ट्रीयता।	मधुपर्क, 9।25-26.

श्रवण-आख्यान

(1) **अलंकार**

अर्थान्तरन्यास—कहीं-कहीं गुणों के दुखदाई होने का समर्थन। विश्राम-सागर, पृ० 346.

(2) **प्रतीक**

श्रवण-मातपितृ भक्त। जयभारत, पृ० 165.

श्रीतीर्थ में कुबेर की तपस्या

अलंकार

उदात्त—श्रीतीर्थ की श्रेष्ठता का वर्णन। कृष्णायन, 3।184.

श्रृंगी ऋषि का जन्म

दृष्टान्त

उदात्त—जन्मना जाति का खण्डन कर कर्मणा जाति का प्रतिपादन। कृष्णायन (विसाहूराम) पृ० 378.

शुक्र ऋषि द्वारा तपस्या

अलंकार

उदात्त—कुरुक्षेत्र की श्रेष्ठता का वर्णन। अंगराज, पृ० 185.

शुम्भ-निशुम्भ वध

अलंकार

उदात्त—श्रीतीर्थ की श्रेष्ठता का वर्णन। कृष्णायन, 3।184.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण—सहदेव और योगिनी के युद्ध के लिए शुंभ-निशुम्भ से दुर्गा के युद्ध का उदाहरण। कृष्णायन, (बिसाहूराम) पृ० 330.

सगर-आख्यान

(1) सगर का ऐश्वर्य

जीवन-दर्शन

पुरुषार्थ। मधुपर्क, पृ० 123.

सगर के साठ हजार पुत्रों की उत्पत्ति

अलंकार

अपह्नुति—तारों का निषेध कर सगर के पुत्रों की स्थापना। अंगराज, पृ० 147.

सगर का अपने पुत्र को निकालना

(1) अलंकार

अर्थान्तरन्यास—बिना त्याग के जन काज संभव न होने का समर्थन। कृष्णायन, 7।157-158.

(2) दृष्टान्त

प्रजाधर्म का अनुपालन। ब्रजचन्द्र विनोद, (उ०) पृ० 449.

(3) औचित्य

नीति। ब्रजचन्द्र विनोद (पू०) पृ० 449

(4) जीवन-दर्शन

1. त्याग। कृष्णायन, 7।157-158.
2. लोक-कल्याण। ब्रजचन्द्र विनोद, (उ०) पृ० 449.

सत्यवान सावित्री आख्यान

(1) अलंकार

1. उदात्त—(1) राधा के औदात्य का कथन। मधुपर्क, 1।29.

(2) भारत के चित्र की श्रेष्ठता का कथन। मधुपर्क, 2।29.

2. उदाहरण—प्रस्तुत-अक्रूर का कृष्ण के चरणों में नमित होना। ब्रजचन्द्र विनोद, (पू०) पृ० 417.

3. उपमा—द्रौपदी के लिए सावित्री और जयभारत, पृ० 157.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिर के लिए सत्यवान उपमान (वाचक लुप्तोपमा)

समुद्र-मंथन

(1) अलंकार

1. उत्प्रेक्षा—(1) श्रीकृष्ण के परिधानों से मुख निकालने में समुद्र-मंथन से निकले चन्द्र की संभावना।	कृष्णायन, 1।63.
(2) (बलराम के सौन्दर्य का चित्रण) बलराम को सौन्दर्य-समुद्र से मथकर निकालने की संभावना।	कृष्णायन, 1।179.
(3) (समुद्र को मंथराचल पर्वत से मथा जाना) कुवलयायीड़ गज में मंथराचल की संभावना।	कृष्णायन, 2।55.
(4) समुद्र मथकर देवताओं द्वारा अमृत निकालना, कृष्ण को देखकर मुनियों का आनन्द विभोर होना।	कृष्णायन, 4।111.
(5) कृष्ण द्वारा परीक्षित को जीवित करने पर नगर में छाये हर्ष के लिए संभावना।	कृष्णायन, 7।101.
(6) कृष्ण के मुख में चन्द्रमा श्रमकण में अमृत की संभावना।	सूरसागर, पद-1246.
(7) मुख में समुद्र की संभावना।	--वही—1351.
(8) आभूषणों की शोभा में समुद्र-मंथन द्वारा निकाली गई अमृत की शोभा की संभावना।	
(9) प्रियामुख में सुधाकर की घंघट में समुद्र की संभावना।	सूरसागर, पद-2736.
(10) कृष्ण मुख में चन्द्रमा और सेज में समुद्र की संभावना।	
2. उदात्त—(समुद्र से कमला और चन्द्र का निकलना) शरद की श्रेष्ठता वर्णित।	मधुपर्क 2।53.
3. उदाहरण—(1) (समुद्र-मंथन से अमृत प्राप्त करके देवताओं का आनन्दित होना। श्रीकृष्ण के आगमन पर परिवार सहित वरुण का आनन्दित होना।	ब्रजचन्द्र विनोद (पू०) पृ० 201.
(2) (क्षीर समुद्र से कमला का निकलना) कर्ण की पत्नी के द्वार तोरण से निकलने का उदाहरण।	सेनापति कर्ण, पृ० 141.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. उपमा — (1) दुर्योधन का वारि-दुर्ग से मंथराचल के समान जल को मथते हुए निकलना। — अंगराज, ।

(2) शची के सुरसरि से निकलने के लिए उपमान। — जयद्रथ-वध।

(3) समुद्र से उच्चैश्रवा अश्व का निकलना सर से दुर्योधन के निकलने का उपमान। — जयभारत, पृ० 191.

(4) मथित वसुधा के लिए उपमान। — द्रौपदी, पृ० 29.

(5) कूबरी के कूबर के लिए मंथराचल उपमान। — कूबरी, 4।3.

(6) चित्रांगद की राजकुमारी के सौन्दर्य के लिए उपमान। — अंगराज, पृ० 54.

5. मालोपमा — (समुद्र-मंथन से निकली लक्ष्मी की विष्णु को प्राप्ति। अर्जुन-द्रौपदी युगल के लिए अनेक उपमान। — पार्थपत्नी महासती द्रौपदी पृ० 109.

6. काव्यलिंग, उपमा, रूपक—(1) युद्ध में श्री का न मिलने का कारण श्री का माधव आधृत होना। — सुवर्णा, पृ० 117.

(2) समर कार्य के लिए सागर-मंथन उपमान।

(3) विजय पर अमृत का आरोप।

7. रूपक—(1) कर्ण के युद्ध पर समुद्र-मंथन का आरोप। — अंगराज, पृ० 240.

(2) (समुद्र-मंथन से रत्नों की प्राप्ति) महायुद्ध सिंधु और युद्ध मंथना से प्राप्त हुई गीता पर अमृत (सुधा) का आरोप। — अंगराज, पृ० 296.

(3) शास्त्र पर समुद्र का आरोप। — जयभारत, पृ० 78.

(4) आकाश में सिन्धु तथा उर्वशी पर रत्न का आरोप। — जयभारत. पृ० 152.

(5) शोभा पर वारिधि राधा पर मणि का आरोप। — प्रिय-प्रवास, 4।4.

(6) कृष्ण के अधरों पर समुद्र तथा शब्दों पर रत्नों का आरोप। — प्रिय-प्रवास, 8।30.

(7) संग्राम पर सिंधु, जय पर श्री (लक्ष्मी) का आरोप। — सुवर्णा, पृ० 115.

(8) भीष्म पितामह पर केन्द्र का, पाण्डव- — द्रौपदी, पृ० 19-20.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौरवों पर दो छोर का तथा संघर्षण आदि पर वासुकी आदि का आरोप।	
(9) श्रीमद्भागवत पर सुधा का आरोप।	प्रातः स्मरण, पद-18. (भा०ग्रं०)
8. रूपक, उदात्त—(1) सुधा पर स्वराज का आरोप।	कृष्णायन, 7।1.
(2) कृष्ण का औदात्य-वर्णन।	
9. श्लेष—हरि (विष्णु, वृक्ष) कमला (लक्ष्मी, शोभा) वृष (शंकर, बैल) धनवंतर (वैद्य, वृक्ष)।	फेरि-मिलिवो, पृ० 136.
10. उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति—समुद्र मंथन के समय निकले रत्नों के माध्यम से उपमा और रूपक अलंकारों के साथ कृष्ण की अक्षौहिणी सेना का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है।	जरासंध-वध, पृ० 55.
11. सन्देह, उपमा—(1) कर्ण की पत्नी के चन्द्रहार के लिए समुद्र-मंथन के अवसर पर वासुकी के शरीर से छूटी केंचुली उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 140.
(2) किम्वा से सन्देह व्यंजित।	

(2) दृष्टान्त

भगवान के भक्त को सब अधिकार प्राप्त।	सूरसागर, पृ० 34.

(3) प्रतीक

समुद्र-मंथन—साहसिक कार्य।	जरासंध, पृ० 32.

(4) वचन-वक्रता

1. शक्ति की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-760, 761, 762.
2. प्रेम की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-343.
3. विरहपरक।	—वही—3974.
4. उपालम्भमूलक।	—वही—3993.
5. उपालम्भमूलक भक्ति।	हृदय-तरंग, पृ० 15.

(5) उल्लेख

1. कृष्ण का अर्जुन को गीतोपदेश।	कृष्णायन, 5।190.
2. सत्यभामा का नारद से कथन।	गोपिका, पृ० 2।2.

(6) औचित्य

1, गुण।	कृष्णायन, 2।55.
2. अलंकार।	कूबरी, 4।3.
3. भक्ति रसौचित्य।	कृष्णायन, 4।111.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. वात्सल्य-रसौचित्य। — कृष्णायन, 1।63.
5. पराजय। — सुवर्णा, पृ० 117.
6. साम्राज्य-विरुद्धता। — गोपिका, पृ० 196.
7. वर्ण। — कृष्णायन, 2।55.

(7) जीवन-दर्शन

1. कर्म दर्शन, पुरुषार्थ। — जरासंध, पृ० 52.
2. युद्ध-दर्शन। — कृष्णायन, 7।1.

स्वर्ग से मन्दाकिनी का बहाना

प्रतीक

स्वर्ग-मन्दाकिनी-परिवेश को आनन्दमय बनाना। — प्रिय-प्रवास, पृ० 7।16.

सुधन्वा-आख्यान

(1) दृष्टान्त

होनी की प्रवलता की पुष्टि। — विश्राम-सागर, पृ० 212.

(2) जीवन-दर्शन

अच्छे कर्म का अच्छा परिणाम। — विश्राम-सागर, पृ० 292.

सुन्द-उपसुन्द वध (तिलोत्तमा-बलिसुत)

(1) अलंकार

अर्थान्तरन्यास—कुलटा से प्रेम करने से दुःख प्राप्ति का समर्थन (बलिसुत और तिलोत्तमा का प्रेम)। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 132.

(2) प्रतीक

सुन्द-उपसुन्द— आसुरी वृत्तियों के पोषक। दुष्ट कार्य। — कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 132.

(3) जीवन-दर्शन

(बलिसुत को शाप) काम त्याग, — विश्राम-सागर, पृ० 318.

सौभरि ऋषि का गरुड़ को शाप

काव्यलिंग-गरुड़ का कालीदह पर न आने का कारण सौभरि ऋषि का शाप। — विश्राम-सागर, पृ० 319.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पाति के पर जलना

अलंकार

अर्थान्तरयास--अभिमान के दुखदाई होने का समर्थन।	विश्राम-सागर, पृ० 331.

हनुमान-आख्यान

(1) हनुमान द्वारा लंका दहन/सीता की खोज

(1) अलंकार

1. उत्प्रेक्षा—अनिरुद्ध के युद्ध में हनुमान के लंका गढ़ के युद्ध की सम्भावना।	ऊषा-हरण, पृ० 27.
2. उदात्त—चित्र की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, पृ० 2।15
3. उदाहरण—श्रीकृष्ण को देखकर अक्रूर के आनन्द विभोर होने के लिए उदाहरण।	व्रजचन्द्र-विवोद (पू०) पृ० 417.
4. दृष्टान्तयुक्त काकुवक्रोक्ति (1) प्रेम निर्वाह करने के लिए श्री राम का दृष्टान्त।	पुरुषोत्तम, पृ० 4.
(2) राम ने सीता को दीक्षा न देकर उसको शीघ्र समीप लाने का प्रयास किया का भाव व्यंजित।	

प्रतीक

1. (हनुमान को रावण द्वारा बाँधा जाना) रावण—राजनीतिक अधर्मी	मधुपर्क, 13।139.
2. हनुमंती गर्जना—भयंकर, प्रबल गर्जना	जरासन्ध-वध, पृ० 12
3. लंकादहन—बुरी आकांक्षाओं का दमन	राधा, पृ० 87.

(3) औचित्य

1. गुण, 2. वीर-रस।	उषाहरण, पृ० 27.

(2) हनुमान का द्रोणाचल पर्वत को उठाना

अलंकार

उदाहरण—भीम द्वारा द्रोणाचार्य का रथ फेंकने के लिए उदाहरण।	जैयद्रथ-वध, पृ० 77.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) हनुमान का कालनेमि से युद्ध

अलंकार

सन्देह—कृष्ण और बलराम के कंस के पहलवानों चाणूर मुष्टिक से युद्ध करने में हनुमान का कालनेमि से युद्ध करने का सन्देह। — मधुपर्क, 10।19.

हनुमान का अर्जुन को ध्वजा पर रहना

अलंकार

सन्देह-नारद मुनि द्वारा आकाश में छाए बादलों का संदिग्ध वर्णन। — फेरि-मिलिबो पृ० 144.

हंसावतार

(1) अलंकार

1. अपह्नुति—अवतरण का निषेध कर अभ्युदय की स्थापना। — देवकी, पृ० 6.

2. उदात्त—कृष्ण के औदात्य का वर्णन। — विश्राम-सागर, पृ० 312.

3. काव्यलिंग—अवतार का हेतु भक्त-जनों का हित। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 98.

(2) औचित्य

विचार — देवकी, पृ० 6.

हयग्रीव-अवतार

(1) अलंकार

1. अपह्नुति—अवतरण का निषेध कर अभ्युदय की स्थापना। — देवकी, पृ० 6.

2. उदात्त—(1) कृष्ण के औदात्य कथन। — विश्राम-सागर, पृ० 312.

(2) भगवान के औदात्य का कथन। — गीत-गोविन्दानन्द, पद-12. (भा० ग्रं०)

3. काव्यलिंग—हयग्रीव अवतार का हेतु परमतत्त्व की गति कहना और आत्मज्ञान का सार बतलाना और मधुकैटभ का उद्धार करना। — भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 99.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) वचन-वक्रता

1. प्रेम की प्रामाणिकता।	सूरसागर, पद-3433.
2. उपालम्भमूलक।	रुक्मिणी-परिणय, पृ०86.

(3) जीवन-दर्शन

लोक कल्याण।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 98-99.

हरिश्चन्द्र-आख्यान

(1) अलंकार

1. अर्थान्तरन्यास—होनी की प्रवलता का समर्थन।	व्रजचन्द्र विनोद(पू०) पृ० 355.
2. उदात्त —कृष्ण के औदात्य का वर्णन।	मधुपर्क, 7।59.
3. उदात्त, उपमा—(1) भारतवर्ष की श्रेष्ठता का वर्णन। (2) महात्यागियों के लिए उपमान।	—वही—9।26.
4. उदात्त, उपमा—(1)कर्ण का औदात्य वर्णन। (2) कर्ण के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 35.

(2) दृष्टान्त

1. होनी की प्रबलता।	सूरसागर, पद-264.
2. दान के महत्व का प्रतिपादन।	जरासंध-वध, पृ० 91.
3. पुरुषों की निष्ठुरता की पुष्टि।	पुरुषोत्तम, पृ० 61.
4. कष्टों की क्षणिकता।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 75.
5. सत्य का प्रतिपादन।	— वही—116.
6. व्रताचरण का प्रतिपादन।	रश्मिरथी, पृ० 54.
7. प्रत्येक व्यक्ति पर विपत्ति पड़ने की पुष्टि।	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 350.

(3) प्रतीक

हरिश्चन्द्र-सत्यव्रती।	पुरुषोत्तम, पृ० 254.

(4) औचित्य

1. इतिहास	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ. 75.
2. व्रताचरण	रश्मिरथी, पृ० 54.
3. दानवीर	जरासंध, पृ० 91-92.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(5) जीवन-दर्शन

1. होनी—भाग्यवाद।	जरासंध, पृ० 91-93.
2. याचक से दानी की महानता।	—वही पृ० 91.
3. त्याग।	मधुपर्क, 9।26.
4. दान।	सेनापति कर्ण, पृ० 35.
5. वचन पालन।	1. रश्मिरथी, पृ० 54. 2. पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 100.
6. राष्ट्रीयता।	मधुपर्क 1।25-26.

हिमाचल-मैना आख्यान

अलंकार

यशोदा और नन्द में मैना और हिमाचल का संभावना।	ब्रजचन्द्र-विनोद (पृ०) 55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

पात्र अलंकार/टिप्पणी	पुस्तक/संदर्भ
अंगिरा/उदात्त—कमण्डल की श्रेष्ठता।	मधुपर्क 13।121.
उपमा—महानेता के लिए उपमान।	मधुपर्क, 9।25.
अंतक/उपमा—भीम के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 55.
कर्ण के लिए उपमान।	रश्मिरथी, पृ० 156.
अग्नि/उदात्त—कृष्ण की उदात्तता का कथन।	कृष्णायन, 5।204.
वही।	ब्रजचन्द्र विनोद (उ०) पृ० 254
सन्देह—(अग्नि-वरुण युद्ध) कर्ण अर्जुन के युद्ध में अग्नि वरुण के युद्ध का सन्देह।	सुवर्णा, पृ० 125.
अगस्त्य/उदात्त—भारत की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 10।119.
वही।	मधुपर्क, 13।121.
उपमा—महानेता के लिए उपमान।	मधुपर्क 9।25.
अघासुर/उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	कूबरी, 1।23.
अर्जुन/उपमा—श्रुति-मार्ग प्रकाशक के लिए उपमान	मधुपर्क, 17।65.
अनुसूया/उपमा—ब्राह्मणी का उपमान।	सुवर्णा, पृ० 55.
दृष्टान्त—नारी शिक्षा का समर्थन।	भ्रमर-दूत (हृदय-तरंग, पृ० 53)
अश्विनीकुमार/अतिशयोक्ति—गोपियों के विरह का अतिशयोक्ति-पूर्ण वर्णन।	नटनागर विनोद, पृ० 93.
उपमा—नकुल सहदेव के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 32.
अत्रि/विप्रलम्भ, औचित्य।	नटनागर विनोद, पृ० 92-93.
विचार औचित्य।	कृष्णायन, 195.
इन्द्र	
(1) **अमरेश**/उपमा—उग्रसेन के लिए उपमान।	कृष्णायन, 1।9.
(2) **इन्द्र**/व्यतिरेक—अर्जुन की वीरता के आगे इन्द्र की वीरता को हीन बताना।	सुवर्णा, पृ० 87.
(3) **पाकशासन**/उपमा—कृष्ण के लिए उपमान।	उद्धव-शतक, पद-45.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) **पुरन्दर**/उत्प्रेक्षा—द्रौपदी के महल में पुरन्दर के रहने की संभावना।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ० 314.
उपमा—शान्तनु के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 23.
(5) **वासव**/उपमा—कौरव पाण्डवों की मित्रता के लिए उपमान।	सुवर्णा, 40.[1]
उपमा, सन्देह—भीम के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 60.
(6) **शक्र**/उदात्त—कृष्ण का औदात्य।	मधुपर्क, 10।109.
उपमा—दुर्योधन के लिए उपमान।	जयद्रथ-वध, पृ० 73.
(7) **शतक्रतु**/उपमा—परशुराम के लिए उपमान।	अंगराज, 185.
(8) **सहस्राक्ष**/हीनोदात्त, पद-अनौचित्य—सहस्राक्ष होना इन्द्र के व्यभिचार का द्योतक।	अंगराज, पृ० 295.
(सहस्राक्षी) पद-औचित्य।	प्रकीर्ण पद्यावली (रत्नाकर) पद-40.
परिकर—सहस्राक्ष का डरना उसके नाम के गुण अनुसार।	विश्राम-सागर, पृ० 327.
(9) **सुरपति**/उदाहरण—कंस के लिए उपमान।	प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 65[2].
(10) **सुरेन्द्र**/उपमा—कर्ण के लिए उपमान।	अंगराज, पृ० 240.
(11) **सुरेश**/उपमा—कंस के सभा-सरदारों के उपमान।	कूबरी, सर्ग-1, छन्द-27.[3]
कंस के लिए उपमान।	
उर्मिला/उदात्त—राधा की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 1।29.
उर्वशी/उदात्त—राधा की श्रेष्ठ वाणी के आगे उर्वशी के हावभाव भी अवरुद्ध होना।	मधुपर्क, 2।79.
व्यतिरेक—राधा के रूप का वर्णन उर्वशी के रूप से बढ़ाकर करना।	प्रेमाश्रु-वर्षण (भारतेन्दु-ग्रंथावली, पृ० 120)
व्यतिरेक, यमक—राधा का रूप वर्णन उर्वशी से बढ़ाकर प्रस्तुत करना। उर्वशी के दो अर्थ— 1. उर्वशी-हृदय में बसी हुई। 2. उरवसी-एक अपसरा।	प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 210.
कपिल/उदात्त—भारत की श्रेष्ठता का वर्णन। अलंकार-औचित्य।	मधुपुरी, 1।8.

1. रहें कौरव और पाण्डव मित्र बन, ज्यों वरुण-वासव।
2. विष्णु सहायक ह्वै सुरपति ज्यों भयो कृतारथ
तुम सहाय ह्वै तथा इष्ट लहि सकौ यथारथ।
3. दैन्य दुख दारिद निकारि पुर वाहर तें,
सब कौ सुरेस सौ बसायौ निज हाथ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला/उदात्त—राधा का औदात्य वर्णन।	मधुपर्क, 1।25.
राधा की वाणी की श्रेष्ठता का कथन।	मधुपर्क, 2।63.
उत्प्रेक्षा—राधा के लिए उपमान की संभावना।	फेरि मिलिबो, पृ० 20.
वही।	मधुपर्क, 1।56.
उपमा—कलिंग पुत्री के लिए उपमान।	अंगराज, पृ० 56.
कर्ण (**रविसुत**)/उदात्त—कर्ण का औदात्य व्यंजित।	अंगराज, पृ० 261.
कामदेव	
(1) **अनंग**/व्यतिरेक—कृष्ण के रूप से अनंग के रूप को हीन बताया जाना।	ब्रज-विहार, पृ० 92.
कृष्ण की उदात्तता का कथन।	प्रेमधन सर्वस्व, पृ० 199.
रूपक—कर्ण के लिए उपमान।	सुवर्णा, पृ० 24.
श्लेष—आकाश तथा कामदेव के लिए प्रयुक्त।	अंगराज, पृ० 145.
वचन-वक्रता/प्रेममूलक उपहास, वाक्य औचित्य।	उद्धव-शतक(रत्नाकर) पद-54.
(2) **कन्दर्प**/अतिशयोक्ति—राधा के सिन्दूर का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन।	प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 132.
व्यतिरेक—राधा के सिन्दूर को देखकर कन्दर्प का लज्जित होना।	
उत्प्रेक्षा निश्चयान्त सन्देह—अर्जुन के रूप में कन्दर्प के रूप की संभावना व्यंजित।	कृष्णायन, 3।124.
उपमा—कृष्ण के लिए उपमान।	महारास, पृ० 76.
बलराम के लिए उपमान।	मधुपर्क, 12।40.
व्यतिरेक—कृष्ण के सौन्दर्य को देखकर कन्दर्प का लज्जित होना।	महारास, पृ० 61.
(3, **काम**/उत्प्रेक्षा—कृष्ण में काम के उपमान की संभावना।	कृष्णायन, 3।26.
उपमा—कृष्ण के लिए उपमान।	वही, 2।181.
(4) **मदन**/उत्प्रेक्षा—कृष्ण में मदन की संभावना।	ब्रज-विहार, पृ० 93.
उत्प्रेक्षा (प्रतीयमान)—(रति सहित मदन)।	मधुपर्क, 1।16.
कपोत-कपोतियों में मदन रति की संभावना।	
उपमा—कृष्ण के लिए उपमान।	कृष्णायन, 2।28.
व्यतिरेक—कृष्ण के रूप के आगे मदन के	ललन-सागर, पद-4.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप को हीन बताना।	
वही।	मधु मुकुल (भारतेन्दु ग्रं०) पृ० 393.
वही।	कृष्णायन, 1।143.
पद-औचित्य।	नटनागर विनोद, पृ० 52.
मन्मथ/उपमा यथाक्रम—कृष्ण के लिए उपमान मन्मथ का श्याम से सम्बन्ध।	कृष्णायन, 2।105.
व्यतिरेक—राधा कृष्ण के रूप को देखकर रति मन्मथ का लज्जित होना।	कृष्णायन, 1।156.
राधा कृष्ण के रूप को देखकर रति मन्मथ का उन पर मोहित होना।	मधुपर्क 7।10.
पुष्पशर/पद—औचित्य।	सेनापति कर्ण, पृ० 31.
कार्तिकेय	
(1) **कार्तिकेय**/उत्प्रेक्षा—कृष्ण के लिए कार्तिकेय के उपमान की संभावना।	कृष्णायन, 3।26.
यदुकुल के बालकों में कार्तिकेय की संभावना।	वही 7।108.
उपमा—कृष्ण के लिए उपमान।	द्वापर, पृ० 93.
भीष्म के लिए उपमान।	कृष्णायन, 5।69.
(2) **स्कन्द**/उपमा—श्रीकृष्ण के लिए उपमान।	मधुपर्क, 9।105.
अर्जुन के लिए उपमान।	मधुपर्क, 13।5.
कृतान्त/उत्प्रेक्षा—अर्जुन में कृतान्त की संभावना।	कृष्णायन, 6।223.
उपमा—परिजनों के लिए उपमान।	रश्मिरथी, पृ० 75.
भीम के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 51.
वही।	वही, पृ० 147.
वही।	वही, पृ० 155.
कंस के लिए उपमान।	मधुपुरी, 3।5).
कृष्ण	
(1) **गिरधारी**/परिकर—साभिप्राय विशेषण गिरधारी का प्रयोग।	द्वापर, पृ० 71.
(2) **रनछोर**/हीनोदात्त—कृष्ण की बल हीनता का द्योतन।	कृष्णायन, 2।1.
(3) **केशीकाल (कृष्ण)**/उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन।	वीर-सतसई, पृ० 1.
(4) **घनश्याम**/पद—औचित्य।	1. निवेदन-पंचक, पद-1. (भा.-ग्रं) 2. उद्धव-शतक (रसाल) पद-54.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशी/उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	कूबरी, 1।28.
कुबेर/उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	वही, 1।35.
खगराज (गरुड़)/उदाहरण—घटोत्कच के पौरुष के लिए खगराज के पौरुष का उदाहरण।	सुवर्णा, पृ० 159.
खगेन्द्र/सन्देह—घटोत्कच के पौरुष में खगेन्द्र के पौरुष का सन्देह।	सेनापति कर्ण, पृ० 170.
गरुड़/उपमा—कर्ण के लिए उपमान।	सुवर्णा, पृ० 14.
गार्गी/दृष्टान्त—स्त्री शिक्षा का समर्थन।	भ्रमर-दूत (हृदय-तरंग' पृ० 53.)
गौतम/विचार—औचित्य।	कृष्णायन, 6।195.
चामुण्डा/उत्प्रेक्षा—मथुरा की प्रजा में चामुण्डा की संभावना।	कृष्णायन, 2।71.
चाणूर/उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	कूबरी, 1।31.
चित्रगुप्त/अतिशयोक्ति—(चित्रगुप्त का थककर गिरना।	प्रेम-मालिका, पद-87.
पापों का बढ़ा चढ़ाकर वर्णन।	(भारतेन्दु-ग्रं०, पृ० 70)
जयन्त/उदाहरण—अनिरुद्ध की ओर यादवों के देखने के लिए देवताओं द्वारा जयन्त को देखे जाने का उदाहरण।	फेरि-मिलिवो, पृ० 108.
जैमिनी/उदात्त—भारत की श्रेष्ठता का वर्णन। अलंकार—औचित्य।	मधुपुरी, 1।8.
तारकारि/उपमा—कर्ण के लिए तारकारि उपमान।	सेनापति कर्ण, 149.
सन्देह—कर्ण के पौरुष में तारकारि के पौरुष का सन्देह।	सेनापति कर्ण, 46.
घटोत्कच का पौरुष में तारकारि के पौरुष की संभावना।	सेनापति कर्ण, पृ० 170.
तिलोत्तमा/उदात्त—राधा की वाणी की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क 2।79.
व्यतिरेक—तिलोत्तमा के सौन्दर्य को राधा के सौन्दर्य से हीन बताना।	मधुपर्क 7।23.
तोषल/उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	कूबरी, 1।31.
दुर्गा, बाराही/उदात्त—द्रौपदी का औदात्य कथन।	पार्थपत्नी महासती द्रौपदी, पृ. 311.
दुर्योधन/उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान।	कृष्णायन, 7।145.
देवकी/उपमा—कुन्ती के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 334.
देवदूत/सन्देह—भीम में 'देवदूत' का सन्देह।	सेनापति कर्ण, पृ० 92.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोण/अनन्वय—द्रोण के सदृश किसी के न होने का कथन।	कृष्णायन.
धन्वतरि/अतिशयोक्ति—गोपियी के विरह का अतिरंजित वर्णन।	नटनागर विनोद, पृ० 92.
नकुल-सहदेव/उदात्त--अनुशासकों के लिए उपमान।	मधुपर्क, 17।65.
परशुराम/उत्प्रेक्षा—एकलव्य के लिए उपमान की संभावना।	जयभारत, पृ० 46.
उपमा—द्रोणाचार्य के लिए उपमान।	वही पृ० 415.
सन्देह—कृष्ण में द्विजराम का सन्देह।	फेरि-मिलिबो, पृ० 162.
प्रद्युम्न/उपमा—दिव्य विधायक से लिए उपमान।	मधुपर्क, 17।65.
प्रलम्ब/उदात्त—कंस की समृद्धि के लिए प्रयुक्त।	कूबरी, 1।28.
प्रहलाद/उदात्त—श्रीकृष्ण की महत्ता के चित्रण के लिए प्रयुक्त।	मधुपर्क, 7।63.
पूतना/उदात्त—कंस की समृद्धि के लिए प्रयुक्त।	कूबरी, 1।28.
ब्रह्मा (विधि)/उपमा—कृपाचार्य के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 404
काव्यलिंग—ब्रह्मा से विशेष ब्रह्म का मानने का हेतु दिन फेरना।	उद्धव शतक (रसाल) पद 208
व्यतिरेक—अर्जुन के पुरुषार्थ का वर्णन।	सुवर्णा, 87
काव्य-औचित्य	उद्धव-शतक (रसाल) पद 208.
भरत/उदात्त—भारत की समृद्धि का वर्णन।	मधुपर्क, 10।119
कमण्डल (त्याग) की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 13।119.
भरद्वाज/उदात्त—भारत की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 9।25
भवानी/उदात्त—राधा का औदात्य वर्णन।	मधुपर्क, 1।25
रास का औदात्य कथन।	मधुपर्क, 4।99.
सन्देह—गंगा का सौन्दर्य चित्रण।	अंगराज, पृ० 159.
भीम/उपमा—श्रुति-मार्ग प्रकाशक के लिए उपमान।	मधुपर्क, 17।65.
भीष्म (गंगानन्दन)/उदात्त—भीष्म का औदात्य कथन।	सुवर्णा, पृ० 23.
भृगु/उदात्त—कमण्डल (त्याग) की श्रेष्ठता का का वर्णन।	मधुपर्क, 13।121.
भैरव/उपमा—कर्ण के लिए उपमान।	अंगराज, पृ० 229.
मदालसा/दृष्टान्त—नारी शिक्षा का समर्थन।	भ्रमर-दूत(हृदय-तरंग, पृ० 53)
मधुरिपु (कृष्ण)/उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन।	वीर सतसई, पृ० i.
मधुरिपु, मधुतुंद, मध्वरि, मधुसूदन/काव्यलिंग	उद्धव-शतक (रसाल) पद-58.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषण-—औचित्य, पर्याय-औचित्य/मधु रिपु को भूठाये देने में मधु का आतंक।	
मधुसूदन/उदात्त—कृष्ण का औदात्य कथन।	ललन-सागर, पद 974.
वही।	भारतेन्दु ग्रंथावली, पृ० 278.
मनु/उदात्त—भारत की समृद्धि का वर्णन।	मधुपर्क, 10।119.
मुष्टिक/उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन।	कूबरी, 1।31.
मेघनाद/सन्देह—घटोत्कच का युद्ध वर्णन।	जयभारत, पृ० 381.
मेनका/उदात्त—राधा की वाणी की श्रेष्ठता का कथन।	मधुपर्क, 2।79.
व्यतिरेक—राधा का रूप मेनका से उत्कर्ष बताना।	प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 209.
मैत्रेयी/दृष्टान्त-- स्त्री शिक्षा का समर्थन।	भ्रमर-दूत (हृदय-तरंग पृ० 53)
यमदूत/उपमा—हिडिम्बा के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 69.
यमभ्रत्य/उत्प्रेक्षा—व्याधों के लिए उपमान।	कृष्णायन, 6।241.
यमराज/ऊत्प्रेक्षा—कृष्ण के रौद्ररूप में यमराज की संभावना।	कृष्णायन, 2।59.
उदात्त—श्रीकृष्ण की महत्ता का कथन।	कृष्णायन 5।204.
कृष्ण के रौद्र रूप का वर्णन।	मधुपर्क, 12।32.
प्रतीक—यमराज-मृत्यु।	जयभारत, पृ० 53.
युधिष्ठिर/उपमा—अनुशासक के लिए उपमान।	मधुपर्क, 17।65.
रति/उत्प्रेक्षा—वातावरण की सरसता व्यंजित करने के लिए प्रयुक्त।	मधुपुरी, पृ० 256.
द्रौपदी में रति की संभावना।	सेनापति कर्ण, पृ० 58.
उत्प्रेक्षा—कपोलियों में रति की संभावना। (प्रतीयमान)	मधुपर्क, 1।16.
मालोदात्त—राधा की वाणी की श्रेष्ठता का अनेक प्रकार से वर्णन।	मधुपर्क, 2।79.
उदाहरण—कर्ण की गोद में पड़ी उसकी पत्नी के लिए मनसिज के अंक में पड़ी रति का उदाहरण।	सेनापति कर्ण, पृ० 146.
भानुमती द्वारा मूर्छित वासन्ती (कर्ण-पत्नी) को उठाने के लिए शची द्वारा रती को उठाने का उदाहरण।	सेनापति कर्ण, पृ० 60.
उपमा—रात्रि के लिए उपमान।	अंगराज, पृ० 145.
मित्रवृन्दा के लिए उपमान।	कृष्णायन, 2।105,
मालोपमा—राधा के लिए अनेक उपमान।	मधुपर्क 4।2.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरा की नारियों के लिए उपमान।	मधुपुरी, 1।13.
व्यतिरेक--राधा के सौन्दर्य के समक्ष रति के सौन्दर्य को हीन बताना।	कृष्णायन, 1।156.
राधा के सौन्दर्य को देखकर रति मदन का लुभाना।	मधुपर्क, 7।10.
रम्भा/उदात्त—राधा की वाणी की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 2।79.
राम/अपह्नुति—चन्द्रमा में कलंक रेखा का निषेध कर सीता के हृदय में रमे राम आरोप।	अंगराज, पृ० 146.
उदात्त—शरद चन्द्रिका की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क 7।76.
भारत की समृद्धि का वर्णन।	मधुपर्क, 9।26.
भारत की समृद्धि का वर्णन।	मधुपुरी, 1।9.
उपमा—देवकी के गर्भस्थ-शिशु के लिए उपमान।	कृष्णायन, 1।35.
अभिमन्यु के लिए उपमान।	जयद्रथ-वध, पृ० 11.
भारत के राजाओं के लिए उपमान।	मधुपर्क, 12।72.
कृष्ण के लिए उपमान।	मधुपर्क, 13।20.
दुर्योधन के लिए उपमान।	मधुपर्क, 13।90.
यमक, उपमा—राम के अलग-अलग अर्थ (1-राम-बलराम, 2-राम-रामचन्द्र) बलराम के लिए उपमान।	मधुपुरी, 10।27.
रावण/रूपक—पिक के लिए उपमान।	नटनागर-विनोद, पृ० 142.
राहु/उदात्त—मुरली की श्रेष्ठता का कथन।	महारास, पृ० 23.
उपमा—कंस के मंत्रियों के लिए उपमान।	मधुपर्क, 6।28.
व्यतिरेक—केशों से राहु की कालिमा को हीन बताना।	प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 211.
लक्ष्मी	
(1) **कमला**/उत्प्रेक्षा—राधा के लिए उपमान।	फेरि मिलिबो, पृ० 20.
राधा के लिए उपमान।	मधुपर्क, 1।56.
उदात्त—राधा का औदात्य-वर्णन।	मधुपर्क, 1।25.
राधा की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 2।63.
उपमा—कलिंग की पुत्री के लिए उपमान।	अंगराज, पृ० 56.
(2) **चंचला**/उपमा—उर्वशी के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 152.
(3) **श्री**/मालोपमा—मथुरा की नारियों के लिए उपमान।	मधुपुरी, 3।13.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) **रमा**/अतिशयोक्ति—राधा के सौन्दर्य का अतिरंजित वर्णन।	संसृष्टि–मधुपर्क, 1।43.
काव्यलिंग—रमा की ईर्ष्या का हेतु राधा की छवि।	
उदात्त—कल्पलता नामक राधा की सखी की उदात्तता का वर्णन।	मधुपर्क, 4।67.
उपमा—मथुरा की नारियों के लिए उपमान।	मधुपुरी, 20।21.
रूपक—गोपी पर रमा का आरोप।	महारास, पृ० 37.
व्यतिरेक—राधा के रूप सौन्दर्य के आगे रमा के सौन्दर्य को हीन वताना।	(प्रेमाश्रु-वर्णन) भारतेन्दु-ग्रंथावली, पृ० 120
(5) **राधा**/प्रतीक। प्रेयसी	जयभारत, पृ० 213.
(6) **रुद्राणी**/प्रतीक। रुद्राणी	भयंकर गोपिका, पृ० 28.
वरुण/उपमा—कौरवों के लिए उपमान।	सुवर्णा, पृ० 40.
सन्देह—कर्ण और अर्जुन के लिए उपमान के प्रयोग से सन्देह।	सुवर्णा, पृ० 125.
विश्वकर्मा (विसुकरमा)/उत्प्रेक्षा—गोपियों को विश्वकर्मा द्वारा निर्मित किये जाने की संभावना।	भारतेन्दु-ग्रंथावली, पृ० 409.

विष्णु

(1) **उपेन्द्र**/उपमा—वृषभानु के लिए उपमान।	प्रियप्रवास, 4।1.
उल्लेख—श्रीकृष्ण बलराम का अनेक प्रकार से उल्लेख।	कृष्णायन, 2।27.
(2) **विष्णु**/उपमा—कृतवर्मा के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 404.
(3) **शेषशायी**/उदाहरण—भीष्म के शरशैया पर सोने के लिए उदाहरण।	सुवर्णा, 40.
(4) **श्रीपद (विष्णु)**/प्रतीक/लोकसंग्रही, जनसेवक।	गोपिका, पृ० 88.
(5) **हरि**/उदात्त—राधा के औदात्य का कथन।	मधुपर्क, 2।30
वसिष्ठ/विचार-औचित्य	रश्मिरथी, पृ० 77.
वायु/उदात्त—कृष्ण की महत्ता का कथन।	कृष्णायन, 5।204.
व्यास/उदात्त—भारतवर्ष की श्रेष्ठता का वर्णन। अलंकार-औचित्य	मधुपुरी, 1।8.
विश्वामित्र/उदात्त—भारतवर्ष की श्रेष्ठता का वर्णन।	मधुपर्क, 9।25.
वृहस्पति (सुरगुरु, देवगुरु)/उदाहरण—युधिष्ठिर	जयद्रथ वध, पृ० 61.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के स्वजनों में विराजमान होने के लिए उदाहरण।

उपमा—उद्धव के लिए उपमान। — कृष्णायन, 2।169.

कृष्ण के लिए उपमान। — मधुपर्क, 3।8.

भीष्म के लिए उपमान। — मधुपर्क, 13।54.

रूपक—सुदामा पर वृहस्पति का आरोप। — मधुपर्क, 18।5.

शची/उत्प्रेक्षा—ऊषा में शची की संभावना। — ऊषा हरण, पृ० 27.

उदाहरण—भानुमती (दुर्योधन की पत्नी) के लिए उदाहरण। — सेनापति कर्ण, पृ० 160.

उपमा—उर्वशी के लिए उपमान। — जयभारत, पृ० 177.

मालोपमा—मथुरा की नारियों के लिए अनेक उपमान। — मधुपुरी, 1।13.

शल/उदात्त—कंस की समृद्धि का वर्णन। — कूबरी, 1।31.

शाम्ब/उपमा—दिव्य विधायक के लिए उपमान। — मधुपर्क, 17।65.

शाल्व/उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान। — कृष्णायन, 7/145.

शिव

(1) **अहिभूषण**/उत्प्रेक्षा, सन्देह—कर्ण के महायुद्ध के लिए उपमान। — अंगराज, पृ० 253.

(2) **कामारि**/उदात्त—शिव के औदात्य का कथन। — ब्रजचन्द्र विनोद, (उत्तरार्द्ध) पृ० 21.

(3) **गंगाधर**/उदात्त—वही। — अंगराज, पृ० 13.

(4) **नीलकण्ठ**/उदात्त—वही। — ब्रजचन्द्र विनोद, (उत्तरार्द्ध) पृ० 21.

(5) **पुरारि**/उपमा—कृष्ण के लिए उपमान। — मधुपर्क, 9।107.

(6) **मन्मथजयी**/उदात्त—भीष्म का औदात्य कथन। — सेनापति कर्ण, पृ० 21.

(7) **महेश**/उत्प्रेक्षा—कृष्ण के रूप का वर्णन (कृष्ण के मष्तिष्क पर तिलक तथा रोली में महेश की संभावना)। — ललन-सागर, पद-90.

(8) **रुद्र**/उदात्त—कृष्ण के रौद्र रूप का वर्णन। — मधुपर्क, 12।32.

व्यतिरेक—अर्जुन का पौरुष कथन। — सुवर्णा, पृ० 87.

(9) **शम्भु**/उपमा—भीम के लिए उपमान। — सेनापति कर्ण, पृ० 60.

(10) **शिव**/रूपक—द्रोणाचार्य के लिए उपमान। — सुवर्णा, पृ० 51.

(11) **त्रिपुरारि**/उदात्त—शिव का औदात्य वर्णन। — ब्रजचन्द्र विनोद (उत्तरार्द्ध) पृ० 2.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपमा—अश्वत्थामा के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 36.
शिशुपाल/उपमा—यदुवंशियों के लिए उपमान।	कृष्णायन, 7।145.
शिव के गण/उपमा—शिखण्डी के बाणों का उपमान।	सुवर्णा, पृ० 39.
शुकदेव/उदात्त—भारत की समृद्धि का वर्णन। अलंकार औचित्य।	मधुपुरी, 1।8.
संकर्षण/उपमा—सेना-नायक के लिए उपमान।	मधुपर्क, 17।65.
सनत्कुमार/उपमा-सन्देह—कर्ण के लिए उपमान अथवा से सन्देह व्यंजित।	सेनापति कर्ण, पृ– 181.
सती/मालोपमा—मथुरा की नारियों के लिए अनेक उपमान।	मधुपुरी, 2।13, 20।21.
सरस्वती	
(1) **सरस्वती**/उदात्त—राधा की सखी कल्पलता का औदात्य कथन।	मधुपर्क, 4।67.
उपमा—मथुरा की नारियों के लिए उपमान।	मधुपुरी, 3।13.
मुनि कन्याओं के लिए उपमान।	मधुपर्क, 14।68.
लुप्तोपमा—राधा के लिए उपमान।	मधुपर्क, 1।30.
प्रतीक—बुद्धि।	मधुपर्क, 6।23.
(2) **गिरा**/उदात्त—राधा की वाणी का औदात्य कथन।	मधुपर्क, 2।63.
मालोपमा—राधा के लिए अनेक उपमान।	मधुपर्क, 4।2.
(3) **भारती**/उत्प्रेक्षा—राधा में भारती की संभावना।	मधुपर्क, 2।83.
सीता/उत्प्रेक्षा—राधा में सीता की संभावना।	मधुपर्क, 2।43.
उदात्त—रास का औदात्य कथन।	वही, 4।99.
दृष्टान्त—नारी शिक्षा का समर्थन।	भ्रमर-दूत (हृदय-तरंग, पृ० 53.)
सुमित्र/उपमा—अभिमन्यु के सूत के लिए उपमान।	जयद्रथ-वध, पृ० 11.
कामिनी (अप्सरा)/उत्प्रेक्षा—शरद रात्रि में सुर कामिनी की संभावना।	कृष्णायन.
हनुमान/उदात्त—मुरली की श्रेष्ठता का कथन।	महारास, पृ० 23.
उपमा—भीम के लिए उपमान।	जयभारत, पृ० 384.
सन्देह—भीम के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, पृ० 60.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) पौराणिक रूढ़ियों/पौराणिक विश्वासों का आलंकारिक प्रयोग

हिन्दी-साहित्य में अनेक पौराणिक विश्वास और मान्यताओं का भी आलंकारिक रूप में प्रयोग हुआ है। इनमें से कुछ ने नीर क्षीर विवेक की तरह कथानक रूढ़ियों का रूप धारण कर लिया है। जिस प्रकार 'कल्पवृक्ष' तथा 'कामधेनु' आदि पौराणिक विश्वासों में किसी की भी इच्छा पूरो करने की क्षमता है एवं उसी प्रकार 'सुरसरि' में किसी के कल्याण करने की शक्ति निहित है। ये प्राय: इन्हीं सन्दर्भों के लिए रूढ़ हो चुके हैं। हिन्दी-साहित्य में इनका और अन्य विश्वासों का प्रयोग बहुलता से हुआ है। सबका उल्लेख करना संभव नहीं, इसलिए कुछ सन्दर्भ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं :

अमरावती/उपमा—मधुपुरी के लिए अमरपुरी उपमान। — ब्रजचन्द्र विनोद (पूर्वार्द्ध) पृ० 348.

मधुपुरी के लिए उपमान। — मधुपुरी, 3।2.

व्यतिरेक—वसुधा कर राधा का सौन्दर्य देख अमरावती का लज्जित होना। — मधुपर्क, 1।45.

सन्देह—नन्दग्राम की अट्टालिकाओं का वर्णन। किधों से सन्देह व्यंजित। — अलौकिक लीला-द्वितीय सर्ग (प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 79)

अलका/उपमा—वही। — अलौकिक लीला, द्वितीय सर्ग (प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 79.)

ऐरावत/उपमा—भगदत्त के हाथी के लिए उपमान। — कृष्णायन, 6।118.

कुरुक्षेत्र के मैदान में पड़े भीमकाय हाथियों के लिए उपमान। — सेनापति कर्ण, पृ० 111.

ब्रज के बैलों के लिए उपमान। — मधुपर्क, 14।67.

व्योमासुर के लिए उपमान। — ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 319.

कुवलयापीड के लिए उपमान। — (पूर्वार्द्ध)

शाल्व के मत गज के लिए उपमान। — ब्रजचन्द्र विनोद, पृ० 405. (उत्तरार्द्ध)

व्यतिरेक—नहुष की मत्तता को ऐरावत की मत्तता से अधिक उत्कृष्ट बताना। — जयभारत, पृ० 5.

गजेन्द्र/उपमा—कुवलयापीड के लिए उपमान। — प्रियप्रवास, 3।61.

कल्पवृक्ष/उपमा—ब्रज के करील वृक्षों के लिए उपमान। — प्रियप्रवास, 15।95.

कर्ण के लिए उपमान। — रश्मिरथी, पृ० 55[1]

रूपक—कर्ण के पदों पर कल्पतरु का आरोप। — सेनापति कर्ण, पृ० 149.

---

1. युग-युग जियें कर्ण, दलितों के वे दुख-दैन्य-हरण हैं,
कल्पवृक्ष धरती के, अशरण की अप्रतिभ शरण हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीक—अभिलाषा।	भगवान श्रीकृष्ण लीलामृत, पृ० 9
कल्पलता/अनन्वय—राधा को कल्पलता के समान बताया जाना।	मधुपर्क, 2।24.[1]
उपमा—राधा के लिए उपमान।	मधुपर्क, 1।66.
कामधेनु/उपमा—ब्रज की गायों के लिए उपमान।	प्रियप्रवास, 15।95.[2]
गृह समृद्धि के लिए उपमान।	महारास, पृ० 2.[3]
गंधर्वनगर/उत्प्रेक्षा—अंगनगर में गंधर्वनगर की संभावना।	अंगराज, पृ० 33.
त्रिवेणी/अपह्नुति—चन्द्रमा और उसकी कलंक लेखा का निषेध कर गंगा में यमुना के मग्न होने की संभावनना।	अंगराज, पृ० 146.
उदाहरण—पाण्डवों के सैन्य शिविर में अश्वत्थामा आदि द्वारा कटे पड़े व्यक्तियों के लिए त्रिवेणी की धारा में भव-कष्ट कटने का उदाहरण।	वही, पृ० 287.
उपमा—वेणी के लिए जुमना, मोतियों के लिए गंगा और महावर के लिए सरस्वती का उपमान।	सतसई सिंगार, पद 38. (भारतेन्दु ग्रं०, पृ० 342.
योग-तपस्या यमुना (तरिनी तनया), ज्ञान गरुवाई-गिरा सरस्वती भक्ति का भगीरथी उपमान।	उद्धव-शतक (रसाल)
उपमा, रूपक—जोगविधि के लिए भानुमा ग्यान गिरा के लिए सरस्वती उपमान। हिय पर हिम-शैल तथा भक्ति पर भगीरथी का आरोप।	उद्धव-शतक (रसाल)[4]
उत्प्रेक्षा, उपमा—पांचाल और पाण्डवों की कुल शाखाओं पर यमुना, गंगा की सभावना।	कृष्णायन, 3।145.

---

1. कल्पलता यह कल्पलता सम नौ सखियन संग आई।
2. गवादि हैं काम-दुघा गरीयसी।
3. जब कामधेनु है गृह समृद्धि।
4. जोग-विधि भानुजा, सरस्वती ह्वै ग्यान गिरा,
   हिय-हिम-शैल तैं हमारे उमगानी हैं।
   तेई याग-पुण्य को पाइ गोपिन कों
   भक्ति की भगीरथि गैं उमंगि बितानी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण का सरस्वती उपमान।	
सन्देह—श्रीकृष्ण और कर्ण के मिलन के लिए यमुना और गंगा के मिलन का उपमान 'कि' से सन्देह व्यंजित।	अंगराज, पृ० 135.
दिग्गज/अपह्नुति—नैवेद्य का निषेध कर शकुनि में गजलक्ष्मी के दिग्गज की स्थापना।	द्रौपदी, पृ० 21.[1]
दिगपाल/उदाहरण—(दिग्पालों का महाकाल से जूझना) कर्ण-अर्जुन के युद्ध के लिए उदाहरण।	सुवर्णा, पृ० 125[2]
नरक/उत्प्रेक्षा—बन्दीभवन में नरक की संभावना।	कृष्णायन, 1।32.
वाक्य-औचित्य	उद्धव-शतक, (रसाल) पद-62.
नन्दन-वन/उपमा—वृन्दावन के लिए उपमान।	अलौकिकलीला, द्वितीयसर्ग[3] (प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 76)
मेरु/उपमा—कुवलयापीड़ के लिए उपमान।	प्रियप्रवास, 3।61.
कृष्ण के पग के लिए उपमान।	रश्मिरथी, 30.[4]
कंश के प्रासाद के लिए उपमान।	मधुपुरी, 3।15.
कुरुराज के शिविर के लिए उपमान।	सेनापति कर्ण, 36.
भीष्म के लिए उपमान।	द्रौपदी, पृ० 20.
मैनाक/उपमा—कृष्ण के पग के लिए उपमान।	रश्मिरथी, पृ० 30.
सन्देह बल-औचित्य—गंगा के जल में बाहु उठाये कर्ण के लिए बाहु फैलाये मैनाक का संदिग्ध उपमान।	रश्मिरथी, पृ० 77.
यमुना (कालिन्दी)/काव्यलिंग—हरि का पश्चिम (मथुरा) में जाने का हेतु कालिन्दी का पूर्वोन्मुखी होना।	गोपिका, पृ० 75.
सन्देह—कृष्ण के यमुना में निमग्न रहने का वर्णन।	द्वापर, पृ० 123[5]

1. शोणित-पंकिल गंधार,
   शकुनि लोहित प्रतिहिंसा-पंकज।
   नैवेद्य न समझें उसे,
   कौरवी गज लक्ष्मी का दिग्गज।
2. यों जूझे कर्णार्जुन, जैसे दिग्पाल देव से महाकाल।
3. नन्दन वन त्यों इतर देवगन बाग।
4. मैनक-मेरु पग मेरे हैं।
5. श्याम समाया कालिन्दी में,
   या उसमें कालिन्दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगिनी/उपमा---कर्ण की पत्नी के लिए उपमान। अंगराज, पृ० 219.

वैतरणी/उत्प्रेक्षा--कंस के कष्टों में वैतरणी की संभावना। कृष्णायन, 1।36.

उपमा—दोषयुक्त स्त्रियों के लिए उपमान। मधुपर्क, 5।79.[1]

द्रौपदी की वेणी के लिए उपमान। द्रौपदी, पृ० 34.

रूपक—कलिंग देश की महानदी पर वैतरणी का आरोप। अंगराज, पृ० 12.

प्रतीक/वैतरण-दुष्कर्म/बुरेकर्म

पद-औचित्य कृष्णायन, 1।36.

शेष (पन्नगेन्द्र)/उदाहरण—कर्ण की सेना की ध्वजाओं के शेषनाग का जिह्वामय उठा हुआ फन-समूह उदाहरण। अंगराज, पृ० 219.

उपमा/हाथ में गदा लिए दुर्योधन के लिए फण मण्डलयुक्त शेष का उपमान। अंगराज, 283.

संजीवनी/मालोपमा---ग्रामीण आर्यनारियों के अनेक उपमान। मधुपर्क, 8।30.

स्वर्ग/उपमा—मही के लिए स्वर्ग उपमान। मधुपर्क, 16।51.

सुधा, अमृत, अमी/उत्प्रेक्षा--मथुरा के दुर्ग (प्राकार) के लिए सुधा-धवल महीधर माला की संभावना। कृष्णायन, 2।20.

उपमा—मथुरापुरी के प्रासादों के लिए उपमान। कृष्णायन, 1।9[2]

शय्या के लिए उपमान। कृष्णायन, 4।114.

धर्म के लिए उपमान। कृष्णायन, 5।214.

सरस हंसी के लिए उपमान। प्रियप्रवास, 8।39.

वचनों के लिए उपमान। ब्रज-विहार, पृ० 81.

पानी के लिए उपमान। गोपिका, पृ० 83.

हरि के यश के लिए उपमान। प्रेम-प्रलाप, पद-41 (भा० ग्रं० पृ० 286)

मालोपमा—ग्रामीण आर्य नारियों के लिए अनेक उपमान। मधुपर्क, 8।30.

1, वनि कै दुख, दोसनि की दुरिनी
किमि सोह उठैं जिमि वैतरिनी।

2. सुधा-धवल अट्टालक धामा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपक—स्वर पर सुधा का आरोप।	कृष्णायन, 7।49.
भक्ति पर सुधा का आरोप।	कृष्णायन, 7।183.
स्वर पर सुधा का आरोप।	मधुपर्क, 3।49.[1]
पुण्य पर अमृत का आरोप।	जयभारत, पृ० 216.
सुर-सरिता पर सुधा का आरोप।	अंगराज, पृ० 10.
स्याम-दरस पर सुधा निर्गुण पर भंग का आरोप।	कूबरी, 7।17.
प्रतीक— सुधा-मधुर	कृष्णायन, 1।161, 3।236.
सुधा-सुख	जरासंध, पृ० 52.
अमृत-तत्वचिंतन	जयभारत, पृ० 78.
सुधा-आनन्द	प्रिय-प्रवास, 7।16.
अमी-मधुरता	श्री ब्रज-विहार, पृ० 81.
अमृत-मधुर वचन	कृष्णायन, 3।236.
सुधा-श्रेष्ठ वस्तु	कृष्णायन, 7।183.
सुधा-आनन्द	कृष्णायन, 5।249.
सुरतरु/दृष्टान्त— अच्छी वस्तु को त्यागकर निकृष्ट	कृष्णायन, 3।93.
वस्तु की प्राप्ति का प्रतिपादन।	कृष्णायन, 3।93.
प्रतीक/श्रेष्ठ वस्तु	कृष्णायन, 3।59.
सुरसरि/उत्प्रेक्षा—मित्रवृन्दा में सुरसरि की संभावना।	कृष्णायन, 2।134.
महीतल पर गिरने वाले व्यक्तियों के लिए सुरसरि धारा गिरने की संभावना।	कृष्णायन, 1।166[3]
पद-औचित्य, अलंकार-औचित्य।	कृष्णायन, 1/36.
प्रतीक/सुरसरि-श्रेष्ठवस्तु	कृष्णायन (बिसाहूराम) पृ० 168.
जह्नुजा, जह्नुसुता/उपमा —प्रदान के लिए जाह्नवी प्रदान उपमान।	गोपिका, पृ० 176.[1]
मालोपमा— ग्रामीण आर्य नारियों के अनेक उपमान।	मधुपर्क, 8।30.
रूपक—सेवा जनित सुख की प्राप्ति पर	प्रियप्रवास, 19।43[2]

---

1. स्वर सुधा वरसावति बांसुरी।
2. स्याम दरस की सुधा लुटी जब पी लेती निर्गुन की भंग।
3. गिरि महितल जनु सुरसरि-धारा,
   होति मलिन लहि-मही-विकारा।
4. चाहता था, क्यों न जाह्नहा का सा-प्रदान, कुछ गेरा हुआ, जी उस उदार अनाकांक्षी को सुदूर तक करता मधुर है।
5. प्राणी-सेवा-जनित सुख की प्राप्ति तोजह्नुजा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जह्नुजा का आरोप।

विष्णुपदी-ब्रह्मपदी/उदात्त— गंगा की श्रेष्ठता का वर्णन। — अंगराज, पृ० 156.

सोम/मालोपमा—ग्रामीण आर्य नारियों के अनेक उपमान। — मधुपर्क, 8।30.

हलाहल/प्रतीक—दुख। — जरासंध, पृ० 52.

प्रतीक—(गरल) कष्टदायक। — कृष्णायन, 5।249.

विविध

(1) **इन्द्र धनुख**

सुरपति-धनु/उत्प्रेक्षा—कदम पर वैठे हुए श्रीकृष्ण के पट पल्लव और भूषणों से छिपने पर सुरपति धनु होने की संभावना। — कृष्णायन, 1।112.

उदाहरण—(सुरधनु का सूर्य को घेर लेना) कर्ण को अर्जुन के वाणों द्वारा घेर लेने के लिए उदाहरण। — द्रौपदी, पृ० 15.

उपमा—गोपियों के भाल तट पर भोहों के लिए सुरपति-धनुप उपमान। — महारास, पृ० 37.

शक्र-चाप/उपमा—कृष्ण के रथ की ध्वजा के लिए शक्रचाप उपमान। — कृष्णायन, 3।34.

काली की कृपाण

उत्प्रेक्षा—कर्ण के उरंगायुध में लिए काली-कृपाण की संभावना। — अंगराज, पृ० 252.

कृतान्त-दण्ड/उपमा—धृष्टद्युम्न के वाणों के लिए उपमान। — सुवर्णा, पृ० 110.

चिन्तामणि/वचन-वक्रता—प्रेममूलक। — उद्धव-शतक पद-48.

द्वादश-दिनकर/आदित्य

उत्प्रेक्षा—श्रीकृष्ण के क्रोधित होने पर द्वादश-दिनकर उदय होने की संभावना। — कृष्णायन, 2।70.

गरुड़ के आकाश में चमकने के लिए द्वादश-आदित्यों के चमकने की संभावना। — कृष्णायन, 3।172.

मदन-मनुष

पंचबाण/काव्यलिंग— पंचवान बनाने के उमड़ने का कारण घनश्याम का जाना। — उद्धव-शतक, पद-99.

मदन-धनुष/व्यतिरेक—राधा के काजल से मदन-धनुष को हीन बताना। — मधुपर्क, 1।40.

मनोभव बाण/उत्प्रेक्षा—रैवतक पहाड़ के कुरुवक — कृष्णायन, 3।222.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए मनोभव वाण की संभावना ।

मनसिज-चाप/उपमा—द्रौपदी के शरीर के लिए उपमान । — अंगराज, पृ० 64.

यम-चाप/उत्प्रेक्षा— कृष्ण की रोषयुक्त भृकुटियों में यम-चाप की संभावना । — कृष्णायन, 2।64.

यम-दंस/उत्प्रेक्षा — कृष्ण को देखकर कंस के मंत्रियों के किंकर्तव्यविमूढ़ होने में उनका जमदंस का ग्रास होने की संभावना । — मधुपर्क 10।81.

वज्र/उपमा — भीम की गदा के लिए उपमान । — सेनापति कर्ण, पृ० 91.

प्रतीक—भयानक । — गोपिका, पृ० 28.

सप्त-समीर/उत्प्रेक्षा—श्रीकृष्ण क्रोधित होकर उद्धत गति । — कृष्णायन, 2।70,

सूर्य का रथ (रवि-रथ)/व्यतिरेक अतिशयोक्ति—श्रीकृष्ण के रथ का बढ़ा चढ़ा कर वर्णन । — अलौकिक लीला, प्रथम सर्ग. (प्रेमघन सर्वस्व, पृ० 78.

स्वर्ग-नरक/प्रतीक—स्वर्ग-आनन्द/सुख नरक-यंत्रणा दुख । — मधुपर्क, 4।36.

प्रलय में सूर्य का चमकना

उदाहरण

करता हुआ कर-निकर दुर्द्धर सृष्टि के संहार को, कल्पान्त में संतप्त करना सूर्य ज्यों संसार को । सब ओर त्यों ही छोड़कर निज प्रखरतर शर-जाल को, करने लगा वह वीर व्याकुल शत्रु-शैन्य विशाल को ।[1] — अभिमन्यु के युद्ध के लिए उदाहरण ।

यमे-द्वितीया/प्रतीक —भ्रातृत्व । — देवकी, पृ० 10.

इसी प्रकार देवताओं द्वारा फूल बरसाना, शेष नाग द्वारा समृद्धि का बखान करना आदि प्रकार के अनेक पौराणिक विश्वास, हिन्दी-काव्य में स्थान-स्थान पर प्रयुक्त हुए हैं जो दिव्य पात्रों की उदात्तता की अभिव्यक्ति मात्र ही करते हैं ।

1. जयद्रथ-वध पृ० 10.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक-ग्रन्थ-सूची

1. अंगराज-आनन्दकुमार, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1950 ई० ।
2. अंधा युग-धर्मवीर भारती, किताब महल, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, 1968 ई० ।
3. उद्धव शतक-जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' इण्डियन प्रैस (पब्लिकेशन्स) प्रयाग, 1954 ई० ।
4. उद्धव शतक-राम शंकर शुक्ल 'रसाल', प्रकाशन केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ, प्रथम-संस्करण, 1970 ई० ।
5. ऊषा चरित्र-शेख मुंशी गाजी बक्स, लक्ष्मी वेंकटश्वर प्रेस, मुम्बई, 1956 वि० ।
6. उषा-हरण-रामदत्त राय शर्मा, सद्ग्रंथ माला कार्यालय, कलकत्ता, प्रथम संस्करण, 1974 वि०
7. कनुप्रिया, धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तृतीय संस्करण, 1966 ई० ।
8. कुरुक्षेत्र-रामधारी सिंह 'दिनकर' उदयाचल, पटना, 2003 वि० ।
9. कूवरी, रामनारायण अग्रवाल, राज्य श्री प्रकाशन, मथुरा, 1965 ई० ।
10. कृष्णायन-बिसाहूराम, सरस्वती विलास प्रेस, नरसिंह पुर, प्रथम संस्करण 1960 वि० ।
11. कृष्णायन-द्वारका प्रसाद मिश्र, हिन्दी विश्व भारतीय कार्यालय, लखनऊ, 2200 वि० ।
12. गोपिका-सियाराम शरण गुप्त, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्रथम, 2015 वि० ।
13. जयद्रथ-वध-मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्रथम ।
14. जयभारत-मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्रथम ।
15. जरासंध-वध-श्री नवल किशोर शर्मा, गुप्ता बुक डिपो, हजारी बाग, 1967 ई० ।
16. देवकी-उमाकान्त मालवीय, ज्ञानलोक, इलाहाबाद, प्रथम, 1970 ई० ।
17. द्रोपदी-नरेन्द्र शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम, 1960 ई० ।
18. द्वापर-मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी । चतुर्थ-2021 वि० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

19. द्वारका-प्रवेश-चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि' भारती भवन, बन्नावां, वछरावां (उ० प्र०) प्रथम सं० 1941 वि०
20. नटनागर-विनोद-रत्नसिंह नटनागर, सं०-कृष्ण बिहारी मिश्र, प्रकाशक-सीतामऊ नरेश, (उ० प्र०) 1991 वि०।
21. प्रिय प्रवास-अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणसी, प्र० 2027 वि०।
22. प्रेमघन सर्वस्य, बद्रीनारायण 'प्रेमघन' सं० श्री प्रभाकेश्वर प्रसाद 'उपाध्याय' एवं दिनेश नारायण 'उपाध्याय' हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग-1996 वि०।
23. पार्थपत्नी महासती द्रौपदी-अवध नारायण शर्मा, कैलास प्रकाशन, रामगढ़, प्रथम, 1961 ई०।
24. पुरुषोत्तम-तुलसीराम शर्मा 'दिनेश' मीरा मन्दिर, वम्वई-प्रथम संस्करण, 1939।
25. फेरि मिलिबो-पं० अनुप शर्मा, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, वम्बई, 1996 वि०।
26. व्रज चन्द्र विनोद-किशोर चन्द्र कपूर, लाठी मुहाल, कानपुर-प्रथम-संस्करण, 2019 वि०।
27. व्रज-विनोद-भवानी दास, मोती लाल बनारसी दास, लाहौर, प्रथम, 1937 ई०।
28. व्रज विहार-पं० रंगीलाल, श्याम काशी प्रेस' मथुरा।
29. भंवर गीत-प्रागन, सं० हरिमोहन मालवीय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रथम, शक-1886।
30. भारतेन्दु-ग्रंथावली (भाग-2) काशी नागरी प्रचारणी सभा, प्रथम 1921 वि०।
31. मधुपर्क-देवीरत्न 'अवस्थी' करील' चौखम्वा विद्याभवन, वाणाणसी प्र० 1968 ई०।
32. मधुपुरी, गयाप्रसाद द्विवेदी 'प्रसाद' भारतीय अरुणोदय, प्रयाग-2008 वि०।
33. महारास-नरेश चन्द्र मिश्र 'भंजन' अमर भारती भवन-मुंगेर' 2013 वि०।
34. मोहन-विनोद-रामसिंह मोहन, इलाहाबाद ला जर्नल प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम, 1935 ई०।
35. रत्नाकर (दोनों भाग) काशी नागरी प्रचारणी सभा, द्वितीय, 2003 वि०।
36. रश्मिरथी-रामधारी सिंह 'दिनकर' उदयाचल, पटना, चतुर्थ, 1957 ई०।
37. राधा-आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम-1971. ई०।
38. रुक्मिणी-परिणय-महाराज रघुनाथ सिंह जू देव, प्रथम सं०-1889 ई०।
39- ललन-सागर-ललन पिया, नवल किशोर प्रेस, द्वि० 1927 ई०।
40. विश्राम-सागर-बाबा रघुनाथ 'रामस्नेही' तेजकुमार प्रेस, लखनऊ, बीसवी बार, 1958. ई०।
41. वीर-सतसई-वियोगी हरि, साहित्य सदन लिमिटेड, प्रयाग, पाँचवा-संस्करण, 2001 वि०।
42. वेणलो गूंजे धरा-माखम लाल चतुर्वेदी, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी-1960 ई०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

43. श्री ब्रज-विहार-नारायण स्वामी, प्रकाशक-लाला-गणेशीलाल, नोंह, गुड़गाँवा, प्रथम, 1940 वि० ।
44. सुवर्णा, नरेन्द्रशर्मा, नेशनल, पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम, 1970 ।
45. सूरसागर (सूरदास) काशी नागरी प्रचारणी सभा, द्वितीय संस्करण-2012 वि० ।
46. सेनापति कर्ण-लक्ष्मी नारायण मिश्र, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम, 1958 .
47. हृदय तरंग-सत्य नारायण ,कवि रत्न' सं० चतुर्वेदी अयोध्या प्रसाद पाठक, नागरी प्रचारणी सभा' आगरा ।

पुराण-आदि

1. अग्नि पुराण-श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
2. अग्नि पुराण-गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता, प्रथम, 2014 वि० ।
3. अध्यात्म-रामायण-सं० मुनिलाल गुप्त, गीता प्रेस, गोरखपुर ।
4. कल्कि पुराण-पं०श्रीराम शर्मा, संस्कृति संस्थान, बरेली, प्र० 1970 वि० ।
5. कालिका पुराण, डा० चम्मनलाल गौतम, संस्कृति संस्थान, बरेली, प्रथम, 1973 ई० ।
6. कूर्म पुराण-गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता, 2010 वि० ।
7. गरुड़ पुराण-रामतेज शास्त्री, पंडित पुस्तकालय, काशी, 1936 ई० ।
8. गर्ग संहिता-रामतेज शास्त्री, पण्डित पुस्तकालय, काशी, 1981 ई० ।
9. जैमिनी अश्वमेध-पुराण प्रकाशन मण्डल, वाई, प्रथम संस्करण ।
10. देवी भागवत-रामतेज शास्त्री, पण्डित पुस्तकालय, काशी, 1956 ई० ।
11. नारद पुराण-श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
12. नृसिंह पुराण-(नृसिंहपुराण अंक कल्याण) गीता प्रेस गोरखपुर, 1971 ई० ।
13. पद्म-पुराण-आनन्द-संस्करण ।
14. पद्म-पुराण-गुरुमण्डल ग्रंथमाला, 5-क्लाइव रो-कलकत्ता, प्रथम संस्करण, 2015 वि० ।
15. पद्म-पुराण-पं० श्रीराम शर्मा, संस्कृति संस्नान, बरेली (उ० प्र०) प्रथम संस्करण , 1969 ई० ।
16. ब्रह्मदेवता (शौनक) रामकुमार राय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, प्रथम, 2032 वि० ।
17. ब्रह्म-पुराण-गुरुमण्डल-ग्रंथमाला, कलकत्ता प्रथम,1954 वि० ।
18. ब्रह्म-पुराण-श्रीराम शर्मा, संस्कृति संस्थान, बरेली, प्रथम ।
19. ब्रह्मवैवर्त-पुराण-गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्त , प्रथम, 2012 वि० ।
20. ब्रह्मवैवर्त-पुराण-श्रीराम शर्मा, संस्कृति संस्थान, बरेली, प्रथम, 1970 ई० ।
21. ब्रह्माण्ड-पुराण-श्री वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई .
22. ब्रह्माण्ड-पुराण-जगदीश शास्त्री, मोती लाल बनारसी दास, प्रथम, 1973 ई० ।
23. भागवत-पुराण-गीता प्रेस, गोरखपुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24. भागवत-पुराण-रामतेज शास्त्री, पण्डित पुस्तकालय, काशी, 1956 ई० ।
25. मत्स्य-पुराण-गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता, प्रथम 2017 वि० ।
26. मार्कण्डेय-पुराण-गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता, प्रथम संस्करण ।
27. महाभारत-गीता प्रेस गोरखपुर ।
28. रघुवंश (कालीदास)-पं० रामचन्द्र शुक्ल, रामनारायण लाल बेनीमाधव, इलाहाबाद, प्रथम, 1970 ई० ।
29. लिंग'पुराण-गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता, प्रथम, 2017 वि० ।
30. वामन-पुराण-श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
31. वायु-पुराण-गुरुभण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता, प्रथम ।
32. वायु-पुराण-श्रीराम शर्मा, संस्कृति-संस्थान, बरेली, प्रथम ।
33. वाराह-पुराण-श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
34. वाराह-पुराण-डा० चम्मनलाल गौतम, संस्कृति संस्थान, बरेली, प्रथम, 1974 ई० ।
35. वाल्मीकि-रामायण, द्वारका प्रसाद शर्मा, रामनारायण लाल, इलाहाबाद, द्वितीय, 1950 ई० ।
36. विष्णु-पुराण-गीता प्रेस, गोरखपुर ।
37. शिव-पुराण-श्री रामतेज श.स्त्री, पण्डित पुस्तकालय, काशी ।
38. स्कन्द-पुराण-श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई ।
39. हरिवंश-पुराण-श्रीराम शर्मा, संस्कृति-संस्थान, बरेली ।
40. हरिवंश-पुराण-गीता प्रेस, गोरखपुर ।

074842

VERIFY 2020 G.R.K.V. Library

EAR UKVL 30-12-85

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar